

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको
अध्ययन - रमेश कुमार डाँगी
२०७२

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह द्वितीय
वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि
प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

रमेश कुमार डाँगी
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
कीर्तिपुर, काठमाडौं

२०७२

शोध निर्देशकको सिफारिस

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाली केन्द्रीय विभाग अन्तर्गत नेपाली एम.ए. दोस्रो वर्षका छात्र रमेश कुमार डाँगीले सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार गर्नु भएको हो । यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७२/०२/२६

(प्रा.डा. जीवेन्द्रदेव गिरी)

शोध निर्देशक

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रि.वि. कीर्तिपुर

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको समूह २०६९।०७० का छात्र श्री रमेश कुमार डाँगीले स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पार्नु भएको **सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कन गरी स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन समिति

हस्ताक्षर

१. प्रा.डा. देवीप्रसाद गौतम
(विभागीय प्रमुख)

२. प्रा.डा. जीवेन्द्र देव गिरी
(शोध निर्देशक)

३. प्रा. केशव सुवेदी
(बाह्य परीक्षक)

मिति: २०७२/०२/२८

कृतज्ञता-ज्ञापन

“सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन” शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र मैले श्रद्धेय गुरु प्रा.डा. जीवेन्द्रदेव गिरीको कुशल निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । आफ्नो विविध कार्यव्यस्तता हुँदा हुँदै पनि यस कार्यका लागि प्रेरणा, सरसल्लाह, मार्ग निर्देशन एवम् हौसला प्रदान गर्नु हुने श्रद्धेय गुरुज्यूप्रति प्रथमतः म हार्दिक आभार तथा कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

त्यसै गरी मेरो शोध प्रस्ताव स्वीकृत गरी शोधकार्यका लागि अनुमति प्रदान गर्नु हुने एवम् विभिन्न समयमा आवश्यक सहयोग तथा अमूल्य सल्लाह दिनु हुने नेपाली केन्द्रीय विभागका प्रमुख प्रा.डा. देवी प्रसाद गौतमज्यू लगायतका अन्य गुरुज्यूप्रति आभार प्रकट गर्दछु ।

शोधकार्यका लागि प्राज्ञिक सहयोग गर्नु हुने गुरुहरू डा. कृष्णराज डी.सी., डा. गोविन्द आचार्य, म अध्यापनरत श्री सरस्वती मा.वि. सल्ले रुकुमका प्र.अ. खम्बु सिंह थापा लगायत सम्पूर्ण शिक्षक शिक्षिकाहरूको सहयोगलाई सम्भन्न चाहन्छु ।

लोकगीत सङ्कलन तथा अन्य सामग्री सङ्कलन गर्ने क्रममा प्रत्यक्ष स्थलगत भ्रमणमा सहभागी भई ध्वन्याङ्कन तथा दृश्याङ्कन कार्यमा समेत सहयोग गर्नु हुने साथीहरू ध्रुवराज धिताल, तुल्सीराम डाँगी, चन्द्र बहादुर परियार र दीपेन्द्र भट्टप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

प्रस्तुत शोधकार्य गर्नका लागि मलाई पूर्वी सल्यानका दस ओटै गा.वि.स.का विभिन्न लोकगीतहरू उपलब्ध गराउनु हुने सहयोगीहरूप्रति आभार प्रकट गर्दछु । मलाई प्रस्तुत शोधकार्य सम्पन्न गर्न विभिन्न रूपमा सहयोग पुऱ्याउने मेरा पूजनीय मातापिता क्रमशः बिमला डाँगी र टेक बहादुर डाँगीका साथै श्रीमती राधा बी.सी. (डाँगी) र छोराहरू रेड्सन डाँगी, दीपसन डाँगी, भाइ गणेश डाँगी, बहिनी चित्रकला डाँगी लगायत सम्पूर्ण परिवारका सदस्यहरू प्रति पनि हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु ।

यो शोधकार्य सम्पन्न गर्ने क्रममा आवश्यक सहयोग र सल्लाह दिनु हुने कलाकार मित्रहरू खर्कबहादुर बुढा, कृष्ण रेउले, मामा लालसिंह ओली र गोपाल

ओलीप्रति म उति नै कृतज्ञ छु । यसै क्रममा नरबहादुर नेपाली, हिम बहादुर चन्द, जानकी चन्द, पुरन भट्ट लगायत प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग गर्नु हुने सबै मित्रहरूप्रति आभारी छु । शोधकार्यका लागि सन्दर्भ सामग्री उपलब्ध गराइ दिने त्रि.वि.वि. केन्द्रीय पुस्तकालयका कर्मचारीलाई हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु । शोधपत्र तयार गर्ने क्रममा सावधानीपूर्वक कम्प्युटर टाइपिङ तथा सेटिङ गरी सहयोग पुऱ्याउने दुर्क कम्प्युटर सिस्टम, कीर्तिपुर नयाँ बजारका दुर्कमान महर्जनलाई हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु ।

अन्त्यमा यस शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष पेस गर्दछु ।

.....
रमेश कुमार डाँगी
एम.ए. द्वितीय वर्ष

त्रि.वि. दर्ता नं. : ६-१-४०-९७१-२००४

परीक्षा रोल नं. : २८०३४९

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर

मिति : २०७२/०२/२६

विषय सूची

| | पृष्ठ सङ्ख्या |
|---|---------------|
| शोध निर्देशकको सिफारिस पत्र | क |
| स्वीकृति पत्र | ख |
| कृतज्ञता ज्ञापन | ग-घ |
| विषय सूची | ङ-ञ |
| आरेख सूची | ट |
| पहिलो परिच्छेद : शोध परिचय | १-७ |
| १.१ विषय परिचय | १ |
| १.२ समस्या कथन | २ |
| १.३ शोधकार्यका उद्देश्यहरू | ३ |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा | ३ |
| १.५ शोधकार्यको औचित्य | ५ |
| १.६ शोधकार्यको सीमाङ्कन | ६ |
| १.७ शोधविधि | ६ |
| १.८ शोधपत्रको रूपरेखा | ७ |
| दोस्रो परिच्छेद : पूर्वी सल्यानको परिचय | ८-१८ |
| २.१ भौगोलिक परिचय | ८ |
| २.२ ऐतिहासिक परिचय | १० |
| २.३ सांस्कृतिक परिचय | ११ |
| २.४ भाषिकागत परिचय | १४ |
| २.५ शैक्षिक परिचय | १७ |
| तेस्रो परिच्छेद : लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय | १९-२९ |
| ३.१ लोकसाहित्यको परिचय | १९ |
| ३.२ लोकगीतको परिचय | २१ |
| ३.३ लोकगीतको संरचना | २४ |
| ३.४ लोकगीतको वर्गीकरण | २५ |

| | | |
|--|--------------------------|--------------|
| ३.५ | लोकगीतको विशेषता | २८ |
| ३.६ | निष्कर्ष | २९ |
| चौथो परिच्छेद : सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको सङ्कलन | | २९-९१ |
| ४.१ | धार्मिक गीत | २९ |
| ४.१.१ | प्रार्थना गीत | २९ |
| ४.१.१.१ | आरती | २९ |
| ४.१.१.२ | सन्ध्या | ३१ |
| ४.१.२ | भजन | ३२ |
| ४.१.१.१ | गोपी बाँसको मोरली | ३२ |
| ४.१.२.२ | याउनु भएन कृष्ण | ३३ |
| ४.१.२.३ | कति सुहायो | ३३ |
| ४.२ | बालगीत | ३४ |
| ४.२.१ | हो हो बाबु हो हो | ३४ |
| ४.२.२ | घुघुतीबासुती | ३४ |
| ४.२.३ | कुखुरी काँ | ३५ |
| ४.२.४ | चुँगुरी मुसी | ३५ |
| ४.२.५ | चिँ मुसी चिँ | ३५ |
| ४.२.६ | मामाघरको (घुघुती-बासुती) | ३६ |
| ४.३ | कर्मगीत | ३६ |
| ४.३.१ | रोपाइँको भारी गीत | ३७ |
| ४.४ | पर्व गीत | ३७ |
| ४.४.१ | तिज गीत | ३८ |
| ४.४.१.१ | दार्माकोटे तिज गीत | ३८ |
| ४.४.१.२ | ढाकाडमे तिज गीत | ३८ |
| ४.४.१.३ | पिपलनेटे तिज गीत | ३९ |
| ४.४.२ | देउसीरे | ४० |
| ४.४.३ | भैली | ४३ |
| ४.५ | बाह्रमासे गीत | ५२ |

| | |
|--|----|
| ४.५.१ बारमासा गीत | ५२ |
| ४.५.२ घाउटा गीत | ५३ |
| ४.५.३ ढाकाडम २ को ठारी भाका | ५४ |
| ४.५.४ ढाकाडम ४ को ठारी भाका | ५४ |
| ४.५.५ लेख पोखराको ठारी भाका | ५५ |
| ४.५.६ बनगारी कुरकुटी गीत | ५६ |
| ४.५.७ दार्माकोटको ख्याली गीत | ५७ |
| ४.५.८ कोटमौलाको ख्याली गीत | ५७ |
| ४.५.९ ख्याली (भुमरा) | ५८ |
| ४.५.१० ख्याली (चुड्का) | ५९ |
| ४.५.११ टप्पा (शिवरथ) | ५९ |
| ४.५.१२ टप्पा (कोटमौलाको सुन्तला) | ६० |
| ४.५.१३ टप्पा (बाजेको पालामा) | ६१ |
| ४.५.१४ टप्पा (बाफुखोला) | ६२ |
| ४.५.१५ भूयाउरे गीत (तलमाथि) | ६३ |
| ४.५.१६ भूयाउरे गीत (माया जाने) | ६३ |
| ४.५.१७ भूयाउरे गीत (सँगै बसेर शारदाको किनार) | ६४ |
| ४.५.१८ चारगाउँले भाका | ६५ |
| ४.५.१९ मायै गीत | ६५ |
| ४.५.२० मैतालु गीत | ६६ |
| ४.५.२१ साँडलैजी भाका | ६७ |
| ४.५.२२ स्यानीमाया गीत | ६७ |
| ४.५.२३ लामो भाका | ६८ |
| ४.५.२४ सिँडारु गीत | ६९ |
| ४.५.२५ लामसुरे मालै | ७१ |
| ४.५.२६ सोरठी (समेरुने, लामी चरण, भुमरा, दान, आसिक) | ७१ |
| ४.५.२७ सोरठी (कृष्ण चरित्र) | ७४ |

| | |
|--|------------|
| ४.६ संस्कार गीत | ७५ |
| ४.६.१ तन्तर-मन्तर | ७५ |
| ४.६.१.१ बिरा जप्याँ मन्तर | ७५ |
| ४.६.१.२ रायो सर्सुँ जप्या मन्तर | ७६ |
| ४.६.१.३ पेट ढाच्याउ मन्तर | ७९ |
| ४.६.१.४ जल्याउ निको पान्या मन्तर | ८० |
| ४.६.१.५ वारानी वाट्याउ मन्त्र | ८१ |
| ४.६.१.६ मान्म रचाएको प्रसङ्गमा खेती | ८१ |
| ४.६.१.७ बरा जप्याँउ खेती | ८४ |
| ४.६.२ गीत | ८५ |
| ४.६.२.१ रातो भाल्या | ८५ |
| ४.६.२.२ आधा सगर | ८५ |
| ४.६.२.३ रत्यौली (दुलैनीका आँगनीमा) | ८६ |
| ४.६.२.४ रत्यौली (दुलाहाका गोठमाथि) | ८७ |
| ४.६.२.५ रत्यौली (माट्या भुट्यो चट्चट्) | ८७ |
| ४.६.३ बालैचन गीत | ८८ |
| पाँचौँ परिच्छेद : सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको वर्गीकरण र विश्लेषण १२-१४९ | |
| ५.१ विभिन्न आधारमा पूर्वी सल्यानका लोकगीतको वर्गीकरण | ९२ |
| ५.२ सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको विश्लेषण | ९६ |
| ५.२.१ धार्मिक गीतको विश्लेषण | ९६ |
| ५.२.१.१ विषयवस्तुका आधारमा | ९६ |
| ५.२.१.२ लय वा भाकाको आधारमा | ९८ |
| ५.२.१.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | ९८ |
| ५.२.१.४ भाषाको आधारमा | ९९ |
| ५.२.१.५ स्थानीयताका आधारमा | १०० |
| ५.२.१.६ लोकतत्त्वका आधारमा | १०० |
| ५.२.२ पर्व गीतको विश्लेषण | १०१ |
| ५.२.२.१ विषयवस्तुका आधारमा | १०१ |

| | |
|---------------------------------------|------------|
| ५.२.२.२ लय वा भाकाको आधारमा | १०९ |
| ५.२.२.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | १०९ |
| ५.२.२.४ भाषाको आधारमा | ११० |
| ५.२.२.५ स्थानीयताका आधारमा | १११ |
| ५.२.२.६ लोकतत्त्वका आधारमा | ११२ |
| ५.२.३ कर्म गीतको विश्लेषण | ११३ |
| ५.२.३.१ विषयवस्तुका आधारमा | ११४ |
| ५.२.३.२ लय वा भाकाको आधारमा | ११४ |
| ५.२.३.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | ११५ |
| ५.२.३.४ भाषाको आधारमा | ११६ |
| ५.२.३.५ स्थानीयताका आधारमा | ११६ |
| ५.२.३.६ लोकतत्त्वका आधारमा | ११६ |
| ५.२.४ बाल गीतको विश्लेषण | ११७ |
| ५.२.४.१ विषयवस्तुका आधारमा | ११८ |
| ५.२.४.२ लय वा भाकाको आधारमा | ११८ |
| ५.२.४.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | ११९ |
| ५.२.४.४ भाषाको आधारमा | ११९ |
| ५.२.४.५ स्थानीयताका आधारमा | १२० |
| ५.२.४.६ लोकतत्त्वका आधारमा | १२१ |
| ५.२.५ बाह्रमासे गीतको विश्लेषण | १२१ |
| ५.२.५.१ विषयवस्तुका आधारमा | १२२ |
| ५.२.५.२ लय वा भाकाको आधारमा | १३७ |
| ५.२.५.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | १३७ |
| ५.२.५.४ भाषाको आधारमा | १३८ |
| ५.२.५.५ स्थानीयताका आधारमा | १३९ |
| ५.२.५.६ लोकतत्त्वका आधारमा | १४० |
| ५.२.६ संस्कार गीतको विश्लेषण | १४१ |
| ५.२.६.१ विषयवस्तुका आधारमा | १४१ |

| | |
|--|----------------|
| ५.२.६.२ लय वा भाकाको आधारमा | १४५ |
| ५.२.६.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा | १४६ |
| ५.२.६.४ भाषाको आधारमा | १४७ |
| ५.२.६.५ स्थानीयताका आधारमा | १४८ |
| ५.२.६.६ लोकतत्त्वका आधारमा | १४८ |
| छैटौँ-परिच्छेद : उपसंहार | १५०-१५३ |
| ६.१ सारांश | १५० |
| ६.२ प्राप्ति | १५२ |
| ६.३ सम्भाव्य अध्ययन शीर्षक | १५३ |
| परिशिष्ट | १५४-१५९ |
| परिशिष्ट १ : सामग्री सङ्कलनमा सहयोग गर्नेहरूको विवरण | १५४ |
| परिशिष्ट २ : स्थानीय शब्दहरूको अर्थ | १५७ |
| परिशिष्ट ३ : अध्ययन क्षेत्रको नक्सा | १५९ |
| सन्दर्भ कृति सूची | १६०-१६२ |

आरेख सूची

| | |
|---|----|
| सङ्ख्या १ : लोकगीतका विशेषताहरू | २९ |
| सङ्ख्या २ : पूर्वी सल्यानका लोकगीतको वर्गीकरण | ९५ |

पहिलो परिच्छेद

शोध परिचय

१.१ विषय परिचय

साधारण अर्थमा लोकगीत भन्नाले लोकले गाउने वा लोकको गीत बुझिन्छ । लोकका कण्ठबाट स्वच्छन्द रूपमा लयात्मक ढङ्गले निस्केका अभिव्यक्ति नै लोकगीत हुन् । 'लोक' शब्दले कुनै सहरिया वा ग्रामीण समाज नछुट्याईकन सम्पूर्ण समाज वा दुनियाँ जनाउँछ । त्यसैले लोकगीत लोक वा जन साधारणको समष्टिगत अभिव्यक्ति हो । लोकगीतले लोक जीवनकै गेय अभिव्यक्तिको प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । लोकगीतको प्रमुख स्रोत गाउँ हुँदाहुँदै पनि यसले नगर र महानगरलाई समेत अँगालेको छ ।

लोकगीत निरन्तर जीवन यात्राको क्रममा हुकँदै लोक जीवनमा आएको गीत हो । यसले लोक समाजका आँसु-हाँसो, रोदन क्रन्दन, सुःख दुःख, उकाली ओराली, संयोग वियोग आदिसँग हातेमालो गर्दै अगाडि बढेको छ । त्यसैले कुनै पनि समाजको विगतको इतिहास, त्यहाँको सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक अवस्था चेतन स्तर, समस्याहरू, व्यक्ति पक्षका प्रेम प्रसङ्ग र मनोअवस्थाका बारेमा उत्पन्न जिज्ञासा मेट्न सम्बन्धित समाजका प्रचलित लोकगीतको अध्ययन गरिनु जरुरी छ ।

लोकगीत लोक साहित्यका विविध विधामध्ये एक प्रमुख विधा हो । यो मुक्त वातावरणमा मौलाएको हुन्छ । लोक जीवनमा प्रचलित लोकगीतको प्रभावले व्यक्ति आफ्नो दुःख कष्टलाई बिसर्छ ।

सल्यानका विभिन्न गा.वि.स.मा पनि ठाउँ अनुसार फरक-फरक लोक जीवनका लोक भाकाहरू प्रचलित छन् । ती भाकाहरू त्यहाँका जन जीवनका यथार्थ आवाज हुन् । विशेष गरी प्रस्तुत अध्ययनमा सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा पर्ने दार्माकोट, ढाकाडम,

बाफुखोला, शिवरथ, कोटबारा, थारमारे, कोटमौला, पिपलनेटा, दमाचौर र लेखपोखरा गा.वि.स.मा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन गरिएको छ ।

आजको नेपाली समाजमा आयातित र आधुनिक गीतका प्रभावले स्थानीय मूल्य र मान्यता तथा परम्परालाई प्रतिविम्बित गर्ने लोकगीत ओभेलमा परेका छन् । लोकगीतका क्षेत्रमा देखा परेको यो जल्दोबल्दो समस्या सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा पनि प्रबल रूपमा देखा परेको छ । विशेष गरी यहाँका विविध पर्वगीत, कर्मगीत, बालगीत, संस्कारगीत र बाह्रमासे गीत (सिडारु, टप्पा, बनगारी ख्याली, भुमरा, ठारी भाका) आदि लोपोन्मुख अवस्थामा छन् । यी गीतहरूमा यहाँको विविध कुराहरूको सजीव चित्रण पाउन सकिन्छ । यस्तो परिस्थितिमा यहाँका मौलिक लोकगीतहरूको अध्ययन अनुसन्धान र संवर्धन गरिनु अति आवश्यक छ । त्यसैले यस शोधपत्रमा “सल्यानका पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको अध्ययन” शीर्षकमा केन्द्रित रहेर यहाँका प्रचलित लोकगीतहरूको व्यवस्थित अध्ययन गरिएको छ ।

अध्ययनका क्रममा उक्त सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतको सङ्कलन र विभिन्न आधारमा तिनको वर्गीकरण एवम् विश्लेषण गर्ने काम प्रस्तुत अध्ययनमा गरिएको छ ।

१.२ समस्या कथन

नेपाली लोक साहित्यमा सल्यान जिल्लाका लोकगीतहरूको महत्त्वपूर्ण स्थान छ । लोकगीतको क्षेत्रमा धनी भएर पनि यहाँका गीतहरूको समग्र जानकारी ज्यादै न्यून रहेको छ, नगण्य रहेको छ । सल्यानका अत्यन्त दुर्गम ग्रामीण बस्तीका रूपमा पूर्वी क्षेत्रका मौलिक लोक सभ्यता र सांस्कृतिक आवाजका अध्ययनमा चासो चिन्तन र इच्छा चाहनाको अभाव हालसम्म खड्कि रहेको छ । त्यसैले यस शोधपत्रमा यहाँका लोकगीतको अध्ययन गर्दा निम्न लिखित कुराहरूलाई समस्याका रूपमा लिइएको छ :

(क) सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा के कस्ता लोकगीतहरू प्रचलित छन् ?

(ख) त्यहाँका लोकगीतहरूको वर्गीकरण के कसरी गर्न सकिन्छ ?

(ग) त्यहाँका लोकगीतहरूको विश्लेषण के कसरी गर्न सकिन्छ ?

१.३ शोधकार्यका उद्देश्यहरू

प्रस्तुत शोधपत्रमा समस्या कथनसँग सम्बन्धित निम्न लिखित उद्देश्यहरू राखिएका छन् :-

- (क) सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतको सङ्कलन गर्ने
- (ख) सङ्कलित लोकगीतहरूलाई विभिन्न आधारहरू पहिल्याई वर्गीकरण गर्ने ।
- (ग) सङ्कलित लोकगीतहरूलाई विभिन्न आधारहरूसहित विश्लेषण गर्ने ।

१.४ पूर्वकार्यको समीक्षा

सल्यान जिल्लाका लोकगीतबारे कमै अध्ययन भएको पाइन्छ तापनि सल्यान र यसका निकटवर्ती क्षेत्रका लोकगीतबारे भएका केही अध्ययन पूर्वी सल्यानमा प्रचलित लोकगीतको अध्ययनका निम्ति सान्दर्भिक छन् । तिनै अध्ययन बारे कालक्रमिक रूपमा यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ :

- (क) जीवन्द्रदेव गिरीले 'लोक साहित्यको अवलोकन' (२०५०) मा भेरी र राप्ती क्षेत्रमा प्रचलित केही लोकगीतको अध्ययन गर्ने क्रममा सल्यानमा प्रचलित केही लोकगीतका पनि चर्चा गरेका छन् । तर त्यो चर्चा अत्यन्त सीमित छ । त्यसै गरी उनकै "नेपाली लोक साहित्यमा जन जीवन" (२०६८) मा पनि केही सल्यानी गीतको सामान्य चर्चा गरिएको छ ।
- (ख) पूर्ण बहादुर भण्डारीले "नेपाली साहित्यमा सल्यान जिल्लाको योगदान" (२०५७) शीर्षकमा शोध गरेका छन् जसमा केही सल्यानी गीतको चर्चा गरिएको छ ।

- (ग) गोविन्द आचार्यले “राप्ती अञ्चलका लोकगीतको विश्लेषण” (२०६१) शीर्षकमा विद्यावारिधि शोध सम्पन्न गरेका छन् जसमा सल्यानका सिडारु टप्पा, साइँलैजी र बाह्रमासे गीतको विश्लेषण गरिएको छ ।
- (घ) गोविन्द आचार्यले “लोकगीतको विश्लेषण” (२०६२) र “राप्ती लोक साहित्य” (२०६३) पुस्तक प्रकाशन गरेका छन् जसमा उनले केही सल्यानी लोकगीतको विश्लेषण गरेका छन् ।
- (ङ) डम्बरबहादुर पुनले “दक्षिण पूर्वी सल्यानका नेपाली लोकगीतको अध्ययन” (२०५९) शीर्षकमा शोध गरेका छन् जसमा उनको अध्ययन ६ ओटा गा.वि.स.मा मात्र सीमित भएको छ । यसले समग्र पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतलाई समेट्न सकेको छैन ।
- (च) अम्बिका प्रसाद डाँगीले छिमेकी जिल्ला रुकुमसँग सम्बन्धित “रुकुमेली लोकगीतको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण” (२०६२) शीर्षकमा शोध गरेका छन् जसमा उनले कतिपय सल्यानका पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको चर्चा गरेका छन् तर त्यहाँका समग्र गीतहरूको अध्ययन भने उनले गरेका छैनन् ।
- (छ) छविकिरण ओलीले “राप्ती अञ्चलका लोकगीत” (२०६१) पुस्तकमा कतिपय सल्यानी लोकगीतबारे चर्चा गरेका छन् तर त्यो पूर्वी सल्यानको अध्ययन क्षेत्रसँग सामान्य रूपमा मात्र सम्बन्धित रहेको छ ।
- (ज) खर्क बहादुर बुढाले “मध्यपश्चिमका लोकभाका” (२०६३) मा सल्यानका सिडारु, आठ हजारी, टप्पा, सोरठी, बाह्रमासे, भाँप्रे आदि गीतहरूको सङ्कलन, विश्लेषण र रेकर्डिङ गरेका छन् तापनि उनको अध्ययन पूर्वी क्षेत्रमा केन्द्रित नभएकाले यहाँका लोकगीतबारे सामान्य चर्चा मात्र भएको छ ।

- (भ) मनोहर लामिछानेले “लोक साहित्य र संस्कृतिका केही पाटाहरू” (२०६५) मा “लोकगीततर्फ सल्यान जिल्ला” शीर्षकमा कतिपय पूर्वी सल्यानका लोकगीतको सङ्कलन र वर्णन गरेका छन् तर यो अध्ययन पनि अत्यन्त सीमित छ ।
- (ज) दुर्गा के.सी.ले “सल्यान जिल्लाका उत्तर पश्चिम क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण” (२०६७) शीर्षकमा शोध गरेका छन् तर त्यो अध्ययन सल्यानको अर्को क्षेत्रसँग सम्बन्धित भएकाले यस शोधका लोकगीतबारे त्यसमा अध्ययन हुन सकेको छैन ।
- (ट) सल्यान जिल्लाका विभिन्न लोकगायक/लोकगायिकाहरू खर्क बहादुर बुढा, कृष्ण रेउले, अशोक बस्नेत, रमेश डाँगी, राधा डाँगी, जय देवकोटा लगायतका कलाकारहरूले लोकभाकाहरू रेकर्ड गराउने क्रममा सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा परेका केही लोकगीतहरू पनि रेकर्ड भएका छन् । तिनले यहाँ प्रचलित लोकगीतका भाकालाई फिँजाउने काम गरे पनि यहाँका समग्र लोकगीतहरूको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषणमा योगदान गरेका छैनन् ।

यसरी सल्यानी लोकगीतको अध्ययन आंशिक रूपमा भएको पाइन्छ तापनि पूर्वी क्षेत्रलाई आधार बनाई सिङ्गो अध्ययन हालसम्म भएको देखिँदैन । त्यसैले प्रस्तुत अध्ययन आवश्यक हुन गएको हो ।

१.५ शोधकार्यको औचित्य

प्रस्तुत शोधकार्यको प्रमुख औचित्य नेपाली लोकगीतहरूको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषणमा पूर्णता ल्याउन आंशिक योगदान गर्नु हो । यो काम प्राज्ञिक एवम् अनुसन्धानात्मक दृष्टिले औचित्यपूर्ण छ । यहाँका लोकगीत बारेको यस अध्ययनबाट महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध हुने छ । यसका साथै यस जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूको यस अध्ययनबाट यहाँका रीतिस्थिति, चालचलन, वेशभूषा वास्तविक जन जीवन एवम् सामाजिक गतिविधि आदिका बारेमा जानकारी

राख्न चाहनेका लागि लाभ मिल्ने छ । त्यसै गरी प्राचीन सभ्यताको विनाश र मौलिक कला संस्कृतिको लोप भइ रहेको वर्तमान अवस्थामा लोकगीत संरक्षण, संवर्धन र प्रवर्धनका लागि यसबाट टेवा मिल्ने छ । त्यति मात्र नभई यस अनुसन्धानले नेपालका विभिन्न क्षेत्रका लोकगीतहरूको तुलनात्मक अध्ययन कार्यमा समेत केही सहायता पुग्ने हुनाले यसको प्राज्ञिक औचित्य र महत्त्व छ ।

१.६ शोधकार्यको सीमाङ्कन

सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा पर्ने दार्माकोट ढाकाडम, खोलाबाफु, शिवरथ, कोटबारा, थारमारे कोटमौला पिपलनेटा, दमाचौर र लेखपोखरा गरी जम्मा दश गा.वि.स. क्षेत्रभित्र प्रचलित लोकगीतहरूको मात्र प्रस्तुत शोधकार्यमा अध्ययन गरिएको छ । त्यहाँ प्रचलित लोकगीतको क्षेत्रकार्यबाट सङ्कलन गरी वर्णनात्मक र सन्दर्भपरक विश्लेषणमा यो केन्द्रित छ ।

१.७ शोधविधि

यो शोधकार्य कार्य विधिवत् रूपले सम्पन्न गर्न निम्न विधिहरू अवलम्बन गरिएको छ :

- (क) लोकगीत एक सामाजिक सम्पत्ति भएकाले सम्बन्धित क्षेत्रमा गई प्रत्यक्ष स्थलगत भ्रमण गरी क्षेत्रीय अध्ययनका आधारमा सामग्री सङ्कलन गर्ने काम यहाँ गरिएको छ ।
- (ख) सम्बन्धित क्षेत्रमा रहेका लोकगीतका जानकार व्यक्तिहरूसँग भेटवार्ता गरिएको छ ।
- (ग) विभिन्न उत्सव, मेला, पर्व आदिको अवसरमा सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रका विभिन्न ठाउँमा गाइने गीतहरू टिप्ने र रेकर्ड गर्ने कामहरू गरिएको छ ।
- (घ) सम्बन्धित प्रत्येक गा.वि.स.का मुख्य मुख्य स्थानमा गई जानकार व्यक्तिहरूलाई जम्मा पारेर गीतहरू सुन्ने र ध्वन्याङ्कन एवम् दृश्याङ्कन गर्ने काम भएको छ ।

- (ड) स्थानीय लोक पारखी कलाकार र अनुभवी व्यक्तिहरूसँग प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सम्पर्कबाट विभिन्न प्रश्नावली र अन्तर्वार्ताका आधारमा लोकगीतहरूबारे जानकारी बटुलिएको छ ।
- (च) अध्ययन कार्य वर्णनात्मक विधिमा आधारित छ ।

१.८ शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई निम्नलिखित परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ ।

| | | |
|-----------------|--|---|
| पहिलो परिच्छेद | : शोध परिचय | : |
| दोस्रो परिच्छेद | : पूर्वी सल्यानको परिचय | : |
| तेस्रो परिच्छेद | : लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय | : |
| चौथो परिच्छेद | : सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको सङ्कलन | : |
| पाँचौँ परिच्छेद | : सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको वर्गीकरण | : |
| छैटौँ परिच्छेद | : सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतहरूको विश्लेषण | : |
| सातौँ-परिच्छेद | : उपसंहार | : |

दोस्रो परिच्छेद

पूर्वी सल्यानको परिचय

२.१ भौगोलिक परिचय

सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्र यस जिल्लाको एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हो । नेपालको पहाडी भूभागमा अवस्थित राप्ती अञ्चलको सल्यान जिल्लाको धेरैजसो भूभाग डाँडाकाँडा र जङ्गलले ढाकिएको छ । प्राकृतिक रूपमा मनोरम र सल्लैसल्लाको वनजङ्गलले भरिपूर्ण हुनु सल्यानको मुख्य विशेषता हो । मुख्य नदीका रूपमा शारदा रहेको छ । यसको किनारमा केही खेतीयोग्य जमिन भए पनि अधिकांश भूभाग आकासे खेतीमा निर्भर भएकाले अलि सुक्खा भूमि मात्र यहाँ देखिन्छ । यस जिल्लाको दक्षिणमा दाङ र बाँके, पश्चिममा सुर्खेत, उत्तरमा जाजरकोट र रुकुम पर्दछन् भने पूर्वी क्षेत्रमा रोल्पा पर्ने सल्यान जिल्ला भौगोलिक विविधताले पनि त्यत्तिकै बहु आयामिक छ ।

सल्यान जिल्लाको कुल क्षेत्रफल १९,५१,७८५ हेक्टर १९५१ वर्ग कि.मि. रहेको छ । देशको कुल भूभागको १.३३ प्रतिशत यस जिल्लाले ओगटेको छ । राप्ती अञ्चलका पाँच जिल्लामध्ये सल्यान क्षेत्रफलका हिसाबले तेस्रो जिल्ला हो । सल्यानको कुल भूभागमध्ये जङ्गलले ६५ प्रतिशत, कृषियोग्य जमिनले २३ प्रतिशत र आबादी जमिनले ०.५ प्रतिशत ओगटेको छ । सल्यान जिल्ला २८°३१' देखि २८°५३' उत्तरी अक्षांश र २८°०' देखि ८२°४६' पूर्वी देशान्तरमा पर्दछ ।^१ खैराबाङ, छायाक्षेत्र, शङ्खमुल मोख्ला, दमाचौरको मार्कण्डे गुफा, कुभिण्डे दह, कुमाख लेक, मख्लाम लेक, खामे लेक आदि ठाउँ धार्मिक क्षेत्रका रूपमा परिचित छन् । यहाँ साना ठुला गरी ६२ ओटा मठ मन्दिर छन् । जिल्लाको भौगोलिक वितरण अनुसार ४७ ओटा गा.वि.स. भएकोमा २०७१ सालदेखि एक 'शारदा नगरपालिका' र ४० गा.वि.स. रहेका छन् । दुई ओटा निर्वाचन

^१ श्री ५ को सरकार, **मेचीदेखि महाकाली** (भाग-४) (काठमाडौं : श्री ५ को सरकार सञ्चार मन्त्रालय सूचना विभाग, २०३९), पृ. १८३ ।

क्षेत्र रहेको यस जिल्लामा प्रस्तुत शोधक्षेत्रको अधिकांश क्षेत्र अर्थात् ८ गा.वि.स. निर्वाचन क्षेत्र नं. १ अन्तर्गत र दुई ओटा दमाचौर र लेख पोखरा गा.वि.स. निर्वाचन क्षेत्र नं. २ अन्तर्गत पर्दछन् ।

यस शोध क्षेत्रको पूर्वमा रोल्पा जिल्ला तथा उत्तरमा रुकुम र जाजरकोट जिल्ला पर्दछन् । त्यसै गरी पश्चिममा सल्यान जिल्लाकै वनगाउँ र माभकाँडा गा.वि.स. पर्दछन् भने दक्षिणमा स्यानीखाल र कोर्वाड भिम्पे गा.वि.स. पर्दछन् । यस शोध क्षेत्रलाई दाङ सल्यान हुँदै रुकुम जोड्ने राप्ती लोकमार्गले दुई भागमा विभाजन गरेको छ । उक्त लोकमार्गको उत्तर पश्चिम क्षेत्रमा दार्माकोट, ढाकाडम, शिवरथ र थारमारे गा.वि.स. पर्दछन् भने दक्षिण पूर्वी क्षेत्रमा लेख पोखरा, पिपल नेटा, दमाचौर, कोटमौला, कोटबारा र बाँफुखोला गा.वि.स. पर्दछन् । यसरी राप्ती लोकमार्गले केही यातायातको सुविधा दिए पनि समग्रमा सल्यान जिल्लाको यस क्षेत्रलाई पिछडिएको र दुर्गम ठाउँ मानिन्छ । प्रत्येक गा.वि.स.मा राप्ती लोकमार्गबाट कच्ची सडक जोड्ने प्रयासहरू भने भइ रहेका छन् । यसै शोध क्षेत्रको शिवरथ गाविसमा शारदा नदीको मुहान रहेको छ । राप्ती लोक मार्ग यसै नदीको किनार किनार हुँदै जोडिएको छ ।

विशेष गरी यस क्षेत्रमा धान, गहुँ, जौ, मकै जस्ता अन्न बालीहरू उब्जिन्छन् । यहाँ गाई, भैंसी, गोरु, भेडा, बाखा, चल्ला आदि घरपालुवा जनावर पाल्ने प्रचलन रहेको छ । कृषिलाई नै मूल पेसा बनाएर यहाँका मानिसले आफ्नो दिनचर्या चलाइ रहेका छन् । भट्ट हेर्दा यहाँको भूगोल हरियो वनजङ्गल र बालीनालीले सौन्दर्यपूर्ण देखिन्छ ।

समग्रमा सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्र वातावरण र सांस्कृतिक सभ्यताले विविधतामय छ । यहाँको भूगोल अग्ला डाँडाकाँडा र खोलाखोल्साले भरिएको छ । असङ्ख्य खोला खोल्सासँगै सल्ला, रङ्ग, बाँभ, खरी, भिमल, खर्सु, गुराँस, बाँस, सिमल, कटुस, ठाम्मर, ओखर, पाङ्गर, उत्तिस, मेले, दुधिलो, जाम्नो, कोइरालो, काफल, अँयार, टुनी आदि ठुला बिरुवा पाइन्छन् । त्यसै गरी चुत्रो, ऐसेलु, घङ्गारु,

खरेटो, गरेली, भुईं, बयर जस्ता वुट्यान र भाडी यहाँ पाइन्छन् । यसका साथै यस क्षेत्रमा घुँरो, खर, दुबो आदिले जमिन ढाकिएको हुन्छ । यहाँका विभिन्न प्रकारका गीत सङ्गीत र साहित्य प्रचलित छन् । यस शोधक्षेत्रको प्रायजसो ठाउँमा एक दिनमा पैदल यात्रा गरेर स्थलगत भ्रमण गर्न पनि सकिन्छ । वास्तवमा यो क्षेत्र भौगोलिक रूपमा रमणीय छ । न गर्मी न जाडो ठिक्कको मौसम र हावापानी हुनु यहाँको विशेषता हो ।

२.२ ऐतिहासिक परिचय

विक्रमको पन्ध्रौँ शताब्दीको अन्त्यतिर कर्णाली प्रदेशको खस राज्य टुक्रिँदै जाँदा विभिन्न राज्यहरूमा विभाजित हुन गयो । ती राज्यहरूमध्ये फलावाङ राज्य पनि एक हो । दक्षिणपूर्वी सल्यान क्षेत्र तत्कालीन यसै फालावाङ राज्यभित्र पर्दथ्यो । यसरी पूर्वी क्षेत्रको ऐतिहासिक परिवेशको चर्चा गर्न सकिन्छ । पृथ्वीनारायण शाहले आफ्नी छोरी “विलासा कुमारीलाई सल्यानी युवराज रमणीय शाहसँग वि.सं. १८२३ मा विवाह गरि दिएको”^२ र एक ताम्रपत्र अनुसार पृथ्वीनारायण शाहले आफ्नी सुपुत्रीलाई कोर्वाङ, छिल्ली, थपाला, फालावाङ, दाङ, देउखुरी दाइजो स्वरूप दिएको कुरा उल्लेख भएबाट यो राज्य सल्यान राज्यमा गाभिएको कुरा स्पष्ट हुन्छ ।^३ तत्कालीन फलावाङ राज्यको पुतली दरबार र जीर्ण अवस्थामा रहेको लाल दरबार हालसम्म पनि यहाँ विद्यमान छन् ।

विलास कुमारीले सल्यान गरिब भएको र राम्रोसँग खान नपुग्ने गुनासो बुवा समक्ष व्यक्त गरेपछि त्यसको प्रत्युत्तरमा पृथ्वीनारायण शाहले केही समयपछि दाङ राज्य जितेर सल्यानलाई दिउँला भन्ने वचन दिएका थिए । पृथ्वीनारायण शाहको देहान्तपछि राजेन्द्र लक्ष्मीदेवी र बहादुर शाहले एकीकरण अभियानलाई निरन्तरता दिने काम गरे । यसै क्रमा दाङ राज्यमाथि आक्रमण गरी विजय प्राप्त गरेपछि पृथ्वीनारायण शाहको नीति अनुरूप दाङ राज्य सल्यानलाई दिएर बहादुर शाहले सल्यान राज्यलाई

^२ ऐजन, पृ. १९२ ।

^३ नरहरिनाथ योगी (सं.), इतिहास प्रकाशन भाग-१, (काठमाडौँ : इतिहास प्रकाशन संघ, २०१२), पृ. १५२ ।

एक अधीनस्थ राज्यको रूपमा रहन दिए, तर भीमसेन थापाले पाल्पा विजय गरेपछि पृथ्वीनारायण शाहको नीतिलाई बेवास्ता गरी अङ्ग्रेजसँग साँठगाँठ गरेको आरोपमा सल्यानमाथि आक्रमण गरी विजय प्राप्त गरेर केन्द्रीय राज्यमा मिलाए । केही समयपछि राजेन्द्रविक्रम शाहले सल्यानका राजा तेजविक्रम शाहलाई सल्यान राज्य फिर्ता दिएका थिए । संरक्षित राज्यका रूपमा रहेको सल्यान राज्यले वैवाहिक सम्बन्ध (वीर शमशेरकी छोरीको विवाह सल्यानी राजा शमशेर बहादुर शाहसँग भई सम्बन्ध कायम भएको) का कारण आफ्नो छुट्टै अस्तित्व बनाएको थियो । यसरी सल्यान ऐतिहासिक राज्यका रूपमा पनि परिचित थियो । त्यसै राज्य अन्तर्गत दक्षिण पूर्वी सल्यानको पनि अस्तित्व रहेको थियो ।

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा दार्माकोट, कोटमौला, शिवरथकोट र कोटमौला जस्ता अग्ला डाँडाहरूमा पुराना दरवारहरू र ससाना मन्दिर देवलहरू भएकाले हालसम्म पनि त्यहाँ प्राचीन अवशेषहरू भेट्न सकिन्छ, जसको ऐतिहासिक रूपमा छुट्टै महत्त्व रहेको पाइन्छ । स्याँनी कुमाख, खामे लेक र ठुली कुमाख जस्ता प्रसिद्ध अग्ला धरोहरहरू यहाँ छन् । यहाँको छायाँ क्षेत्र मन्दिर शिवले पार्वतीको केही अङ्ग पतन गराएको शक्तिपिठको रूपमा प्रसिद्ध छ । यसरी ऐतिहासिक रूपमा सल्यानलाई केलाउँदा यो एउटा छुट्टै विशेषता बोकेको लोक संस्कृतिले भरिपूर्ण जिल्लाका रूपमा परिचित छ ।

२.३ सांस्कृतिक परिचय

सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा विशेष गरी जाजरकोट रुकुम र रोल्पा जिल्लाको सांस्कृतिक प्रभाव परेको पाइन्छ तथापि यस क्षेत्रको आफ्नो छुट्टै सांस्कृतिक महत्त्व छ । यस क्षेत्रलाई अनेक थरी गीत, नृत्य, जातजाति, प्रथा आदिले चिन्न सकिन्छ । यहाँको जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार, विवाह संस्कार र अन्य सबै संस्कार तथा प्रचलनहरूमा सांस्कृतिक विविधता छरिएको पाइन्छ । सिङ्गारु, टप्पा, बनगारी, ठारी भाका, सिलोक, गाउँखाने कथा, लहऱ्या, पैँसेरु आदि सांस्कृतिक सम्पदाहरू यहाँ छन् । कालापार जाने,

घाँस, दाउरा, स्याउला सोत्तर जम्मा पार्ने र गाईवस्तु पालेर बारीमा मलजल लगाई अन्न उत्पादन गरेर जीविकोपार्जन गर्ने कार्य यहाँको मुख्य जन जीविकाको आधार हो । एक किसिमले प्राचीन र परम्परागत ग्रामीण रीतिस्थिति यहाँ अभैसम्म रहि रहेको छ । छुट्टै मौलिक प्रकारको लवाइखवाइ वेशभूषा, चालचलन, भाषा र बोली यहाँ प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

घट्ट पिस्न खोलामा जाने, उतै बास बस्ने, छोटट्टया छोटी (केटाकेटी) ले भाका हालेर गीत गाई रात काट्ने चलनमा यहाँका मानिसले कैयौं पुस्ता पार गरि सकेका छन् । चौधपन्ध्र वर्षकै उमेरमा बिहा गरी घर गरी खानु पर्ने चलन अबै यथावत् रहेको यस ठाउँमा पुरानो रितिस्थिति पाउन सकिन्छ । विशेष गरी दसैं, तिहार, तिज, जनैपूर्णमा, ऋषि पञ्चमी, होली, माघी मेला, चैते दसैं मेला, जात्रा, विवाह, पूजा आदि अवसरमा यहाँको संस्कृति झल्किन्छ । यहाँका मुख्य पुराना पहिरन पुरुषहरूको सुरुवाल, भोटी, जाइकोट, स्वेटर आदि भने महिलाको गुन्युचोली, साडी, ब्लाउज, घलेक, कपाले आदि हुन् । हाल आएर ती सबै चलनहरू लोप हुँदै गएको पाइन्छ । हाल आधुनिक पहिरनले विस्तारै प्रचलनमा जरा गाड्न थालेको पाइन्छ तर पनि यहाँको आफ्नै मौलिक संस्कृति पनि यथावत् नै छ ।

सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा औंसी, पुनी, सैंसक्राँती, कृष्ण जन्माष्टमी, तिज, दसैं, तिहार, होली, माघी, चैते दसैं, नयाँ वर्ष जस्ता सांस्कृतिक चाडपर्वमा राम्रो कपडा लगाउने र मिठो-मिठो खाने कुरा खाने गरिन्छ । सबै जना जम्मा भएर यस्ता अवसरमा नाचगान र रमाइलो गर्ने गरिन्छ । औंसी पुनी र सैंसक्रान्तिमा छोरीचेलीहरू आफ्ना माइती घर कोसेली लिएर आउने चलन छ । माइतीले पनि छोरी चेलीलाई आफूले सके जति दान दक्षिणा गरे राम्रो हुने मान्यता छ । कृष्ण जन्माष्टमीमा भगवान् कृष्णको नाममा व्रत बस्ने, दिनभरि, नाचगान, भजन कीर्तन गर्ने र साँझ परेपछि पूजाआजा गरी प्रसाद खाने चलन छ । हरितालिका तिजमा अविवाहित नारीले असल जीवन साथीको अपेक्षा र विवाहितले आफ्नो पतिको

दीर्घायुको लागि एक दिनसम्म पानीसम्म नखाई निराहार व्रत लिने चलन छ यसरी तिजकै अवसरमा राम्रो लुगा गरगहना लगाई कोरीबाटी चिटिक्क परेर तिजका गीत गाएर नाच्ने गरिन्छ ।

यस्ता तिजका भाकामा गाइने गीतहरूले त्यही समकालीन समाज र रीतिस्थितिको प्रतिनिधित्व गरि रहेका हुन्छन् :

बिहानै उठी पानी भर्न जाँदा
लाहुरे फुलैले बाटो छेकेको
माइती मेरा चेली सम्भ्री रुँदा हुन्
गरिवको घर खानु रैछ लेखेको ।

वर्ष दिनको तिजमा माइत जान्छु भनेको
हाम्री सासू पापिनीले सारी लुकाइन्
माइतमा जानु पथ्यो रुँदै रुँदै ।

यस्ता तिजका गीतहरूले विवाहित नारीहरूले आफ्नो कर्मघरका दुःख पिर, वेदना आदि गुनगुनाउने र साथी सङ्गीलाई गुनासो पोखेर मन हलुङ्गो गराउने गरेको पाइन्छ । त्यसै गरी दसैँमा नयाँ कपडा किनेर लगाउने, खसी काटेर मासु भात खाने, टीका जमरा लगाउने र कालिका देवीको पूजापाठ गर्ने गरिन्छ भने तिहारमा कुकुर, गाई र गोरु पूजा गरिन्छ । लक्ष्मी पूजाका दिन लक्ष्मी पूजा गरिन्छ । चतुर्दशीको दिनदेखि देउसी भैली खेल्ने, गाउने, नाच्ने गरी रमाइलो गरिन्छ । भाइटीकाको दिन दिदी बहिनीले दाजुभाइलाई टीका लगाइ दिने पूजाआजा गरी दीर्घायुको कामना गर्ने जस्ता अनेक सांस्कृतिक विशेषता पनि यस क्षेत्रमा प्रचलित छन् । ख्याली, सिङ्गारु, पैस्यारी, टप्पा, सोरठी आदि यहाँका मुख्य नाच हुन् । वेला वेलामा मेला लाग्ने भएकाले मानिसहरू मेलामा भेटघाट गर्ने र जम्मा भएर आफ्नो वेशभूषा सहित ठुलाठुला मादल बजाएर लहरे, सोरठी आदि नाच्ने र रमाइलो गर्ने गर्दछन् । यस्ता मेलापर्वलाई

नचारु र मादलेहरूले आफ्नो कला अरूलाई देखाइने अवसरका रूपमा लिइन्छ । इस्टमित्र, साथीसङ्गी, छोट्ट्याछोट्टी भेटघाट भएर मिठो मिठो खाने, किनमनेल गर्ने र बेचबिखन गर्ने जस्तो कार्य हुन्छन् । यस्ता मेला पर्व उत्सव तन्नेरी तरुनीहरूका लागि विशेष अवसर मानिन्छन् । समग्रमा यस्ता चाडपर्व “दाँत छन्जेल खाजा खानू उमेर छन्जेल छोटी बस्नु” भन्ने यहाँको उखानको यहाँको संस्कृति चरितार्थ भएको पाइन्छ ।

२.४ भाषिकागत परिचय

नेपालको मध्यपश्चिमाञ्चल विकास क्षेत्रमा पर्ने सल्यान जिल्लामा भाषिकागत हिसाबले अध्ययन गर्दा नेपालको पूर्वी क्षेत्र र पश्चिमी क्षेत्र दुबैतिरको मिश्रित विशेषता पाइन्छ । यस क्षेत्रमा नेपाली बाहेक अन्य मातृभाषा बोल्ने समुदायको बसोबास छैन । यस क्षेत्रमा बसोबास गर्ने सबै समुदायले नेपाली भाषाको स्थानीय भेदलाई नै पहिलो भाषाका रूपमा प्रयोग गरि रहेको पाइन्छ । यहाँका मानिसहरूले आफ्नै मौलिक उच्चारण र मौलिक शब्दहरू प्रयोग गर्ने गरेको पाइन्छ । फलस्वरूप यस क्षेत्रका मानिसहरूलाई बोलीचालीकै आधारमा चिन्न सकिन्छ । पूर्वी सल्यानमा बोलिने भाषिकालाई खसानी उपभाषिका भन्ने गरिएको छ । यहाँका विशेषता प्रकट हुने केही शब्दहरू यस प्रकार छन् :

मानक शब्द

पानी
माटो
डाँडो
काँडा
यहींनेर
भनेको
गरेको
आउने भए

पूर्वी सल्यानमा प्रचलित शब्द

पनि
मटो
डाँरो
काँरा
हिँत्ति
भन्याउ
गन्याउ
आउन्या भया

| | |
|-----------|--------------------|
| जाऊँ | जाम् |
| खाऊँ | खाम् |
| राखे | हाख्या |
| थिइस् | थिई |
| कान्छा | कान्सा |
| मान्छे | मान्स |
| नराम्रो | ननाम्रो/घिनौ मर्नु |
| राम्रो | नाम्रो |
| मुनि/तल | आस्न |
| माथि | उफ्र |
| कसको | कइखो/कखो |
| यसको | यइखो/यखो |
| केटाकेटी | लख्यालखी |
| भैंसी | भैंसो |
| गोरु | बल्ल |
| पाडो | पारो |
| जुवा | ज्वालि |
| तिर/पट्टि | पाइ |
| गुराँस | बुराँस |
| जन्मनु | जर्मनु |
| भेडा | भेरा |
| हिजो | बेलि |
| डाडु | डारु |
| गुलियो | मोलो |
| गाएर | गाइकिन |

| | |
|----------------|-------------------------|
| भएर | भइकिन |
| भएको | भयाउ |
| विवाह | ब्या |
| तरुनी | छोटी / छोऱ्याटी |
| तन्नेरी | छोऱ्याट्टो / छोऱ्ट्ट्या |
| आकाश | सगर |
| स्वास्नीमान्छे | स्वानछोरी |
| लोग्नेमान्छे | लवानछोरो |
| अमिलो | चुगिलो |
| ज्योतिष | जैस्यालु |
| शनिवार | छन्चरवार |
| सोमवार | सौंवार |
| शुक्रवार | शुक्रवार |
| बिहिवार | बिपैवार |
| सानो | स्यानो |
| पश्चिम | पच्छिउ |
| आँप | अम्राइ |
| कहाँनेर | काँत्न |
| मकै | मका |
| कालीपाऱ्या | कालीपारे |
| रुपैया | रुप्या |
| लट्टी | लौरी |
| यहि | यइ |
| दिन अस्ताउने | दिन बुर्ने / घाम बुर्ने |

२.५ शैक्षिक परिचय

पूर्वी सल्यान शिक्षाका दृष्टिले पिछडिएको अवस्थामा छ । परापूर्व कालदेखि यहाँको मुख्य पेसा घर गृहस्थी र खेतीपातीमा संलग्न हुनु रहेको थियो । मुख्यतः गाईवस्तु, भेडा, बाखा, चल्ला/कुखुरा पाल्नु र घिउ बेचेर नुन किन्नु वा जीविका चलाउनु यहाँको जनजिविका हो । त्यतिखेर यहाँका मानिसले शिक्षा लिने र स्कुलमा गएर पढ्ने गरेको पाइँदैनथ्यो । त्यसैले पनि शैक्षिक क्षेत्रमा यहाँको त्यति लामो र उल्लेख्य अवस्था बनि सकेको छैन तथापि यहाँ पछिल्लो समयमा आएर केही शैक्षिक चेतना र चासो अभिवृद्धि भएको पाइन्छ । वि.सं. २०५० साल पूर्व यस क्षेत्रमा स्नातक तहसम्म औपचारिक शिक्षा प्राप्त जनशक्ति न्यून रहेको पाइन्छ । कुनै समयमा पाँच कक्षा पास गरेको जनशक्तिलाई उच्च शिक्षा प्राप्त मानिन्थ्यो । जनशक्ति मास्टर (शिक्षक) जागिरेका रूपमा कार्यरत थियो । यहाँका केही व्यक्तिले हुलाक, पशुसेवा केन्द्र आदिमा निम्न स्तरको जागिरेको रूपमा काम गरेको पाइन्छ । तर ब्राह्मण समुदायमा भने संस्कृत शिक्षाको प्रभाव निरन्तर रहि रहेको पाइन्छ । यसरी सरसर्ती अध्ययन गर्दा त्यति बेलाका केही मान्छे मात्र सामान्य लेखपढ गर्ने अवस्थामा थिए । अरू सबै खेती किसानि गर्ने र धन पैसा कमाउन भारत कालीपार जाने गर्दथे ।

वि.सं. २०५० साल पश्चात् यस क्षेत्रमा शैक्षिक लहर आएको देखिन्छ । २०५० पछिको 'तिन दशकमा समग्र सल्यान जिल्लामा र यस क्षेत्रमा शैक्षिक प्रगति भएको मानिन्छ । पढेलेखे मात्र गुणस्तरीय र सन्तोषजनक जीवन बिताउन सकिन्छ, खेतीपाती र कालीपारे जीवन निम्न स्तरको हो भन्ने मान्यता त्यसपछि नै स्थापित भएको पाइन्छ । अहिले आमामुबाले नखाई-नलाई दुःखकष्ट गरेर अनि घर खेती बेचेर भए पनि छोराछोरीलाई पढाउने लेखाउने गरेको पाइन्छ । आफूले धेरै लगानी शिक्षामा गर्न नसक्ने र शैक्षिक चेतना पछि विकास भएकाले यस क्षेत्रका मानिसको गुणस्तरीयता र योग्यतामा कमी भई बेरोजगारी समस्या पनि बढी रहेको छ । शिक्षा क्षेत्र एउटा मात्र

यस ठाउँको जागिर खाने संस्था भएको र त्यसमा जागिर खानलाई तँछ्छाड-मछ्छाड गर्ने, नातावाद, कृपावाद तथा राजनीतिकरणका प्रभावले छोराछोरीको भविष्यप्रति आमाबाबु चिन्तित देखिन्छन् । हाल आएर यहाँको अधिकांश मानिस साक्षर भइ सकेको पाइन्छ । केही शिक्षित व्यक्तिहरू लोकसेवा आयोगद्वारा लिइने परीक्षामा प्रतिस्पर्धा गरी निजामती सेवामा प्रवेश गरि सकेका छन् भने केहीले अध्ययनलाई अगाडि बढाइ रहेका छन् । अन्य क्षेत्रमा भैं यस क्षेत्रका युवाहरूको वैदेशिक रोजगारतर्फ आकर्षण बढ्दै गएको छ । यस क्षेत्रमा समग्र विकासको लागि शिक्षा र चेतनाको पनि विकास र विस्तार हुनु जरुरी छ ।

तेस्रो परिच्छेद

लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय

३.१ लोक साहित्यको परिचय

लोक साहित्य लोक जनजीवनमा मौखिक परम्परामा हुर्केको जन साहित्य हो । 'लोक' शब्द अङ्ग्रेजीको folk शब्दको समानार्थी रूपमा प्रयोग भएको पाइन्छ । प्राचीन समयदेखि नै यस शब्दको प्रयोग विशिष्ट रूपमा भएको देखिन्छ । ऋग्वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ एवम् संहिताहरूमा 'लोक' शब्दलाई सर्वव्यापक तत्त्वका रूपमा स्वीकार गरिएको पाइन्छ । युगौंयुगदेखि मौखिक परम्परा तथा श्रुति परम्पराबाट आउने एक पुस्ताबाट अर्को पुस्तामा सदैँ जाने अलिखित साहित्य नै लोक साहित्य हो । यो सुरुमा व्यक्ति विशेषको रचना भएर पनि कालान्तरमा सामूहिक हुन्छ । अनि अलिखित भएर पनि जन मानसमा रहि रहन्छ । यो लोक जीवनका सामूहिक घामछायामा तरङ्गित हुने साहित्य हो । लोक शब्दले सामान्यतया संसार वा जगत् भन्ने अर्थबोध गराउने भए तापनि लोक साहित्यसँग यसको अर्थ स्पष्ट गर्दा यसले मानव समाजको ग्रामीण परिवेशमा परम्पराको प्रवाहमा जीवित रहने वर्गलाई बुझाउँछ । यसरी हेर्दा 'लोक' संस्कृत शब्द हो र बौद्धिक अर्थ विशेष रूपमा बुझिन थालिएको छ । त्यो हो संवेदनशील र अनुभूतिशील व्यापक जन समुदाय । हाल आएर 'लोक' शब्द एउटा पारिभाषिक शब्द बनेको छ । अधिकांश विद्वान्हरू यसलाई साधारण जन समाजको अर्थको रूपमा लिन्छन् जसभित्र विभिन्न जाति, वर्ग, धर्म, संस्कृति आदि समेटिएका हुन्छन् । लोक साहित्य 'लोक' र 'साहित्य' दुई शब्द मिलेर बनेको छ । लोक साहित्यमा लोक तत्त्व, प्रमुख रूपमा देखिन्छ भने शास्त्रीयता चाहिँ गौण रूपमा रहेको हुन्छ । लोक साहित्य लोक जीवनको सहज तथा सरल अभिव्यक्ति हो । मौखिक रूपमा व्यक्त हुने र तत्कालै सुनेर ज्ञान र अनुभव हुने हुँदा यसमा सरलताको मात्रा बढी हुन्छ ।

लोक साहित्यमा पनि नव निर्माणको प्रक्रिया रहन्छ र नयाँ नयाँ शब्दको प्रयोगका साथै आलङ्कारिक अभिव्यक्ति हुन्छ, तापनि लिखित साहित्य जस्तो यो कृत्रिम र दुरुह हुँदैन ।

मौखिक रूपमा तत्कालै रचना गरी व्यक्त हुने भएकाले लोक साहित्यमा पटक-पटक संशोधन र परिमार्जन गर्ने अवसर लिखित साहित्य रहन्छ । जस्तो कलात्मक र गहन विचारहरूले भरिएको भावपूर्ण रचना लोक साहित्य नहोला तर लोक साहित्य भित्रैबाट स्वाभाविक रूपले व्यक्त भएको भावनाको अभिव्यञ्जना हो ।^१ साहित्यले सामान्यतः रागात्मक भाषामा व्यक्त गरिने जीवन जगत्का हितकारी र कलात्मक अभिव्यक्तिलाई बुझाउँछ । यसमा महाकाव्यदेखि सामान्य लोकगायक सम्मका अभिव्यक्ति अटाउँछन् । साहित्यले मौखिक र लिखितको भेदभाव पनि गर्दैन र शिष्ट, परिष्कृत वा लोकस्तरीयमध्ये कुनै एकको मात्र माग पनि गर्दैन । लोक साहित्यले भने लोकस्तरीय अभिव्यक्तिको माग गर्दछ । साहित्यिक विधा भएकाले यसमा साहित्यिक विशेषता त आवश्यक नै रहन्छ तर लौकिक पक्षको उपस्थिति र मौखिक अभिव्यक्ति अनिवार्य मानिन्छन् ।^२ लोक साहित्य मौखिक परम्परामा हुर्कने हुनाले कुन बेला कसले सिर्जना गर्नु भन्ने कुरा यसमा हुँदैन । लोक साहित्य लोकको साहित्य अर्थात् लोकबाट आएको लोकको भावनामा फुटेको र लोकमा मौलाएको अभिव्यक्ति हो । यसमा लोक मानसका समस्त क्रिया प्रतिक्रिया गुञ्जिन्छन् । लोकको आत्मजीवन बोल्छ ।^३ लोक साहित्यको इतिहासलाई भाषाको इतिहाससँग गाँस्न सकिन्छ । लोक साहित्य लोकको सहज र स्वच्छन्द अभिव्यक्ति हो ।

यसलाई लोकले सरल र स्वच्छन्द रूपले ग्रहण गर्दछ । लोकले सजिलै बुझ्न र अनुभव गर्न सक्ने भाषा र भावनामा निर्मित मानव मुटुको स्पन्दनबाट निस्केको मिठो

^१ चूडामणि बन्धु, **नेपाली लोक साहित्य**, (काठमाडौं : एकता बुक्स, २०५८), पृ. २३ ।

^२ जीवेन्द्रदेव गिरी, **लोक साहित्यको अवलोकन** (काठमाडौं : एकता प्रकाशन, २०५७), पृ. १९

^३ कृष्ण प्रसाद पराजुली, “लोक साहित्यको परिभाषा र लोक साहित्यलाई छुट्याउने आधार”, **कुञ्जिनी**, (वर्ष ५, अङ्क ३), २०५४, पृ. १०१ ।

र आकर्षणमय मौखिक साहित्य नै लोक साहित्य हो ।^४ त्यसैले भन्न सकिन्छ, लोक साहित्य लोक जीवनमा कहिल्यै नहराउने अजम्बरी साभा सम्पत्ति हो ।

३.२ लोकगीतको परिचय

लोकगीत 'लोक' र 'गीत' दुई शब्दको संयोजनबाट बनेको छ । यसैबाट के स्पष्ट हुन्छ भने लोकद्वारा स्वस्फूर्त असचेत रूपमा लयात्मक पाराले गाइने गीत नै लोकगीत हो । यसमा लोक मानसका रागात्मक अभिव्यक्तिहरू सहज रूपमा उरालिएका हुन्छन् । लोकगीतले लोक जीवनका दुःख र सुःख, आँसुहाँसो, निराशा आशाका साथै लोकको चालचलन, विधि व्यापार, आस्था र मान्यतालाई वहन गरेको हुन्छ । अङ्ग्रेजीको Folk song को प्रयायवाची शब्दका रूपमा देखिने लोकगीत जाति, समाज र ठाउँ अनुसार फरक फरक रूपमा देखा पर्दै त्यस समाजको दुःखसुःखको साथी बनेको हुन्छ । लोकगीतहरू सचेत रूपमा गरिएको चिन्तन मननका उपज होइनन् । लोक मानसका स्वतःस्फूर्त अभिव्यक्ति लयात्मक ढङ्गले भाषामा प्रकट हुँदा लोकगीतको रूप धारण गर्दछन् । लोकगीतहरू समाजमा हस्तान्तरित हुँदै आएका हुन्छन् तर कुनै पनि व्यक्तिले कुनै लोकगीत गाउँदा त्यसलाई आफ्नै ठानेर त्यसमा मौलिकता समेत थपेर अभिव्यक्त गर्दछ ।^५ लोकगीत जन साधारणको समष्टि हो, समरूप हो ।^६ यसले लोक जीवनको गेय अभिव्यक्ति प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । लोकगीतको प्रमुख स्रोत थलो गाउँलाई ठानिन्छ, तापनि सहरी क्षेत्रलाई पनि यसले त्यतिकै अँगालेको हुन्छ । लोकगीतको अर्थ विद्वान्हरूले आआफ्नै तरिकाले दिएका छन् । हिन्दी साहित्य कोशमा लोकगीतका ३ अर्थ लगाइएको छ ।^७ ती हुन् :

१. लोकमा प्रचलित गीत

^४ धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदी, **नेपाली लोक साहित्यको विवेचना**, (काठमाडौं : त्रि.वि. पाठ्यक्रम विकास केन्द्र), २०४१।

^५ चूडामणि बन्धु, **पूर्ववत्**, पृ. ११५ ।

^६ कृष्णप्रसाद पराजुली, **पूर्ववत्**, पृ. १० ।

^७ धीरेन्द्र वर्मा, **हिन्दी साहित्यकोश**, भाग १, दो.सं. (वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड, २०२०), पृ. ७५० ।

२. लोक निर्मित गीत

३. लोक विषयक गीत

नेपाली शब्द सागरले लोकगीतलाई जनतामा परम्परादेखि गाउँदै चल्दै आएको मधुर गीत भनेर अर्थ्याएको छ।^८ यसरी लोकगीत समाजमा बसोबास गर्ने जनताले निर्माण गरेको र परम्परादेखि चल्दै आएको लोक जीवनको लयात्मक अभिव्यक्ति हो भन्न सकिन्छ। नेपाली साहित्य कोशमा उल्लेख भए अनुसार लोकगीत लोक साहित्यको एक प्रमुख अङ्ग हो जसलाई नेपाली प्राकृतिक कविता भने पनि हुन्छ। यसले आफ्नो रूप र विधा आफैले जन्माउँछ। यो सरल हुन्छ, सुबोध हुन्छ र लोकप्रिय हुन्छ। यसको कलेवरमा लोक जीवन छचल्किने ऐना हुन्छ। त्यसैले लोकगीत भनेको समष्टिको मनबाट जन्मने कुरा हो। अतः लोकगीतमा कविता सिर्जना गर्ने कविहरूको नाम उल्लेख भएको पाइँदैन। यसको संरचनामा कुनै पूर्व योजना पनि हुँदैन।^९

त्यसै गरी भारतीय लोक साहित्यका विद्वान् परमारले लोकगीत परम्पराको त्यो महानदी हो जुन ससाना नदी मिलेर बनेको हुन्छ भनेका छन्।^{१०} महाकवि देवकोटाले, मुनामदनमा “सज्जन वर्गप्रति” उपशीर्षकमा “भूयाउरे भनी नगर हेला हे ! प्यारा सज्जन” भन्दै लोकगीतको भूयाउरे लयलाई महत्त्व दिएका छन्।^{११} यसरी हेर्दा भाव र लयले पूर्ण भएको मानव अन्तस्करणबाट बाहिर उद्दीप्त भएर प्रस्तुत हुने लयात्मक अभिव्यक्ति नै लोकगीत हो। सत्यमोहन जोशीका अनुसार “लोकगीत भनेको त्यो सङ्गीत वा गीत हो जुन मानव समाजमा मातृभाषाको नाताले मानिसमा नैसर्गिक रूपले सुःख र दुःखको अनुभावमा दया, माया, प्रेमभाव अभिव्यक्त हुने वेलामा स्वयं उद्गारको रूपमा लयदार भाकामा काव्यमय शैली भैं निस्कन्छ।^{१२} अर्का अध्यता

^८ वसन्तकुमार शर्मा नेपाल, **नेपाली शब्द सागर** (काठमाडौं : साझा पुस्तक भण्डार, २०५८), पृ. ११७४।

^९ ईश्वर बराल र अन्य (सम्पा.), **नेपाली साहित्यकोश** (काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, २०५५), पृ. ४२।

^{१०} श्याम परमार, **भारतीय लोक साहित्य** (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, इ. १९५४), पृ. ५३।

^{११} लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, **मुनामदन** (तेइसौं सं.), (काठमाडौं : साझा प्रकाशन, २०५४), भूमिका खण्ड।

^{१२} सत्यमोहन जोशी, “लोकगीतको केही भल्का”, **प्रगति**, (वर्ष ३, अङ्क २, २०१२), पृ. १४५।

धर्मराज थापा भन्छन् - “लोक अनुभूति नै लोकगीत हो, जसले हृदयका उद्गारलाई स्पष्ट र यथार्थ रूपमा प्रस्तुत गर्दछ । सुःखदुःखमा अलापिएका अभिव्यक्ति लोकमा गाइएका हुँदा यसको संज्ञा लोकगीत भयो । लोकगीतका माध्यमबाट मानव सङ्गीत प्रेमीलाई सङ्गीतको भावना जागृत गराउन सकिन्छ ।”^{१३}

काजीमान कन्दडवा भन्छन्, “जन समूहका दिनानुदिनका भावनाहरूलाई लयदार भाकामा वगाएमा लोकगीत बन्छ ।”^{१४} कालीभक्त पन्तले नेपाली लोकगीतलाई दबाव र प्रलोभनमा नपरी स्वयं दुःखित वा प्रफुल्लित हृदयबाट प्रस्फुटित हुने लोक अभिव्यक्तिका रूपमा लिइन्छ भनेका छन् ।^{१५} त्यसै गरी जीवेन्द्रदेव गिरीका अनुसार- “लोकगीतहरू मस्तिष्कभन्दा हृदयसँग गाँसिएका हुन्छन् । फलतः लोकगीतहरू सुइरो रोपिए भैं मान्छेको हृदयमा रोपिन्छन् ।”^{१६}

यसरी परापूर्व कालदेखि हस्तान्तरण भएको अलिखित मौखिक साहित्य विधा लोकगीत एक महत्त्वपूर्ण सङ्गीत हो । विभिन्न विद्वान्हरूको भनाइ र लोकगीतसँगको नाता अध्ययन गर्दा यो समाजको अवस्था चित्रण गर्ने एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेजको रूपमा स्थापित छ । लोकगीतले युगानुकूल विशेषता बोकेको हुन्छ । त्यसैले कुनै पनि समाजको तत्कालीन अवस्थाबारे जानकारी लिन लोकगीत नै एक विशाल पुस्तक हो । वास्तवमा समाजको सत्य र यथार्थ बुझ्नु छ भने लोकगीतका टुक्रामा घोट्लिनु बढी फलदायी हुन्छ । लोकगीतको सम्बन्ध जीवनका हरेक पक्षसँग भएकाले नै यो समाजमा सर्वाधिक लोकप्रिय बन्न पुगेको हो ।

^{१३} धर्मराज थापा, **गण्डकीका सुसेली**, (काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, २०३०), भूमिका खण्ड ।

^{१४} काजीमान कन्दडवा, **नेपाली जन साहित्य**, (काठमाडौं: रोयल नेपाल एकेडेमी, २०२०), पृ. १० ।

^{१५} कालीभक्त पन्त, **हाम्रो लोक सांस्कृतिक इतिहास**, (स्याङ्जा : लेखक स्वयं, २०२८), पृ. १७ ।

^{१६} जीवेन्द्रदेव गिरी, **लोक साहित्यको अवलोकन** (काठमाडौं : एकता प्रकाशन, २०५७), पृ. २५ ।

३.३ लोकगीतको संरचना

साहित्यका हरेक विधाहरूमा आआफ्ना संरचना एवम् प्रस्तुतिगत तत्त्वहरू हुन्छन् । लोकगीत लोककला हो । त्यसैले यसमा लोककलाका विभिन्न तत्त्वहरू समाविष्ट हुन्छन् । लोकगीतका तत्त्वहरू के-के हुन् वा कुन-कुन तत्त्वहरू संयोजन भई लोकगीत बन्छन् भन्ने बारेमा विद्वान्हरूका आ-आफ्ना मतहरू छन् ।

राप्तीका लोकगीतमा विद्यावारिधि गर्ने नेपाली लोकगीतका विश्लेषक गोविन्द आचार्यले भाषा, भाव, काव्यकला, सङ्गीतात्मकता र संरचनालाई लोकगीतका तत्त्वका रूपमा उल्लेख गरेका छन् ।^{१७} अर्का अध्येता मोतीलाल पराजुलीले कथ्य विषयवस्तु वा भाव, भाषा, स्थायी, अन्तरा, थेगो, लय वा भाका र सङ्गीत गरी पाँच ओटा तत्त्वका चर्चा गरेका छन् ।^{१८} चूडामणि बन्धुका विचारमा लोकगीतको संरचनामा यी छ ओटा तत्त्वहरूको संयोजन गरिएको हुन्छ : कथ्य, भाषा, चरण वा पद, स्थायी र अन्तरा, रहनी, बन वा थेगो, लय र भाका ।^{१९} यस वर्गीकरणमा लोकगीतका अनिवार्य तत्त्व मानिने सङ्गीतलाई समेटिएको छैन । यसरी विद्वान्हरूमा पनि मत ऐक्यता छैन । कसैले थेगोलाई अनिवार्य तत्त्व होइन भनेको पाइन्छ भने कसैलाई सङ्गीत अनिवार्य तत्त्व होइन । जे होस् यी सबै सङ्गीत शास्त्रीय तत्त्वहरूलाई केलाउँदा लोकगीतका संरचनामा निम्न लिखित सात तत्त्वहरू फेला पर्दछन् :

१. सङ्गीत : स्वर, शब्द, लय, बाजागाजा नृत्यको समिश्रण
२. भाषा : मानव उच्चारण अवयवद्वारा उच्चरित ध्वनि, रूप, शब्द, शब्दावली, उपवाक्य, वाक्य
३. कथ्य/भाव वा विषयवस्तु : लोक गीतको मुख्य तत्त्व
४. स्थायी र अन्तरा : गाउँदाको सुरुको दोहरिने भाग र नदोहोरिनेको सहायक भाग

^{१७} गोविन्द आचार्य (सम्पा.), **राप्तीका गीत** (नेपाल : अतिरिक्त प्रकाशन, २०६०), पृ. २ ।

^{१८} मोतीलाल पराजुली, "लोकगीतको संरचना", **कुञ्जिनी**, (वर्ष ११, अङ्क ८, त्रि.वि. २०६०), पृ. २१ ।

^{१९} चूडामणि बन्धु, **पूर्ववत्**, पृ. ११७ ।

५. थेगो : मूल अनुकरणात्मक सम्बोधक, रहनी, वथन
६. चरण वा पाउ : फेद र टुप्पोको लम्बाइ चौडाइ वा संरचना
७. लय वा भाका : गीत गायनमा प्रयुक्त निश्चित ध्वनि समूह

यिनका साथै लोकतत्त्व पनि लोकगीतको महत्त्वपूर्ण तत्त्वका रूपमा रहेको हुन्छ । यसले नै गीतबाट लोकगीतलाई अलग्याउँछ ।

यी माथिका उल्लिखित सात तत्त्वहरू लोकगीतका लागि आवश्यक मानिन्छन् । यी तत्त्वहरूमध्ये कुनै एक तत्त्व कमजोर हुन गयो भने राम्रो लोकगीत बन्न सक्दैन । विषयवस्तु, सङ्गीतका भाषा र लोकतत्त्व अनिवार्य तत्त्व मानिन्छन् । स्थायी र थेगो ऐच्छिक तत्त्व हुन् । थेगो र स्थायी नभएका पनि कतिपय लोकगीतहरू हुन्छन् । त्यसै गरी चरण वा पाउ र लय वा भाका पनि अनिवार्य तत्त्व मानिन्छन् । विषयवस्तु लोकगीतको महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । यसबाट गायकको भित्री आशय अभिव्यक्त हुन्छ । लयले माधुर्य एवम् मनोरञ्जकता ल्याउँछ भने सरल तथा मधुर भाषाले श्रुतिमधुरता ल्याउँछ । आन्तरिक र बाह्य सङ्गीतको संयोजनले श्रोतालाई मन्त्रमुग्ध पार्दछ । चरण तथा अन्तराले भावलाई क्रमबद्ध राख्ने, श्रुति मधुरता दिने एवम् सन्देश प्रस्तुत गर्ने काम गर्दछन् । लयको साधना, सङ्गीतको उपयुक्त तालमेल र शब्द चयनमा सन्तुलन हुन सकेन भने स्तरीय लोकगीत बन्न सक्दैन । अतः यी सात ओटा तत्त्वहरू लोकगीतका लागि अपरिहार्य छन् ।

३.४ लोकगीतको वर्गीकरण

लोकगीतको वर्गीकरण लोकगीत अध्ययनको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो । लोकगीतको वर्गीकरणमा विभिन्न विद्वान्हरूले आ-आफ्ना आधार अगाडि सारेको पाइन्छ । वर्गीकरणको क्षेत्रमा भारतीय लोक साहित्य विद्वान् सत्येन्द्र, स्वर्णलता कृष्ण देव उपाध्याय, सूर्यकिरण परिक र नेपाली लोक साहित्य विद्वान्हरू काजीमान कन्दड्वा, सत्यमोहन जोशी, टेक बहादुर खत्री, पूर्ण प्रकाश नेपाल 'यात्री', दयाराम श्रेष्ठ,

कृष्णप्रसाद पराजुली, चूडामणि बन्धु, जीवेन्द्रदेव गिरी आदि विद्वान्ले विभिन्न आधार प्रस्तुत गरेका छन् :

समग्रमा यी सबै विद्वान्हरूको मतका अनुसार लोकगीतलाई निम्न नौ आधारमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ :

१. विषयवस्तुका आधारमा वर्गीकरण

नेपाली लोकगीतका विषयवस्तु समाज, समय, प्रसङ्ग आदि कुराले फरक-फरक हुन्छन् । जस्तै; कर्खा, खाँडो, भजन, धार्मिक तथा ऐतिहासिक विषयवस्तुमा आधारित छन् भने ख्याली, भ्याउरे, रत्यौली, तिज, देउसी, भैलो आदि सामाजिक विषयवस्तु र बालन, सोरठी, घाटु, आदि पौराणिक विषयवस्तुमा आधारित छन् ।

२. कार्यका आधारमा वर्गीकरण

काम विशेषमा गाइने गीतहरू यस आधारमा पर्दछन् । असारे, रोपाइँ, कोदो रोप्दा, दाइँ हाल्दा, धान रोप्दा र घाँस काट्दा आदि कार्यका आधारमा गाइने अलग अलग गीत हुन्छन् । यसरी नै अन्य विभिन्न काममा गाइने गीतहरूलाई काम अनुसार वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

३. प्रस्तुतिका आधारमा वर्गीकरण

प्रस्तुतिका आधारमा वाद्यवादनको आवश्यकता पर्ने र नपर्ने गीतहरू हुन्छन् । वाद्यवादन आवश्यक पर्नेमा पनि दमाहामा, मादलमा, ढोलकमा तथा विशेष गरी पन्चेबाजामा गीत भजन आदि गाइन्छन् । मुरलीको साथमा पनि कतिपय गीत गाइन्छन् । ठाडीभाका, घाउटा आदि बिना बाजा पनि गाउने गरिन्छन् ।

४. स्वरूपका आधारमा वर्गीकरण

स्वरूपका हिसाबले नेपाली लोकगीत आख्यानका आधारमा आख्यानयुक्त र आख्यानमुक्त गरी दुई प्रकारका हुन्छन् भने आकारका आधारमा मध्य, लघु र लघुतम मान्न सकिन्छ ।

५. रस भावका आधारमा वर्गीकरण

यस अन्तर्गत खुसी, हाँसो, रोदन, दुःख, वीरभाव, करुणभाव आदि गीतहरू पर्दछन् । खुःसी, सुःख, विरह र वेदनाको वेला मन शान्त पार्न गीत गाइन्छ । लोकगीतलाई रस भावका आधारमा शृङ्गार, वीर, शान्त, करुण, हास्य आदिका रूपमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

६. उमेर, लिङ्ग र जातिका आधारमा वर्गीकरण

उमेरका आधारमा बालबालिकाले गाउने बालगीत र युवायुवतीले गाउने माया प्रेमका गीत हुन् भने बुढाबुढीले भजन कीर्तन गाउने प्रचलन हुन्छ । लिङ्गका आधारमा महिला र पुरुषले गाउने भिन्न भिन्न गीत पर्दछन् भने जात जाति अनुसार आफ्नो-आफ्नो भाषा र संस्कार अनुसार गाउने गीतहरू हुन्छन् ।

७. स्थानका आधारमा वर्गीकरण

विभिन्न स्थानमा विभिन्न स्वरूप भएका लोकगीत गाइन्छन् । भौगोलिक क्षेत्र अनुसार पुर्वेली, पश्चिमेली, हिमाली, पहाडी, तराईली, आदि गीतहरू ठाउँ विशेषमा गाइन्छन् । जस्तो: पूर्वी क्षेत्रमा साकेवा, हिमाली क्षेत्रमा सेलो, तराईमा कहरूवा, हुर्दङ्ङवा भाँगाड, मध्यपश्चिममा टप्पा, सुदूरपश्चिममा डेउडा, पश्चिमाञ्चलमा रोइला, कौडा र मध्यमाञ्चलमा काठे गीत ठाउँ विशेषका गीतहरू अन्तर्गत पर्दछन् ।

८. गायन सहभागिताका आधारमा वर्गीकरण

गायन सहभागिताका आधारमा लोकगीतको प्रकृति पनि फरक फरक हुन्छ । जस्तो : समूहमा गाइने गीत सामूहिक गीत, एक जनाले गाउने एकल गीत र दुई जना युवायुवतीले गाउने युगल गीत वर्गीकरण ।

९. छन्द एवम् सङ्गीत योजनाका आधारमा वर्गीकरण

लोकगीतमा पाइने श्लोक वा पङ्क्तिगत सङ्ख्याका आधारमा एक पङ्क्ति, दुई पङ्क्ति, तिन पङ्क्ति, चार पङ्क्तिका गीत भनेर वर्गीकरण गरिन्छ। अक्षरका आधारमा सम, तथा अर्धसम र विषम तथा स्वरका आधारमा शुद्ध स्वर र विकृत स्वरका गीतमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ।

यिनै माथिका विभिन्न आधारमा लोकगीतको वर्गीकरण गरेर पहिचान गर्न सकिन्छ।

३.५ लोकगीतको विशेषता

लोकगीत लोक साहित्यका विधाहरूमध्ये एक चर्चित र लोकप्रिय विधा हो। लामा लामा निबन्ध, कथा, कविता सुन्दा र पढ्दा भन्भटिलो हुने तर लोकगीत सरल र सहज तरिकाले बुझ्न सकिने र सुन्दा आनन्दको अनुभूति हुने भएकाले यो सबैको चासोको विषय पनि बनेको छ। यसमा जन जीवनका विभिन्न घटना अनुभव रहन-सहन, चाल-चलन, रीतिरिवाजको चित्रण भएकोले यसले समाजका विविध पक्षलाई समेटेको हुन्छ। यो मानव सभ्यतासँगै स्थापित भइ पुस्ता हस्तान्तरण हुँदै भोलिसम्म रहिरहन सक्ने साभ्ना सम्पत्ति भएकाले यसका गुण र विशेषता बुझ्न जरूरी छ।

लोकगीत आदिकालदेखि अनन्त कालसम्म फैलिँदै गइ रहने भएकाले यसको क्षेत्र पनि व्यापक छ। यस्ता लोकगीतहरूका विशेषताहरू किटान गरेर त भन्न सकिँदैन तापनि समग्र पक्षलाई केलाउँदा नेपाली लोकगीतका केही साभ्ना विशेषताहरू आँकलन गर्न सकिन्छ। लोकगीतका महत्त्वपूर्ण निम्न विशेषताहरूलाई तालिकामा देखाउन सकिन्छ :

लोकगीतका विशेषताहरू

- मौलिकता र सरलता
- अज्ञात रचयिता
- स्वच्छन्दता
- मौखिक परम्परा र गतिशीलता
- सहजता र स्वाभाविकता
- सामूहिक भावभूमि
- प्रकृति चित्रण
- स्थान र भाषिकाको प्रयोग
- प्रश्नोत्तरात्मक ढाँचा

आरेख सङ्ख्या १: लोकगीतका विशेषताहरू

३.६ निष्कर्ष

माथिका लोकगीतका विशेषताहरू अनुसार लोकगीत एक मौलिक रचना हो जुन सरल र सहज रूपले हस्तान्तरण हुँदै जान्छ, भन्ने हो । लोकगीत कसले रचना गरेको हो भन्ने कुरा थाहा हुँदैन, बरु यो मौखिक रूपमा एक पुस्ताबाट अर्को पुस्तामा सार्दै गइ रहन्छ । यो गतिशील हुन्छ । लोकगीतमा सहजता र स्वाभाविकता पाइन्छ । लोकगीत स्वच्छन्द रूपले प्रकट भइ रहने वस्तु हो । यसको भाव समाजसँग सम्बन्धित हुने भएकाले यसको भावभूमि व्यक्तिगत नभई सामूहिक हुन्छ । लोकगीतको मुख्य विशेषता पनि फरक फरक हुन जान्छ । यस्ता गीतहरूको अर्को महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति भनेको प्रश्नोत्तर प्रवृत्ति हो । लोकगीतकै माध्यमबाट केटा पक्ष र केटी पक्षले जवाफ-सवाल गरी दोहरी चलाउने प्रचलन पनि यसअन्तर्गत रहन्छ । त्यसैले लोकगीत आदिकालदेखि अनन्तकालसम्म चलि रहने एक मौलिक परम्परा हो ।

चौथो परिच्छेद

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको सङ्कलन

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित विभिन्न प्रकारका लोकगीतहरूलाई प्रत्यक्ष रूपमा सम्बन्धित क्षेत्रमा गई त्यहाँका स्थानीय व्यक्तिहरूबाट सङ्कलन गरिएको हो । उहाँहरूबाट जस्ताको तस्तै सङ्कलन गरेर तिनका पारखी कलाकार र प्रबुद्ध व्यक्तिहरूसँग सोधपुछबाट तिनको सत्यापन गरी तल प्रस्तुत गरिएको छ ।

यस क्रममा ती गीतहरू उपलब्ध गराउने स्रोतव्यक्ति बारेमा पनि यहाँ सूचना प्रस्तुत छ ।

४.१ धार्मिक गीत

धार्मिक गीतका रूपमा प्रार्थना गीत र भजन रहेका छन् ।

४.१.१ प्रार्थना गीत

आरती र सन्ध्या प्रार्थना गीत हुन् । तिनका पाठहरू यस प्रकार छन् :

४.१.१.१ आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
माता महापार्वती पिता महादेव
हार चढे, फुल चढे, और चढे मेवा
अपुत्रीलाई पुत्र दिने गणेशजीको सेवा

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
माता महापार्वती पिता महादेव
हार चढे, फुल चढे, और चढे मेवा
निर्धनीलाई धन दिने गणेशजीको सेवा

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
माता महापार्वती पिता महादेव
हार चढे, फुल चढे, और चढे मेवा
लड्डु मनके भोक लागि शान्तकारी सेवा

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
माता महापार्वती पिता महादेव
हार चढे, फुल चढे, और चढे मेवा
अबुद्धिलाई बुद्धि दिने गणेशजीको सेवा

स्रोत : सतीदेवी शर्मा

पिपलनेटा-७, सल्यान

४.१.१.२ सन्ध्या गीत

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है ईश्वरका नाम

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है भगवानका नाम

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है विष्णुजीका नाम

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है कृष्णजीका नाम

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है पशुपतिका नाम

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है महेश्वरका नाम

स्रोत : सती देवी शर्मा र यमुना अधिकारी

पिपलनेटा-७, सल्यान

४.१.२ भजन

त्यहाँ सङ्कलित भजनमा गोपी बाँसको मोरली, याउनु भएन कृष्ण कति
सुहाया शीर्षकका भजनहरु रहेका छन् :

४.१.२.१ गोपी बाँसको मोरली

गोपी बाँसको मोरली श्रीखण्डको ठेटी
बजाऊ कृष्ण मोरली पुन फेरी फेरी
आऊ कृष्ण आऊ आऊ कृष्ण आऊ
मधुर मोरली बनैमा बजाऊ ।

गोपी बाँसको मोरली बकाइनाको ठेटी
सोह्र सय गोपिनी कृष्णजीका केटी
आऊ कृष्ण आऊ आऊ कृष्ण आऊ
मधुर मोरली बनैमा बजाऊ ।

गोपी बाँसको मोरली बुराँसैको ठेटी
सोह्र सय गोपिनी कृष्णजीका केटी
आऊ कृष्ण आऊ आऊ कृष्ण आऊ
मधुर मोरली बनैमा बजाऊ ।

गोपी बाँसको मोरली काफलैको ठेटी
सोह्र सय गोपिनी कृष्णजीका केटी
आऊ कृष्ण आऊ आऊ कृष्ण आऊ
मधुर मोरली बनैमा बजाऊ ।

स्रोत : यमुना अधिकारी

पिपलनेटा-८, सल्यान

४.१.२.२ याउनु भएन कृष्ण

याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
गोकुलैमा मोरली बजाउनु भएन
कृष्ण आउनु भएन

याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
वृन्दावनमा गोपिनीलाई ल्याउनु भएन
कृष्ण आउनु भएन

याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
मथुरामा भजन पनि गाउनु भएन
कृष्ण आउनु भएन

स्रोत : सरिता डाँगी, थारमारे बागचौर, सल्यान

४.१.२.३ कति सुहायो

कति सुहायो कति सुहायो
सापको माला बाघको छाला कति सुहायो

कति सुहायो कति सुहायो
हातैमा त्रिशूल कति सुहायो

कति सुहायो शिव कति सुहायो
हातैमा डमरु कति सुहायो

स्रोत : प्रेमबहादुर वली, थारमारे
सोतागार, सल्यान

४.२ बालगीत

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा बालगीतको पुरानो लोकभाका भेटिएन तर लामो लेगो तानेर बालबच्चा फकाउने विभिन्न किसिमका गीतहरू भने प्रचलनमा रहेको पाइन्छ ।

४.२.१ हो हो बाबु हो हो

हो हो बाबु

सुती जाला बाबु

सुत्यो भने बाबु

माछी मारी ल्याइ दिउँला

सुतेन भने बाबु

भ्यागुतो मारी ल्याइ दिउँला

हो हो बाबु हो हो

सुत बाबु सुत

निदाइ जाला बाबु

काफल गोडी कुटुककै

निदाइ जाला लुटुककै

स्रोत : ऐभान दमाई

कोटबारा ५, गाँडाकोट सल्यान

४.२.२ घुघुती बासुती

घुघुती

बासुती

क्या खाइती

दुद र भात
कले दियो
बाज्याले
गाई दुए
बाबु नाच्यो
हाँस्यो

स्रोत : बिमला डाँगी, कोटमौला-९, सल्यान

४.२.३ कुखुरी काँ

कुखुरा काँ
बासी भात खाँ
खोइ बासी भात
बिरालाले खायो
खोइ बिरालो
मुसो मारन गयो
खोइ मुसो
दुलोभित्र पस्यो
खोइ दुलो
गाईले कुल्च्यो
खोइ गाई
खोलाले बगायो
खोइ खोलो
सुक्यो ।

स्रोत : राधा डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान

हाल: सल्ले, रुकुम

४.२.४ चुँगरी मुसी

चुँगरी मुसी ब्याइछ
स्याना ठुला पाइछ

थुक्क मेरी कस्ती बुरी
एउटा मात्रै पाइछ

स्रोत : मनोज के.सी., थारमारे-५, सल्यान

४.२.५ चिँ मुसी चिँ

चिँ मुसी चिँ
मुसीले खायो धान
धान खाने मुसाको
उखेलिदुँला कान

स्रोत : रेइसन डाँगी, कोटमौला ६, सल्यान

हाल : सल्ले, रुकुम

४.२.६ मामाघरको (घुघुती बासुती)

घुघुती बासुती
घुघुती बासुती
मामा घर जाउली
बुबुमाम खाउली
लैजा लैजा परेवा
गौरो नडाइदे
डाँरो कटाइदे
घुघुती बासुती
घुघुती बासुती

स्रोत : मनोज के.सी., थारमारे-५, सल्यान

४.३ कर्मगीत

कर्मगीतका रूपमा रोपाइँमा गाइने भारी गीत रहेको छ :

४.३.१ रोपाइको भकारी गीत

| | |
|----------------------------|---|
| एकै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| दुई पाते ऽऽ भकारी | ए |
| तिनै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| चारै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| पाँचै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| छै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| सातै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| आठै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| नवै पाते ऽऽ भकारी | ए |
| गोडौंला ऽऽ भकारी | ए |
| पानी लाउंला ऽऽ भकारी | ए |
| पाकेपछि ऽऽ भकारी | ए |
| यिनी धानले ऽऽ भकारी | ए |
| विवाह पूजा ऽऽ भकारी | ए |
| धानौंला ऽऽ भकारी | ए |
| ऐँचोपैँचो ऽऽ भकारी | ए |
| चलाउंला ऽऽ भकारी | ए |
| भकारी ऽऽ भकारी | ए |
| भरौंला ऽऽ भकारी | ए |

स्रोत : काली कट्वाल
दर्माकोट-१, सल्यान

४.४ पर्व गीत

पर्व गीतहरूमा तिज गीत, देउसी रे र भैली रहेका छन् ।

४.४.१ तिज गीत

ठाउँ ठाउँमा प्रचलित तिज गीत निम्न अनुसार फरक फरक छन् :

४.४.१.१ दार्माकोटे (तिज गीत)

नाच मेरी दिदी बैनी नाच मेरी सानीमा

मैले पनि घाँसै काटें भर्के पानीमा

भर्के पानी घाँसै काटें नौ नौ पुला गनेर

हाम्री सासू अलच्छिनी थोरै भनेर

हाम्री सासू अलच्छिनी दिनैभरि सुत्ने

रातीको बाह्र बजे भान्सा पस्ने

भान्सा कोठा जाँदाखेरि रैछ खाजा भुटेको

त्यो घरमा छोरी दिने आँखा फुटेको

नाकै लाउने नथिया सुनारैले रचेन

कङ्गालीका दियौ बुबा चित्त बुभेन

कङ्गालीको धन सम्पत्ति नखाई नलाई सकियो

पिपलपाते लहरीले कम्मर कसियो ।

स्रोत : विमला रोकाय

दार्माकोट-४, सल्यान

४.४.१.२ ढाकाडमे तिज गीत

वर्ष दिनको तिजमा माइत जाने भनेको

त्यो पापी घरजानले जान दिएनन्

बिहानै उठी भागी जान्छु भनेको
त्यो ठारी खोलाले बगाइ लइगो

बुबाले भन्नु भइछ छोरी मेरी घरै छे
ससुराले भन्नु भइछ ब्वारी माइतै छे
बुबा र ससुरा खोज लिन जानु भो
दुई ढुङ्डीका बिचैमा रैछु बरिलै

बुबा त लाग्नु भइछ काखमा हाली कराउन
ससुरा त लाग्नु भइछ गहना छराउन
बुबाले भन्नु भइछ छोरी मेरी पियारी
ससुराले भन्नु भइछ गहना बिगारी

बुबाले भन्नु भइछ छोरी मेरी यति हो ।
ससुराले भन्नु भइछ साइनो मेटियो ।

स्रोत : जानकी चन्द्र

ढाकाडम-२, पातीहाल्ने, सल्यान

४.४.१.३ पिपलनेटे तिज गीत

डाँरामा लाइदेऊ वर र पिपल
गौरामा पन्यो छायाँ बरिलै
माइतमा मैले बुवा छोडी आएर
बाटोमा लायो माया बरिलै

डाँरामा लाइदेऊ वर र पिपल
गौरामा पन्यो छायाँ बरिलै

माइतमा मैले आमा छोडी आएर
बाटोमा लायो माया बरिलै

डाँरामा लाइदेऊ वर र पिपल
गौरामा पन्यो छायाँ बरिलै
माइतमा मैले दाजु छोडी आएर
बाटोमा लायो माया बरिलै

हेर पारी डाँरिबाट भरिन् चेली जैकल्ला
शिरै लाउने शिरफुल भलकाउँदै
त्यै लगाउने शिरफुलको सूर्य जस्तो ज्योति
चौपारीमा भलमल पारिन् बरीलै

स्रोत : कालीदेवी गौतम

र यमुना अधिकारी (गौतम)

पिपलनेटा-३, सल्यान

४.४.२ देउसी रे

आहै भनभन भाइ हो - देउसी रे
आहै रातो माटो - देउसी रे
आहै चिप्लो बाटो - देउसी रे
आहै लदै पदै - देउसी रे
आहै देउसी भन्दै - देउसी रे
आहै यही घरको - देउसी रे
आहै आँगनीमा - देउसी रे
आहै आयौँ हो - देउसी रे
आहै बखैँ दिनको - देउसी रे
आहै तिहारैले - देउसी रे

| | | |
|--------------------|---|----------|
| आहै जनायो | - | देउसी रे |
| आहै आयौ हामी | - | देउसी रे |
| आहै पन्द्रै दिनको | - | देउसी रे |
| आहै औँसीपुनी | - | देउसी रे |
| आहै तिसै दिनको | - | देउसी रे |
| आहै सैसक्राँति | - | देउसी रे |
| आहै बसै दिनको | - | देउसी रे |
| आहै तिहार | - | देउसी रे |
| आहै एकादशी | - | देउसी रे |
| आहै दुवादशी | - | देउसी रे |
| आहै तिर्दसी | - | देउसी रे |
| आहै चर्दसीको | - | देउसी रे |
| आहै बडा दिनमा | - | देउसी रे |
| आहै कुकुर तिहार | - | देउसी रे |
| आहै कुतुवालाई | - | देउसी रे |
| आहै टिकोटालो | - | देउसी रे |
| आहै लगाइ दिन्छन् | - | देउसी रे |
| आहै फुलुमाला | - | देउसी रे |
| आहै पहिराइ दिन्छन् | - | देउसी रे |
| आहै औँसीको | - | देउसी रे |
| आहै बडो दिनमा | - | देउसी रे |
| आहै गाईको तिहार | - | देउसी रे |
| आहै गाईलाई | - | देउसी रे |
| आहै पूजा गर्छन् | - | देउसी रे |
| आहै गोरु तिहार | - | देउसी रे |
| आहै भाइटीकामा | - | देउसी रे |
| आहै भाइ नहुने | - | देउसी रे |
| आहै बैन्योली त | - | देउसी रे |

| | | |
|------------------|---|----------|
| आहै धुरु धुरु | - | देउसी रे |
| आहै रुन्छे हरे | - | देउसी रे |
| आहै भाइ हुने | - | देउसी रे |
| आहै बैन्योली त | - | देउसी रे |
| आहै बाहिर खुरखुर | - | देउसी रे |
| आहै भित्र सुरसुर | - | देउसी रे |
| आहै गछे हो | - | देउसी रे |
| आहै भाइ हुनेले | - | देउसी रे |
| आहै भाइ नहुने | - | देउसी रे |
| आहै बेन्यौलीलाई | - | देउसी रे |
| आहै सम्भाउँछे | - | देउसी रे |
| आहै बुभाउँछे | - | देउसी रे |
| आहै मेरै भाइलाई | - | देउसी रे |
| आहै टीकाटालो | - | देउसी रे |
| आहै फुलुमाला | - | देउसी रे |
| आहै लगाइ दिन्छे | - | देउसी रे |
| आहै हामरो | - | देउसी रे |
| आहै आसिक दिने | - | देउसी रे |
| आहै वेला भो | - | देउसी रे |
| आहै उमो धुरी | - | देउसी रे |
| आहै उँदो धुरी | - | देउसी रे |
| आहै अजघट्ट | - | देउसी रे |
| आहै गजघट | - | देउसी रे |
| आहै होइ र जाओस् | - | देउसी रे |
| आहै धार्नी सुन | - | देउसी रे |
| आहै जोखने | - | देउसी रे |
| आहै पाथी रुप्या | - | देउसी रे |
| आहै बोकन्या | - | देउसी रे |

| | | |
|-----------------|---|----------|
| आहै भइ र जाओस् | - | देउसी रे |
| आहै बाँच्यौ भने | - | देउसी रे |
| आहै अर्को साल | - | देउसी रे |
| आहै यिनी दिन | - | देउसी रे |
| आहै यिनी मास | - | देउसी रे |
| आहै यै रमी | - | देउसी रे |
| आहै यै दमदमी | - | देउसी रे |
| आहै गरौंला | - | देउसी रे |
| आहै मय्यौं भने | - | देउसी रे |
| आहै सुइन सप्ता | - | देउसी रे |
| आहै भेटौंला | - | देउसी रे |
| आहै देउसी गयो | - | देउसी रे |

स्रोत : पवन ओली

बाँफु खोला-८, सल्यान

४.४.३ भैली गीत

| | | |
|-----------------|---|------|
| लिता सङ्गीयौ हो | - | भैली |
| लिता पर्थम | - | भैली |
| लिता महादेउले | - | भैली |
| लिता रामले | - | भैली |
| लिता लछुमनले | - | भैली |
| लिता सीताले | - | भैली |
| लिता पार्वताले | - | भैली |
| लिता स्था मन्नम | - | भैली |
| लिता यो मन्नभी | - | भैली |
| लिता कैसै राखौं | - | भैली |

| | | | |
|------|---------------|---|------|
| लिता | पैलो बिछे | - | भैली |
| लिता | क्यापो लगाऊँ | - | भैली |
| लिता | वर विपल | - | भैली |
| लिता | पञ्च पल्लव | - | भैली |
| लिता | या कलश | - | भैली |
| लिता | लगाया | - | भैली |
| लिता | यो बिछेको | - | भैली |
| लिता | डाली बस्ने | - | भैली |
| लिता | क्या बनाऔँ | - | भैली |
| लिता | लेकै बस्ने | - | भैली |
| लिता | रङ्गी डाँफ्या | - | भैली |
| लिता | जिउला बस्न्या | - | भैली |
| लिता | सियाल चरी | - | भैली |
| लिता | पियाल चरी | - | भैली |
| लिता | यै बिछेको | - | भैली |
| लिता | छायल बस्न्या | - | भैली |
| लिता | मनवा | - | भैली |
| लिता | क्या गराऔँ | - | भैली |
| लिता | सुन चाँदीको | - | भैली |
| लिता | फलामैको | - | भैली |
| लिता | ठाँटौँ मूर्ति | - | भैली |
| लिता | हदै स्वाउन्या | - | भैली |
| लिता | होला हो | - | भैली |
| लिता | अजमरी | - | भैली |
| लिता | जुगैभरि | - | भैली |

| | | | |
|------|--------------|---|------|
| लिता | होला हो | - | भैली |
| लिता | बोल मनवा | - | भैली |
| लिता | बोलेन | - | भैली |
| लिता | चल मनवा | - | भैली |
| लिता | चलेन | - | भैली |
| लिता | क्या बिस्मात | - | भैली |
| लिता | पन्यो हो | - | भैली |
| लिता | जाउन जोल्या | - | भैली |
| लिता | शिव कोट | - | भैली |
| लिता | शिवजीलाई | - | भैली |
| लिता | सोधन गर | - | भैली |
| लिता | थक्क जोल्या | - | भैली |
| लिता | तिलै सुर | - | भैली |
| लिता | तिलै पाम्मन् | - | भैली |
| लिता | तिलै काट | - | भैली |
| लिता | तिलको ठटेर | - | भैली |
| लिता | आगो बाल | - | भैली |
| लिता | खरानी | - | भैली |
| लिता | साजी | - | भैली |
| लिता | सुनभाल्यैको | - | भैली |
| लिता | अजनबिस्टी | - | भैली |
| लिता | मिसाऊ र | - | भैली |
| लिता | ठाँट मूर्ति | - | भैली |
| लिता | बोलि जाला | - | भैली |
| लिता | चलि जाला | - | भैली |

| | | | |
|------|----------------|---|------|
| लिता | भन्यार | - | भैली |
| लिता | ढाँत्यो मूर्ति | - | भैली |
| लिता | बोल् मनवा | - | भैली |
| लिता | ह ह गन्यो | - | भैली |
| लिता | चल् मनुवा | - | भैली |
| लिता | हु हु गन्यो | - | भैली |
| लिता | महादेउले | - | भैली |
| लिता | मन्यास् भन्ने | - | भैली |
| लिता | सराप दिया | - | भैली |
| लिता | सराप हो | - | भैली |
| लिता | पन्द्रै दिनको | - | भैली |
| लिता | औँसीपुनी | - | भैली |
| लिता | मैना दिनको | - | भैली |
| लिता | सैसक्राँति | - | भैली |
| लिता | बसैँ दिनको | - | भैली |
| लिता | देशमी | - | भैली |
| लिता | दवारो | - | भैली |
| लिता | एकादशी | - | भैली |
| लिता | दुवादशी | - | भैली |
| लिता | तिर्दशी | - | भैली |
| लिता | चर्दशीको | - | भैली |
| लिता | नवौँ दिनमा | - | भैली |
| लिता | कुत्ताको | - | भैली |
| लिता | तियार | - | भैली |
| लिता | औँसीमा | - | भैली |

| | | | |
|------|-------------|---|------|
| लिता | गाइ तियार | - | भैली |
| लिता | बाछीलाई | - | भैली |
| लिता | तिलानीले | - | भैली |
| लिता | पुज्दछन् | - | भैली |
| लिता | बाछीलाई | - | भैली |
| लिता | फुलैमाला | - | भैली |
| लिता | पहियाउँछन् | - | भैली |
| लिता | दवाछाप | - | भैली |
| लिता | खुवाउँछन् | - | भैली |
| लिता | परेवैको | - | भैली |
| लिता | दिनमा | - | भैली |
| लिता | बलदुको | - | भैली |
| लिता | तियार | - | भैली |
| लिता | बलदुलाई | - | भैली |
| लिता | फुलमाला | - | भैली |
| लिता | पहियाउँछन् | - | भैली |
| लिता | दबोपिरो | - | भैली |
| लिता | खुवाउँछन् | - | भैली |
| लिता | बिर्खे पूजा | - | भैली |
| लिता | गर्दछन् | - | भैली |
| लिता | द्वितीयाको | - | भैली |
| लिता | बडो दिनमा | - | भैली |
| लिता | भाइबैनीको | - | भैली |
| लिता | तियार | - | भैली |
| लिता | भाइ हुन्या | - | भैली |

| | | | |
|------|--------------|---|------|
| लिता | बैन्थौलीले | - | भैली |
| लिता | एकै हात | - | भैली |
| लिता | टिकोटालो | - | भैली |
| लिता | एकै हात | - | भैली |
| लिता | फुलुमाला | - | भैली |
| लिता | समाएर | - | भैली |
| लिता | भिन्न खुरखुर | - | भैली |
| लिता | भाइर सुरसुर | - | भैली |
| लिता | गर्छे हो | - | भैली |
| लिता | भाइ नहुने | - | भैली |
| लिता | बैन्थौलीले | - | भैली |
| लिता | दवार कुना | - | भैली |
| लिता | बसेर | - | भैली |
| लिता | छाती फोरी | - | भैली |
| लिता | धरती फोरी | - | भैली |
| लिता | असन धारा | - | भैली |
| लिता | रुन्छे हो | - | भैली |
| लिता | भाइ हुने | - | भैली |
| लिता | बेन्थौलीले | - | भैली |
| लिता | नरोऊ दिदै | - | भैली |
| लिता | तमको भाइ | - | भैली |
| लिता | मेरो भाइ | - | भैली |
| लिता | एकै हुन् | - | भैली |
| लिता | दुई बैनीले | - | भैली |
| लिता | मिलीजुली | - | भैली |

| | | | |
|------|-------------|---|------|
| लिता | टिकोटालो | - | भैली |
| लिता | मेरै भाइलाई | - | भैली |
| लिता | लगाउँला | - | भैली |
| लिता | फुलैमाला | - | भैली |
| लिता | पहिराम्ला | - | भैली |
| लिता | भन्छे हो | - | भैली |
| लिता | रिजाउँछे | - | भैली |
| लिता | बुजाउँछे | - | भैली |
| लिता | हामरो | - | भैली |
| लिता | आसिक दिने | - | भैली |
| लिता | वेला भो | - | भैली |
| लिता | हामरा | - | भैली |
| लिता | आसिकैले | - | भैली |
| लिता | लेक भैसी | - | भैली |
| लिता | गारघट्ट | - | भैली |
| लिता | अजघट्ट | - | भैली |
| लिता | गजघट्ट | - | भैली |
| लिता | होइ र जाओइ | - | भैली |
| लिता | हामरा | - | भैली |
| लिता | आसिकैले | - | भैली |
| लिता | धुरीबाट | - | भैली |
| लिता | कलाउनु | - | भैली |
| लिता | सिक्कैबाट | - | भैली |
| लिता | ओसाउनु | - | भैली |
| लिता | धानी सुन | - | भैली |

| | | | |
|------|-----------------|---|------|
| लिता | जोखु | - | भैली |
| लिता | पाथी रूपया | - | भैली |
| लिता | पोखु | - | भैली |
| लिता | हामरा | - | भैली |
| लिता | आसिकैले | - | भैली |
| लिता | मुदेसैको | - | भैली |
| लिता | काँसो भाँरो | - | भैली |
| लिता | तामो तम्मन | - | भैली |
| लिता | भोटनैको नुन | - | भैली |
| लिता | ऐरापत्या | - | भैली |
| लिता | सुन | - | भैली |
| लिता | यै घरैमा | - | भैली |
| लिता | भरिइ जाओस् | - | भैली |
| लिता | तामो तम्मन | - | भैली |
| लिता | हुन्न खर्कुला | - | भैली |
| लिता | भरिइ जाउन् | - | भैली |
| लिता | असोजैको | - | भैली |
| लिता | मर्दो घाम | - | भैली |
| लिता | जाऊ न छिता | - | भैली |
| लिता | काँक्री ल्याऊ | - | भैली |
| लिता | खाउँला हो | - | भैली |
| लिता | भन्यार | - | भैली |
| लिता | गइन् छिता | - | भैली |
| लिता | काँक्री ल्याइन् | - | भैली |
| लिता | छियामिया | - | भैली |

| | | | |
|------|----------------|---|------|
| लिता | पियालपन्या | - | भैली |
| लिता | लोरीलारी | - | भैली |
| लिता | ल्याइन् हो | - | भैली |
| लिता | महादेउले | - | भैली |
| लिता | थक्क छिता | - | भैली |
| लिता | नास्यो हो | - | भैली |
| लिता | वुरैबाट | - | भैली |
| लिता | मरन्या | - | भैली |
| लिता | वालै मन्या | - | भैली |
| लिता | गर्बै जान्या | - | भैली |
| लिता | भयो हो | - | भैली |
| लिता | भन्यार | - | भैली |
| लिता | असनधारा | - | भैली |
| लिता | रुन लाइगिन् | - | भैली |
| लिता | नरोऊ छिता | - | भैली |
| लिता | भन्यार | - | भैली |
| लिता | रिभायाँ | - | भैली |
| लिता | वुभायाँ | - | भैली |
| लिता | सङ्गी हो | - | भैली |
| लिता | सबै सङ्गी | - | भैली |
| लिता | बाँच्च्यौं भने | - | भैली |
| लिता | आगौं साल | - | भैली |
| लिता | यिनी ताक | - | भैली |
| लिता | यिनी मास | - | भैली |
| लिता | यै रमरमी | - | भैली |
| लिता | यै दमदमी | - | भैली |

| | | | |
|------|-------------|---|------|
| लिता | गरौला | - | भैली |
| लिता | कोई सङ्गी | - | भैली |
| लिता | फाट्यौं भने | - | भैली |
| लिता | सुइना सप्ना | - | भैली |
| लिता | भेटौंला | - | भैली |
| लिता | सङ्गी हो | - | भैली |
| लिता | भैली गयो | - | भैली |
| लिता | हरलै | - | भैली |

स्रोत : बिगाराम डाँगी

कोटमौला-६, सल्यान

४.५ बारमासे गीत

बारमासे गीतहरू विभिन्न प्रकारका छन् । ती निम्नानुसार यहाँ सङ्कलित छन्:

४.५.१ बारमासा गीत

चैतको मास रुख भ्र्यो पात
हरिराम चन्द्र मन छैन साथ

वैशाख मास रुख लाइगो पात
हरिराम चन्द्र मन भइगो साथ

जेठ मास यति छोटो रात
हरिराम चन्द्र छत्तिस रूप

असार मास दहीच्युरा खानु
हरिराम चन्द्र देउतीर्थ जानु

साउन मास पग्लन्छ भिर
हरिराम चन्द्र उत्तम खिर

भदौ मास उर्लिन्छ गङ्गा
हरिराम चन्द्र मन भङ्गो चङ्गा
असोज मास फुलिगो काँस
हरिराम चन्द्र खितिक्क हाँस
कात्तिक मास प्याँल फुल्यो धान
हरिराम चन्द्र चाडपर्व मान
मङ्सिर र पुस यति लामा रात
हरिराम चन्द्र बिस्तरा साथ
माघ र फागुन दिन रातसम्म
हरिराम चन्द्र एक वर्ष टम्म

स्रोत : रमेश डाँगी र भूपलाल थापा
कोटमौला-६, सल्यान

४.५.२ घाउटा गीत

लैजा जोगी क्या ओछ्याउलाई चितलैको छाला
यता नआ काला कौवा कालो सरिजाला
दुई हात चाँदीका बाला सिरान टल्किन्छन्
यता नआ भल्लाउरीए गाइभैसी जल्किन्छन्
कालो हुन्छ कस्मिराए राजैले लगाउने
सेतो हुन्छ हिउँचुलीए बैतले बगाउने
दिन बुरी डारैमा गइग्या सल्ली टुप्पा घाम छन्
मेरा दिन यसै गइग्या साइलाई राजा राम छन्

स्रोत : चन्द्र बहादुर न्यौपाने
दार्माकोट-१, सल्यान

४.५.३ ढाकाडम २ को ठारी भाका

आयो जुम्ली बस्यो बार पानी काँ खानेइ हो
हार मंस मट्टीमा भिज्यो माया काँ जानेइ हो ।

एक ता स्वाउन्या आँटीघर भन्न् स्वाउने अर्गल
रसी माया बसी लाउँला भेट भयो भर्कल

जुम्ला जाँच्यो जुमलीले लेक जाँच्यो बर्मले
छेउती बसी रसु खान दिनैन कर्मले

बत्तिसै पगरी बान्यो जाजरकोटी भाउले
म माया गलीमा लाउँला साईले काँमा लाउले

दुधभन्दा कुराउँनी मिठो भैँसी बगालेइको
क्या कर्म ल्याइछु मैले पानी पखालेइको

सिस्न्या पोत अस्मतिलाई लाउनेको सिब ती
अभैँ मलाई पन्या हुन् कि भन्न् ठुला विपत्ती

माछाले मितेरी लायो खोलीका म्याउसीति
बिना भाइकी बैनी रुन्छिन् दुवारे औँसीति

स्रोत : दिपेन्द्र कुमार चन्द्र र खिमादेवी चन्द्र

ढाकाडम-२, सल्यान

४.५.४ ढाकाडम ४ को ठारी भाका

भैँसीले दमारै काट्यो गुवालो बबईछ
किन रुन्छै जल्यो मन म जस्तो सबई छ

कर्णाली घुमाउरो पच्यो लौरी बगाउँदैन
बैरागी भइगो ज्यान बसी अगाउँदैन

रुख ढल्या तिन वर्ष भइगो पात कति हरियो
जिउली भन्त्या धान पाकेन तिसर्ना मरियो ।

एक तोला सुन छ भनी पेटारी खोदल्लु
आइज काल लैजा मलाई यो चोला बदल्लु

ह्याँबाट देखिन्या रैछ ढुङ्गा घरको पाली
बारीमा हजारी फुल टिप्छु यस पालि

मङ्सिरे पुनीमा लाग्छ सेवाघाटको मेला
मुसुक्क हाँसिदेऊ तोला भेट भएकी वेला

ठुलो मेला कुमाखैको सत्तर डिग्रेइको
सित्ती फिक्री छैन मलाई करिमा बिग्रेइको

स्रोत : राम बहादुर खड्का

ढाकाडम-४, सल्यान

४.५.५ लेखपोखराको ठारी भाका

बाघैले बाखरी माच्यो अइरीका रुखैती
यिनी कुरा कँइ नगर्नु, बैरीका मुखैती

उभो जाने दुई, जुमली उदो जाने भेरी
सित्ती मन रुँदैन मेरो सम्झी ल्याउँदा खेरी

कोदो पिस्ने कोदे जातो मकै पिस्ने च्याउकी
कित साइले वचन देउन कि म अकै ल्याउकी

जुनखोलीको चिसो पानी उहि खोलीको घाँस
बाल्य कालमै हुन्या भयो जोवानको नाँस

उठीवास लायो मलाई अहिलेको सालैले
कित खायो प्रदेशैले कि खायो कालैले

कति गर्नु लेक बेसी यो मन रुन्छ धर्क
उडी जान्या मालचरीय कैले आउला फर्कि,

उत्तर मन्दिर बाह्रकुने दक्षिण धारापानी
हेदैमा मोहनी लाउन्या काँकी रैछौ नानी

दाङ, सल्यान, रोल्पा रुकुम प्युठान जाजरकोट
आउँछ, भल्को टर्छ, माया सयौं हजार चोट

स्रोत : कमल वली लेखपोखरा

हाल : कोर्वाङ भिम्पे-४, सल्यान

४.५.६ बनगारी कुरकुटी गीत

भैंसो मेरो कलोटेको राँगो नर्थमैको
सुभ्या भयाई चौख्या थली पैला पर्थमैको

दार्माकोट दसैंघर घुमाइ लाइदेऊ बान्न
पसिग्याँ फुलबारीभिन्न रसु नखाई जान्न

सालको रुख चिप्लो हुन्छ काट् गुवाली पाइती
थरको छोरो पापी हुन्छ धरम गरेइ माइती

दुई जना नेपाली सिपाई बम्मैबाट आउन्या
उस्तैका त म नजान्या भनेइको नपाउन्या

स्रोत : नर बहादुर नेपाली

दार्माकोट-१, सल्यान

४.५.७ दार्माकोटको ख्याली गीत

यसु लेक परिबाट तिनै तले पोखरी
हुईबाट उबाजियो काली नैकेनी
काली नैकेनी हो काली नैकेनी
हुईबाट उबाजियो काली नैकेनी

खान लाइगई नैकेनी लैजाउ बालालाई
कोही छौ कि आफ्ना लैजाऊ बालालाई
लैजाऊ बालालाई हो लैजाऊ बालालाई
कोही छौ कि आफ्ना लैजाऊ बालालाई

यसु लेक परिबाट आयो चरी मैना
सुन्तलाको डालीमा बस्यो मैना

स्रोत : नरबहादुर नेपाली

दार्माकोट-१, सल्यान

४.५.८ कोटमौलाको ख्याली गीत

भाल्या गाईको माल्या बाछो उँदै खोला गइगो
हाँसीकिन लायाउ माया धौ बिर्सनु भइगो

गुवालाले भैंसी लैगो निगालपानी भिरमा
कताबाट याउनुभयो रङ्गी रुमाल शिरमा

क्या चरीले खोरै लायो पानी पनेओइति
वासनाले मै आइगयाँ जिरा धनेओइति

खोला खेत होइजान्छ भन्या कुलो ल्याऊ बवैको
दिल बस्याको एउटै हुन्छ मन बुजाऊ सबैको

घाटपारि पिपलुको घाट वारि छाया
जस्तै साईलाई पानी तिर्खा उस्तै मलाई माया

ढुङ्डेई खाँमो ढुङ्डेई बलो ढुङ्डेको दरबार
माथैमा खाउला माथै लाउँला हन्देउ साई घरबार

स्रोत : शेर बहादुर डाँगी र टेक बहादुर डाँगी
कोटमौला-६, सल्यान

४.५.९ ख्याली भुमरा

सरस्वती सरस्वती शरणमा पच्याँ म त तमरा
नवौँ र देवी
पूर्वै बानौ, पच्छिम बाँनौ, चवै दिशा बानौला हो
चवै दिशा बनौला

बानौला बानौला १६ सय गोपिनीलाई मानौला ।

बानौला हो बानौला नरसिंहको जापैले बानौला
वारी जमुना पारि जमुना माँझै सरोवर देवियाको थान

हरहर धरती मातै देवी जुवारन जाम्
हुई होला मालु हुई होला सालु हुई होला मौरीको घर
आमै दुध दसै धारा हो काँसी गइन लाउला पार

काजीका बोकालाई खाजी भुटाइ देऊ कुरु कुरु खान लाइगो
चाँडो देऊ बिदा देऊ माइती राजै बाला जोबान जान लाइगो ।

स्रोत : जगत प्रसाद जैशी र विष्णु जैसी
दमाचौर-४, सल्यान

४.५.१० ख्याली (चुड्का)

सानो सानो खोलीमा पानी तुरुक्कै
सम्भ्यौली बाला साई रोउली धुरुक्कै

सानो सानो खोलीमा जौंको पिसान
बान भाइ पगरी ढल्क्यो निसान

राजा सवारी भई घोरी ल्यायो टाँगन
उठि जाऊ चेली बराली जाऊ आँगन

राग्यापाट्या कामली पटरङ्ग्या गुदरी
राग्यापाट्या कामली पटरङ्ग्या गुदरी हो
त्रिपासा खरर

आफू राजा नेपालैमा थरर
आफू राजा नेपालैमा हो बुनीयालाई थरर

स्रोत : जगत प्रसाद जैसी र विष्णुप्रसाद जैसी
दमाचौर-४, सल्यान

४.५.११ टप्पा (शिवरथ)

यो बाँसुली काँको ल्यायौ गरीज्युला वनको
काँ बास्या मोरली चरी ज्युली फुक्यो रन्को

एक त चोला चारै दिनको केई भएन मनको
धेर भइगो वैरीको हासो अब होइजा थन्को

दाडको घारी दमारैमा लिंगीलैच्या साल
एक मच्या पछुतो हुन्छ लैजा दुईलाई काल

कोई लाउछिन मिसरी टिको कोइ घुमाउँछन् जाल
भैसी उठी चर्न गइगो रिचै घुन्छ ताल

आज राती सपनीमा शिरखोलो तरेर
तोला रैछौ विभरैकी मै भर परेर

डोकी बुन्देऊ माइला दाजु हरियो बाँसेको
माया लाग्या आइ अजानु निउ पारी घाँसेको

लाग्या भाइको सुराल भोटी कोको कस्मेरा
साई आउने बाटीपाइ हेर्छु दिनको दस फेरा

अरू लुगा सन्दुसैमा पदुका खाटैमा
माया लाग्या साई आइजानु घर मेरो बाटैमा

भाल्या बास्यो दमारैमा कुकुर भुक्यो गाउँमा
क्या चिठी पठाइतेउ साईले छैन मेरो नाउँमा

स्रोत : भक्त बहादुर ओली

शिवरथ-४, सल्यान

४.५.१२ टप्पा (कोटमौलाको सुन्तला)

केटा: कोटमौलाको सुन्तला क्या मिठो रसिलो
मान्छे राम्रो बोली बचन ज्यान राम्रो कसिलो

केटी: मुसिकोटको पानी मिठो रुकुम सिस्ने हिमाल
हिमाल पहाड तराईले भनै राम्रो नेपाल

केटा: माल्नेटा अदुवा राम्रो सल्यान सल्लेरी पाखैले
हिमाल पहाड तराईले भनै राम्रो नेपाल

केटी: रुकुम राम्रो डाँरा काँरा पोखरी र तालले
यसरी नै जीवनभरि बेर माया जालले

केटा: पूर्व पश्चिम उत्तर दक्खिन सीमा मेचीकाली
सगरमाथा गौरव हाम्रो वीर नेपाली

केटी: राष्ट्र राम्रो राजनीतिले शान्ति र शिक्षाले
हाम्रो त देश विग्रिसक्यो आआफ्नो इच्छाले

स्रोत: रमेश डाँगी (कलाकार)

कोटमौला-६, सल्यान

४.५.१३ टप्पा (बाजेको पालामा)

हजुर बाउको पछि पछि भैंसी गोठ जान्थे, बन मान्छेले छेउबारीका
मकै चोरी खान्थे, हाम्रा पुर्खा बाँदर भनी आज थाहा पाए
तिनै कुरा समेटेर मैले यो गीत गाएँ, 'हजुर...

बाजेको पालामा घ्यु बेचेर नुन किन्नलाई
चौबिस दिन लाग्यो रे नेपालगन्ज हाट हिन्नलाई
हाम्रो त पालामा घर घरमा मोटर आउने
रिमिक्स, पप चाहियो र टप्पा अब कसले गाउने ।

बाजेको पालामा हजुर आमा ढिकी कुट्थिन्
चुल्हो चौको गर्नलाई चारै बजे राती उठ्थिन्
हाम्रो त पालामा ब्युटीपार्लर डिस्को धाउने
जिनको पाइन्ट चाहियो रे गुन्यु चोली कसले लाउने

बाजेको पालामा, बार भैंसी गोठमा पाल्थे
बिहानै उठेर घाँस काट्थे गोबर फाल्थे
हाम्रो त पालामा पढ्छु भन्दै क्याम्पस धाउने
मोजमस्ती चाहियो र खेतीपाती कसले लाउने

स्रोत : रमेश डाँगी (कलाकार)

कोटमौला-६, सल्यान

४.५.१४ टप्पा (बाफुखोला)

गुवालाले भैंसी लैगो बुराँसैका किला
यो वेलामा मनको छैन कर्म हो कि लीला

खाली भया आहाल बस्दो हो भैंसी घाम खर्केइको
आफ्नो छैन मन बुझाउँछु हेरर अर्केको

कुदुमा कुदाउन लाइग्या जाजरकोटी घोरा
माइत छैनन् आमाबुबा घर छैनन् जोरा

हली त जरमेइको छैन अर्नी गइगो खेत
कानै माथि जुवालीए बल्ल गाईका पेट

कालु गाईको रचिने बल्ल म कैले बान्दिन
सम्भ्या त रुनेसै मान्छु बिसर्या केई मान्दिन

भोटेले बिसुनै हाल्यो लालै र पाखीमा
खान देऊ अलैची दान मर्न देउ काखीमा

स्रोत : ध्रुवराज धिताल र ताराकुमारी भण्डारी

दमाचौर दहगाउँ-३, सल्यान

४.५.१५ भूयाउरे गीत (तलमाथि)

केटा: धेरैपछि गाउँ फर्कि आयाँ-उही मनकी मायालाई भेटायाँ
(तलमाथि दायाँ र बायाँ (छम छम छम छम नाचिदेऊ निर्मायाँ)

केटी: छाया थियो घाम लाग्यो घमाइलो-रोदीघरमा गरौ त रमाइलो
(तलमाथि दायाँ र बायाँ (छम छम छम छम नाचिदेऊ निर्मायाँ)

केटा: कुमाखैको मेलामा भेटेको - बिस्रियाँ कि तिस्रना मेटेको
तलमाथि दायाँ र बायाँ (छम छम छम छम नाचिदेऊ निर्माया)

केटी: गाई चराउँथ्यौ त्यो रानी बनमा - बिस्रियाँ छैन भुभुल्को छ मनमा
तलमाथि दायाँ र बायाँ (छम छम छम छम नाचिदेऊ निर्माया)

स्रोत : रमेश डाँगी (कलाकार)

कोटमौला-६, सल्यान

४.५.१६ भूयाउरे गीत (माया जाने)

केटा: दसैं आयो तिहार आयो म नि फर्कि आयाँ
उही मनकी मायालुलाई काठमाडौँमा पायाँ
हो हो माया जाने रुकुमको मुसिकोट (म जाँदै छु सल्यानको कपुरकोट)

केटी: परदेश गयौँ धन कमाउन फर्कि आयौँ गाउँमा
मिलन पर्खि बाँचिराछु माया तिम्रै गाउँमा ।
हो हो माया जाने रुकुमको मुसिकोट (म जाँदै छु सल्यानको कपुरकोट)

केटा: प्यारो लाग्छ रापतीको पाँचै ओटा औँला ।
रुकुम, रोल्या, सल्यान, प्युठान दाड सबै घुमौँला ।
हो हो माया जाने रुकुमको मुसिकोट (म जाँदै छु सल्यानको कपुरकोट)

केटी: मालनेटाको अदुवालाई पारे बन्छ सुठो
फुल जस्तो जोवन चोखो छकी जुठो
हो हो माया जाने रुकुमको मुसिकोट (म जाँदै छु सल्यानको कपुरकोट)

स्रोत : रमेश डाँगी (कलाकार)

कोटमौला-६, सल्यान

४.५.१७ भूयाउरे गीत (सँगै बसेर शारदाको किनार)

सँगै बसेर सारदाको किनार
सिन्दुरले रङ्गाइदिउँला तिम्रो निधार
असारको मैना रोपेको धान कुन मैना पसाउछ
एकपल्ट आउँछ अल्लारे वैश दुनियाँ हसाउँछ
सँगै बसेर सारदाको किनार
सिन्दुरले रङ्गाइदिउँला तिम्रो निधार
मसिर मैना दङ्गाली फाँटमा धान भुल्यो लुरु
मायालु तिमलाई संभेर ल्याउँदा मन रुन्छ धुरु
सँगै बसेर सारदाको किनार
सिन्दुरले रङ्गाइदिउँला तिम्रो निधार
सिरीमा तिरी बतासै चल्यो सल्यानी पाखामा
सल्यानी नानी गाउँदै छिन गीत सुरिलो भाकामा
सँगै बसेर सारदाको किनार
सिन्दुरले रङ्गाइदिउँला तिम्रो निधार
डाँडाको पारी डाँडाको वारी पाकिगो खजुर
बालकै दिनमा लाएको माया नबिर्सै हजुर

संगै बसेर सारदाको किनार
सिन्दुरले रङ्गाइदिउंला तिम्रो निधार

स्रोत : डा. कृष्णराज डि.सी.

थारमारे-५, लहस्तम

हाल: घोराहि, दाङ

४.५.१८ चारगाउँले भाका

सुल्या सापी घरै रङ्गो ककर मलुक्याउने स्यानीमालै
किन हो पानैको फूल मलाई हलुक्याउने स्यानीमालै
सात समुन्द्र तरी आइग्या बबई तरिनै छ स्यानीमालै
जोर साईले मनैको घरबार एक दिन मरिनैछ स्यानीमालै
दार ढुङ्गा बिसौरी पच्यो टिम्मुरे बिषैले स्यानीमालै
नयाँ माया लगाइदिन्छु पुरानो रिसैले स्यानीमालै
पानी पच्यो जोतामारे घाम लाग्यो तारिके स्यानीमालै
बल्ल ल्याउनु सोइला भाँच्ने जोई ल्याउनु जारीके स्यानीमालै

स्रोत: तुल्सीराम भण्डारी

लेखपोखरा-८, सल्यान

४.५.१९ मायै गीत

मायै जा बैनै जुमला पोइल, पोइल मायै
बाटो सरासरी । सरी मायै जातैले साई ठुला
हौला मायै माया बराबरी

मारै तालको माछी तालमै रहनदेउ, रहन्देउ मायै
पाखा ल्याया कुन्छ, कुन्छ मायै घनले हान्या
पहर फुट्छ फुट्छ मायै मनले आट्या हुन्छ ।

स्रोत : नरबहादुर नेपाली

दार्माकोट-१, सल्यान

४.५.२० मैतालु गीत

दिन हेदैँउ जैसी बाजेई आमा बुबा माया लाइगो
म जान्छु माईतीको देश

तिमरा दिन निकामा छैनन नजाउ नाना माइतीको देश

घाटका घटाला दाजु उतारदेउन पार

म त जान्छु माइतीको देश

आमाको मायाँ लाग्यो बुबाको माया लाग्यो

उतारदेउन पार

सगरु गुरकीयो बादलु आइगो

पानी बर्सिन लाइगो भट्टै मलाई

उतारदेउन पार

आइगो मेरो स्वामी राजा पछाडिबाट

भट्टै मलाई घटाला दाजु

उतारदेउन पार

स्रोत : कर्के सुनार

दार्माकोट-२, सल्यान

४.५.२१ साँझलैजी भाका

साइलैजी आज भैंसो को बन लयो गुवालो अरैले मालै
साइलैजी मनको प्यास मेटिँदैने लेक लैजा पैरैले मालै
साइलैजी क्या चरीले खोरै लायो लेक हुइती हुइती मालै
साइलैजी कि भेटु बारमासै होइजा न हो कइती कइती मालै
साइलैजी गोइली धानको केस कलाउने सुनैको थगरा मालै
साइलैजी अरू बोली राम रसी म बोली भगरा मालै
साइलैजी कैलास्याए वेलास्याए रुखैमाथि रुख मालै
साइलैजी जोवान गइगयो र होकी कोई हेदैनेन् मुख, मालै
साइलैजी सुल्पा सापी घरै रइगो ककर मलुक्याउने मालै
साइलैजी यो देशको के चाला हो मलाई हुलुक्याउने मालै
साइलैजी हातभरी प्युठानी चुरा बाउली भरी चुरा मालै
साइलैजी मन मेरो उराउन लाईगो खोल विलरी कुरा मालै

स्रोत : खली खड्का र रागवीर खड्का

ढाकाडम ४, सल्यान

४.५.२२ स्यानीमाया गीत

कोरीबाटी साई चुलटी हा हा तेल भिज्यो सिउँदैमा स्यानीमाया
मरी जाँदा के लगनु छ हा हा भेट राम्रो जिउँदैमा स्यानीमाया
सुन्तला चुकिलो भयो हा हा लेउ वेलौती खान्छु स्यानीमाया
रुमाल देउ र माया बान्छु हा हा बिदा देउ र जान्छु स्यानीमाया

सगर लाग्यो गरकीन हा हा पानी लाग्यो चुन स्यानीमाया
जोवान लाग्यो लसकीन हा हा मन् त लाग्यो रुन स्यानीमाया
कैले तल कैल माथि हा हा चर्खे पिडको पिर्का स्यानीमाया
पानी खाई मेटिँदैन हा हा मायाजालको तिर्खा स्यानीमाया
सल्यानैका वरीपरि हा हा सल्लाघारी बन छ स्यानीमाया
तोलासँग माया लाउन्या हा हा मेरो पनि मन्छ स्यानीमाया
सल्यानैको सितलपाटी हा हा घोरी दौरायको स्यानीमाया
जुन फूल मैले लाउन्या भन्थे हा हा उही फूल बौरायको स्यानीमाया

स्रोत : पवन ओली

बाफुखोला-८, लेख, सल्यान

४.५.२३ लामो भाका

तल्लो घरई बइ मरीगिन भट्ट बुकाई-बुकाई
घरबारेले कक्कर दिन्छिन् पोइती लुकाई-लुकाई
सानो खोला साहुको छोरो कानैमा कुन्नल
तोला जस्ती कोई देखिन यो मृत्यु मन्नल
सुन मेरै हो माल मेरै हो नथिया जिएको
अभै साईले चाल पाउँदिनौ परानी दिएको
डोकी बुन्देउ माइला दाईले कलिला बाँसैको
माया लागे जीउली भर्नु निड पारी घाँसैको
भैसी ग्वाला जेठा दाजु भाइ कैले खुने हो
जेलै देख्छु माइतै तोला घर कैले हुने हो

गाउँ लैजाउ एक्ला लेक खाउँला
टाढै बस घरबारे टाढै नजर लाउँला
पाकेइको फल खाउँला भनि रुख चढ्यो गुनु
आउ तोला काखीमा बस वर्ष दिनको हुनु
मासु मिठो मसलैले चना मिठो घिउले
को दिनमा मर्नु पर्छ चाल पाउँदैन जीउँले
धान बालो लतारी लैगो भोट्या सरापैले
जात भन्दैन भात भन्दैन माया खराबैले

स्रोत : हिम बहादुर चन्द

ढाकाडम-२, सल्यान

४.५.२४ सिँडारु गीत

सिँडारु खुल्दैन थानैको फरिया नभै
मन सित्ति डुल्दैन कर्मको विचार नभै
मन सित्ति हुँदैन
टोपीको मयल धोया पनि जाने छैन
टोपीको मयल आज भेट भै भै कन
भोलिको गयल
जुम्ला खेत हुँदैन जुम्ली प्युठान गइगो
जुम्ला खेत हुँदैन भेट गरीजा बाली साई ए
फेरी भेट हुँदैन
भक्त्यो र बर्बरी बाटैलीको हारे काफल
भक्त्योर बर्बरी साईले माया मान्दिनौ की

मेरै हो खर्खरी

ठेला गम्भिरए टुपा काटी मालु लरी
ठेला गम्भिरए सम्भ्रयाती रुनेस लाग्छ
साईका उम्मेरए

छ मैना जलन्या कैलाशको आदि दमार
छ मैना जलन्या दन्त साईको काँकरबीया
रूपसाईको बलन्या

धोइदिने कोइ छैन धोती मैले टोपी मैले
धोइदिने कोइ छैन वैरागी मरेको दिन
रोइदिन्या कोइ छैन ।

पिपलको छायाले धान बालो हरियो भइगो
पिपलको छायाले काँ आई भन्ने मर्जि होला
म आइगे मायाले

सुन काउलीको घर मौरी भन्कन लाइगो
सनकाउलीको घर फूल भया बारमासै फूल्दाउँ
जोवान एकै बार

बगाल्या बटैए मसुरीको छायाल बस्यो
बगाल्या कठै ए जुम्ला सुन छ ह्याँ मन रुन्छ
क्या गरु कठै ए ।

तिरति तिन्या धारी पहरू रसाउन्या पानी
तिरतिन्या घारी मलाई छोड्न मन थिएन ।
साइले मायाँ मारी

हलो त हलै हो लिंग लिंगे सादनैको
हलो त हलै हो मनको माया छैन भने
घरबार बलै हो ।

स्रोत : विगाराम डाँगी र शेर बहादुर डाँगी
कोटमौला-६, सल्यान

४.५.२५ लामसुरे मालै

क्या चरीले खोरै लायो लेक हुइती हुईती मालै
कि भेटु बारमासै होइजा नहो कइती मालै
होर लै लै आउला कैलै नहो कइती कइती मालै
सुन भन्यार गाँठी पाय्यां फूकाएर पितल मालै
आइजौ रङ्गी बसिरहौला हि छ गहिलो सितल मालै
होर लै लै आउला कैलै हि छ गहिलो सितल मालै
चरीले क्या भनि खायो खोलीको बालुवा मालै
मलाई पनि ओराई लैजा ओराउने सालुवा मालै
होर लै लै आउला कैलै ओराउने मालुवा मालै
बाटैतीको तलेघर मल माटी लेस्तै छु मालै
साई रैछौ बैरागी मन्की म पनि त्यस्तै छु मालै
होर लैलै आउला कैलै म पनि त्यस्तै छु मालै

स्रोत : फौद बहादुर डाँगी र टेक बहादुर डाँगी
कोटमौला-६, सल्यान

४.५.२६ सोरठी (समेरने, लामी चरण, भ्रमरा, दान, आसिक)

बाहिरी समेरने :

काँशीकेरे विश्वेश्वर सबै लिउला हामरे हाई
काशीकेरे विश्वेश्वर गुरुरक्षा हामरे हाई

भित्री समेरने :

पूर्व ए समेरम् पश्चिम ए समेरम, उत्तर ए समेरम
दक्षिण ए रामेरम, आकाश पाताल चारदिशा समेरम

उघार्ने :

सुनकी सिँगार रूपकी दरबार उघारौंला उघारौंला

लामी चरण :

हाहा र मिरमली जुहुगैमा सुन्य थियो
ब्रह्म र विष्णुले महइया जमाए
उहि र पछि सुमेरु पर्वतैको महैया बनाए
नाहागैको नैतीया बनाए ।

छोटी चरण :

कंशः हा कालीमा नाग मारीमा ल्यायौ हेर रामै रमिता
बैठो भानिजै तिमी सुन गेरी मेचियामा बैठो भानिजै

कृष्णः स्वाइन मामै मत सुन गेरी मेचियामा
स्वाइन मामै

कंशः बैठो भानिजै तिमी राग्या पाट्या कमलीमा
बैठो भानिजै

कृष्णः स्वाइन मामै मत राग्या पाट्या कमलीमा
स्वाइन मामै

कंशः बैठो भानिजै तिमी चिटनङ्ग्या गुँदरीमा
पैठो भानिजै

कृष्णः स्वाइन मामै म त चिटनङ्ग्या गुँदरीमा
स्वाइन मामै

भ्रमरा :

शिर देखी पाउ सम्मको वर्णन (यशोदाको)

शिरै सुहायो शिरै सिन्दुर काखी पेटीया

शिरै सुहायो शिरै चोलीया काखी पेटीया

शिरै सुहायो शिरै कुन्नली काखी पेटीया

शिरै सुहायो शिरै तिलहरी काखी पेटीया

शिरै सुहायो शिरै चन्द्रमा काखी पेटीया

गली सुहायो गली पोतीया काखी मेटीया

पाओई सुहायो पाओई पाउजु काखी पेटीया ।

दान माग्ने :

पूर्व दिशाको आयोनी जोगीया बैठौँ आगनीमा

बैठला

पश्चिमै दिशाको आयोनी जोगीया बैठौँ आगनीमा

बैठला

उत्तरै दिशाको आयोनी जोगीया बैठौँ आगनीमा

बैठला

दक्षिणै दिशाको आयोनी जोगीया बैठौँ आगनीमा

बैठला

जागोमा जागो सुन्दरी तिरीया तमरे नगरी
जोगी मागौला दान

आशिष दिने :

हे सधै तिमी देओइनौ सधैं हामी मागोइनौ
भरीपूर्ण होइजाला ।

(धेरै चोटी गाएर समापन गर्ने)

स्रोत : टेकम प्रसाद अधिकारी, रेशम प्रसाद अधिकारी

ज्ञान बहादुर ओली र अन्य

पिपलनेटा-७, सल्यान

४.५.२७ सोरठी (कृष्ण चरित्र)

हा हो महिर मारु रावन्ने है राजै तलाई हारे महिरमारु

हाहे रामैको रूप लिई राखनेलाई महारुवा महिरमारु

हा हो वासोदेव दुधेन पेवा

हा हे वासोदेव राजा है मथुरैमा धियान

हा हो वासुदेव उथेन पेवा

हा रे वासुदेव राजा हो गोकुलैमा धियान

हा हो वासुदेव उथेन पेवा

हा होरी उथाया हाई जावो कडसै मारैला

हे हो जमुकेसे सिता रौयला हिर्दयामा लागौला

लैजाउ हो रे बाल कृष्ण भरे परे फुलुवा

हा हो री हो नगेनी हाई फूल रोजना आएउर

हा हा हारे छिया र मिया कृष्ण हो चलिया हारे हा

हारे छिया र मिया हा

हारे विना र निउतो कृष्ण हो चलिया हारे विना र निउतो
हा हारे फुजैला फुजैला निमुलैला रुकुमेनी हारे फुजैला
हारे विना र निउतो कृष्ण हो चलिया ।

स्रोत : बल बहादुर डाँगी
धारमारे-५, सल्यान

४.६ संस्कार गीत

४.६.१ तन्तर-मन्तर

४.६.१.१ विरा जप्याँ मन्तर

विरा जाने

यिनी पाती शिर माथि
यिनी पाती कुम माथि
यिनी पाती दायाँ राख्ने
यिनी पाती बायाँ राख्ने
यिनी पाती छाती राखौँ
यिनी पाती हनुमान वकिल वीर
यिनी पाती शिर राखौँ
यिनी पाती लड्का राखौँ
यिनी पाती कुम राखौँ
यिनी पाती कर्ण वीर
यिनी पाती दायाँ राखौँ
यिनी पाती धौल्या वीर
यिनी पाती बायाँ राखौँ छड्के वीर
यिनी पाती पैतला राखौँ साधन वीर

स्रोत : प्यारु ओली धामी
कोटमौला-६, सल्यान

४.६.१.२ रायो ससु जप्याँ मन्तर

जोगी कन्जुरा मन्जरा लटुधारी

फिलिमधारी कानचिरुवा

तिमी जोगी आया

दुवा दोबाटामा

दुवा चौबाटामा

काला घोरा

कालै कैँजा

कालै नाँक

कालै दाँत

कालै जाँड जाड

कालै आड

कालै कलिजा

कालै मुटु

कालै फोक्सा

कालै आन्द्रा

कालै जाँड

कालै पाउँ

कालै पुच्छर

तिमी जोगी

आयौ जोगी

कालै आड

कालै कलिजा

कालै मुटु

कालै फोक्सा

कालै जाड
कालै पाउं
कालै पुच्छर
तिमी जोगी
आयौ जोगी
हान्ने सल्ला
फल्या बक्र
गयो जोगी
चाए नेटी
उत्तर गंगा
माछ्या मुल
सम्भयो दुङ्गा
बिसर्यो पानी
आयौ जोगी
सलाभल
चुवा चन्द्रन
दारा ल्यायौ
यशु गृह
आगनीमा
धुनी लगायौ
अलग जगायौ
खोला भूत
जमायौजोगी
सुइयो गाड्ने
मुलको देउराली

जलको सेरम
डाँराको डङ्की
धानको बर्म

कुनाको पितर
गेलको भाँक्री
जमायो जोगी
तिमी जोगी
गयौ जोगी
पूर्व दिशा
पश्चिम दिशा
उत्तर खण्ड
काला लेक
उज्यालो देउ
दक्षिण दिशा
माहै कालिका
राङगाविजुलबाँड
अर्ना राङ्गा
माहैदेवी
चौपन्न कोठी
चौध भवानी
जमाए जोगीले
पश्चिम दिशा
रानी सागर
मोरे घाटमा
गोरु रिङ्गाउने
धागो बान्ने

पिपल मौजा
रानी सागर
उर्ध्व धुवाल
बन्द कोइली
राजा मसान
आलो मसान
वासी स्याउरे
क्रिया पुत्ली
घुम्घो हाल्ले
पानी ढोल्ने
थाङ्ना पोल्ने
बन्दे पोल्ने
भ्यालो हाल्ले
धुप्याउरो नाँप्ने
काट्टो फाल्ले
जुठो बार्ने
तेह्र दिनको
जुठो फाल्यो
वर्ष दिनको
बरखी बाच्यो

स्रोत : तेज बहादुर चन्द्र (धामी)

कोटमौला-७, सल्यान

४.६.१.३ पेट ढाच्याउ मन्तर

काँशैको लुव फलामैको धुवा

भस्ण पारौं हार पस्या हार सोरी ल्याउला
कान पस्या कान सोरी ल्याउला
काँसको लुव फलामैको धुवा
पटक्क फुटिजा
हार पस्या हार सोरी ल्याउला
कान पस्या कान सोरी ल्याउला
आन्द्रा पस्या आन्द्रा सोरी ल्याउला
मुटु पस्या मुटु सोरी ल्याउला
पटक्कै फुटिजा
फु-मन्तरकी बाँचा

स्रोत : जीवन बस्नेत

बाँफूखोला-९, पातिहाल्न, सल्यान

४.६.१.४ जल्याउ निको पान्या मन्तर

सुनकै चुली रूपकी आई
कालु कैली सेती गाई पानी खान आइ
राती गाई पानी खान गई
सुनकै चुली रूपकी आई
मैले फुक्याउ निको होइजाई
फूकी-फाकी भस्मै पारु
सात तली वाचा

स्रोत : खड्क के.सी.

बाँफूखोला-८, सल्यान

४.६.१.५ बारानी बाद्याउ मन्त्र

जुगौ-जुग भएस
घरकी रमनी बचाएस
कुलच्छिन भरी बाहिर जाओस्
लक्षण भरी भित्र आओस्

स्रोत : लिले कामी

कोटवारा-९, सल्यान

४.६.१.७ मान्म रचाएको प्रसङ्गमा खेती

हे मान्म कसै रचे हो, सत्य र माभो मान्म
मान्म कोले रच्यो, जेठो र सत्य जुग
माइलो र हत्ते जुग, कान्छो र कली जुग
मान्म रच्दाखेरी, गुरु र महादेउले
जिमी र मा सजाउँदा, भुमिरमा सजाउँदा
गुरु र महादेउको, जोर हस्ते लाग्यो
शिवर हत्ते लाग्दा, मान्ममा सजाउदा
गुरु र महादेउको, नाङ्गो र छाती थ्यो बाल
भोको र पेटथ्यो बाल, जेठ र माभो मैना
खडेरी हिमाल धुप, भोको र मा भोकाइगो
पानीमा र तिर्खाथ्यो, मान्ममा सजाउँदा
मान्ममा रचाउँदा, नवौ र जुन थ्योबाल
नवो र जुन थ्यो बाल, नवो र वेला थे प
जिमी र बाङ्गो भङ्गो, भुमि र बाङ्गो छ व
धिमी र थल थल भयो, भुमि र थलथल भयो
ढुङ्गो र जल्ल लाईगो, माँटो र बल्ल लाइगो
चरी र चल्लो छैन, रुख र वृक्ष भैना

सत्य र मान्नम माथि, मान्नममा रचाउँदा
सत्य र मान्नम माथि, राम काली पुन
राम र भकली पुनले, मान्नम रचाउन्या भो
मान्नम सजाउँछ पो, राम र भकाली पुन बाल
रामभकाली पुनेनी, जाउ मेरा पुनयौ
मान्नममा सजाम्ला, मान्नममा रचाम्ला
मेरा र माभा पुनौ, जा मेरा पुन ए
सुन र मा गुलेली, रूपरमा मटेङ्ग्री
तल्लो र माभो मान्नम, सुन र मा गुलेली
रूप र मटेङ्ग्रीले, आरुर माभो डाली
तामेर ढुक्कुर छन् व, तामेर माभो बाजा
ढुक्कुर माभो बाजा, जाउ माभा पुनले
दाब्रे र माको घुडो, पातालैमा धस्यो
सुन र गुलेलीले, रूप र मटेङ्ग्रीले
तानेर बाजा हान्यो, जिमीरमा खसायो
सिड र खुर गच्यो, पूर्व र पश्चिम हेच्यो
उत्तर दक्षिण हेच्यो, माधुर तान्या बाजा
गाजुरमा हालेछु, गाजिर भोल्याड भयो
ल्यायो र तामा बाजा लौमाया पुनेनी
माजेर पुनेनीले, नाक र पोख हालिन
पोल्ल र जाल्ल पारिन, नाक र पोख बानिन
माभिर पुन बुरेलीले, पोल्ल र जाल्ल पारी
भोजे र मा परेली, गहुँ र ध्वजा भेटिन
जौँ र ध्वजा भेटिन, नसुरीमा भेटिन
माभी र पुन बुरेनी, पुन र मनेँ हौकी
पुन र मनेँ हौकी, बाल मै पुनेनी मछु
सत्य र मान्नम रचम बाल, जिमी र बाङ्गा थ्यो व

जा मेरा पुनयौ बाल, तिखुर कामी सोध
तिखु र कामी सोधवाल, मैतु र धामी सोध
वृक्ष र जेठो भयो बाल, काली र तेल पाइरी
पन्छि र माभो जेठो भो, काली कौवा जेठो
खरर माभो जेठो भो, दुवा नरम भो
पाथी थानो जेठो भो, अनक जेठो भो
काली र माभो कोदो बाल, तिते र फापर जेठो
काली र मास भयो बाल, काली र तिर भट्ट
मनको मादुया जेठो भो, सुराधनी बाहुन
टिक्प्यार धनी राजा, कामी र मादुया जेठो
तिखु र कामी दाजु, तारु र कामी दाजु
मैनु र धामी जेठो, राम र भाली पुन
बुकी र पाटन गयो, काला र माँभो लेक
उत्तरगंगा माथि रुर पातल माथि
कान र मा, कोदाली गोदूले र गादो पाच्यो
पेट र भोटी लायो, कम्मरमा खुपेटी
उत्तरमाभो दिशा, एक थप्को हान्यो
एकै चोइली फाल्यो, नौर थप्का हान्यो ।
यसरी पुनले पुनेनीलाई अन्न दिन्छ
ढिकीमा हाल्छ जाँतोमा पिन्छ
डाराँ ओसाउँछ गौरामा कलाउँछ भन्ने
प्रसङ्गबाट मान्नीको रचना र अन्न
फलाउने सम्म खेती गीत गाईने गरिन्छ ।

स्रोत: जागे भाँक्री

हाल: मसीकोट-१, सल्ले, रुकुम

४.६.१.८ बरा जप्याँउ खेती गीत

बार र कुनेमा थिए, बार र भाई बराह
बाइस र माला बजु बाह्र र कुने माथि
गठित र दहमाथि लाम र पुच्छे भेडो
रक्त र भोगी भयौ, मंश र लावी गय्यौ
बार र कुन्याबाट, बाह्र र मा ससल्ले
बार र सासल्लेले, बाह्र र भाई बराह बाल
जल र पैरे गयो, मूल र पैरे गयो
बाह्र र जलजलामा, बाह्र र थलथलामा
माँभ्र र पुन भेट्यो, बोदले गादा माथि
गादारमा पसिगो, मलाई बचाउ भन्या
तेरो चोखो नीति, म गर्न सक्दैन
बासी र सिस्नु खान्छु, बासी र ढिडो खान्छु
मलाई जसरी पनि, बचाउनैमा पर्छ
तेरो र हातबाट, जुठो र पानी देलाई
जुठो र चोखो तेरो, मैले र सँने भया
बार र सासल्लेले, माधुरमा पुनले
हातरमा उठायो, माधुरमा सासल्लेले
डाँरा र बथान गय्यो, बराह र मा गादीको
बार र जलजलामा, बार र थलथलामा
फल्लेर खर भयो, रानी र बजु बसिन्
सदेउ बरा हाँस्यो, कैलु र बरा नाँच्यो
रानी र बजु नाँच्छिन् सदेउ बराह हाँस्छिन्
बाह्र माई बराहको उत्पत्ति : बाह्रकुने दाडबाट, मस्टको उत्पत्ति :- कौवा काँश
बिजुल डाँराबाट र बर्मको उत्पत्ति काजेखेत गदे जीउलीबाट भएको हो ।

स्रोत: जागे भाँक्री

हाल: मुसीकोट, सल्ले, रुकुम

४.६.२ रत्यौली गीत

४.६.२.१ रातो भाल्या

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास
दुलहीको आमाले खालिन ठुलो गाँस

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास
दुलाहाकी आमालाई खाइदेउ यत्रो गाँस

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास
दुलाहाकी भाउजुले खालिन यत्रो गाँस

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास
दुलाहाकी दिदीलाई खाइदेउ ठुलो गाँस

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास
दुलाहाकी बैनीलाई खाइदेउ यत्रो गाँस

स्रोत: अमृत शर्मा

शिवरथ-४, सल्यान

४.६.२.२ आधा सगर

आदा सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यति खेर दुलैनीले कपाल कोरी हुन

आदा सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यति वेला दुलोनीले गाजल पैरी हुन

आदा सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यति वेला दुलैनीले लुगा पैरी हुन

आदा सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यतिवेला दुलैनीले जुठो खाइन हुन

आदि सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यतिवेला दुलैनीले औलो समाई हुन

आदि सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यतिवेला दुलैनीले औलो समाई हुन

आदि सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यति वेला दुलैनीले माला पैरी हुन

आदि सगर कालो मैलो, आदा सागर जुन
यतिवेला दुलैनीले सिन्दुर पैरी हुन्

स्रोत : अमृत शर्मा, शिवरथ-४, सल्यान

४.६.२.३ दुलैनीका आगनीमा

दुलैनीका आँगनीमा फुल्यो हजारी
दुलाहाकी आमालाई ल्याउ लतारी

दुलैनीका आँगनीमा फुल्यो हजारी
दुलाहाकी भाउजुलाई ल्याउ लतारी

दुलैनीका आँगनीमा फुल्यो हजारी
दुलाहाकी फुपुलाई ल्याउ लतारी

दुलैनीका घर पछाडि फुल्यो हजारी
दुलाहाकी दिदीलाई ल्याउ लतारी

दुलैनीका बारीमा फुल्यो हजारी
दुलाहाकी आमालाई ल्याउ लतारी

स्रोत: शक्तिकप चन्द्र
कोटबारा-४, सल्यान

४.६.२.४ दुलाहाका गोठमाथि

दुलाहाका गोठमाथि फूर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी आमालाई पार उबिन्नो
दुलाहाका गोठमाथि फूर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी भाउजुलाई पार उबिन्नो
दुलाहाका गोठमाथि फूर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी माइजुलाई पार उबिन्नो
दुलाहाका आगनीमा फूर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी दिदीलाई पार उबिन्नो
दुलाहाका आगनीमा फूर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी बैनीलाई पार उबिन्नो

स्रोत: जीवन रसाईली
कोटबारा-६, सल्यान

४.६.२.५ रत्यौली (माट्या भुट्यो चट-चट)

माट्या भुट्यो चट चट कालो हाँरीमा
आज दुला गइसक्यो नयाँ सारीमा
आज दुला काँ गयो खसी डोय्याउँदै

दुलैनी लिएर आउछ, चोऱ्याउँदै

आज दुला काँ गयो ठुलो भारीमा

हस्याङ् फस्याङ् गर्छ अब कालो भारीमा

दुलाहाका आगनमा रातो भाले भ्यात्त भ्यात्त

भोलि आउने दुलैनीको हुन्छ ल्यात्त ल्यात्त

स्रोत: बमकृष्ण रसाईली

कोटबारा-६, सल्यान

४.६.२.६ बालैचन गीत

जेठो छोर्रो जन्मदा सुभेच्छाको कामना गर्दै खुसीयाली मनाउन छोरालाई
खेलाउँदै उसको वर्णन गर्दै गाईने प्रचलनमा रहेको लोकगीत

समेरने शुभारम्भ

हि हा है खेलेउ नौलाख तारा तम्राका भया

हामु खेल्छौं पहेली पैशयारी

हि हा है खेलेउ वाशुकी नाग तम्राका भया

हामु खेल्छौं पहेली पैशयारी

हि हा है खेल्यौं अठार भाई मस्टा तम्राका भया

हामु खेल्छौं पहेली पैशयारी

हि हा है खेलउ जति छन् सबै तम्राका भया

हामु खेल्छौं पहेली पैशयारी ।

बढाई भो ।

हि हा है भया एक तली बाचा तम्राका भया

हामु खेल्छौं पहेली पैशयारी

हि हा है भया दुई तली वाचा तम्राका गया

हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

हि हा है भया तीन/चार/पाँच/छ/सात

तली वाचा तम्राका भया

हामी खेल्छौ पहेली पैस्यारी ।

बराई भो ।

एकु है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या

हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

दुई है मैना आस्तिका लियौ तम बाल खुल्या

हामु खेल्छौ राहेली पैस्यारी

तीनु है मैना आस्तिक लियौ

तम बाल खुल्या, हामु खेल्छौ

पहेली पैस्यारी

चार है मैना अस्तिक लियौ तम बाल खुल्या

हाजु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

पाँचु है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या

हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

छइहै मैना आस्तिक लियौ तम बालखुल्या

हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

सातौ है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या

हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

आठु है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या
हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

नवौ है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या
हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी

दसौं है मैना आस्तिक लियौ तम बाल खुल्या
हामु खेल्छौ पहेली पैस्यारी
बराई भो ।

हि हा है खेलौं तम बाल खुल्यौ वर सरी वर देखौं तही जीवरी जोलीको रूप
जीवरी जोलीको रूप है मेरो क्या पैरउला जैसे भलो जीवरी जोलीको रूप

हि हा है खेलौं तमबाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही मुखरी जोलीको रूप

मुखरी जोलीको रूप है मेरो क्या पैरउला
जैसे भलो मुखरी जोलीको रूप

हि हा है खेलौं तम बाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही घँटिया जोलीको रूप
घँटिया जोलीको रूप है मेरो क्या पैरउला
जैसे भलो घँटिया जोलीको रूप

हि हा है खेलौं तम बाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही हातीया जोलीको रूप
हातीया जोलीको रूप है मेरो क्या पैरउला
जैसे भलो हातीया जोलीको रूप

हि हा है खेलौ तम बाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही कम्मरै जोलीको रूप
कम्मरै जोलीको रूपहै मेरो क्या पैरउला
जैसै भलो कम्मर जोलीको रूप

हि हा है खेलौ तम बाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही खुट्टीया जोलीको रूप
कम्मरै जोलीको रूपहै मेरो क्या पैरउला
जैसे भलो खुट्टीया जोलीको रूप

हि हा है खेलौ तमबाल खुल्यौ वर सरी बस
देखौ तही पैतुला जोलीको रूप
पैतुला जोलीको रूप है मेरो क्यापैरउला
जैसै भलो पैतुला जोलीको रूप
बराई भयो

स्रोत : तुल बहादुर चन्द र खिमबहादुर शाह
दमाचौर-३, सल्यान

पाँचौं परिच्छेद

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको वर्गीकरण र विश्लेषण

५.१ सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको वर्गीकरण

पूर्वी सल्यानमा विभिन्न प्रकारका लोकगीतहरू प्रचलित छन् । यहाँको लोकगीतको अध्ययनमा वर्गीकरण पनि एक महत्त्वपूर्ण कार्य हो । लोकगीतका विभिन्न वैशिष्ट्यका आधारमा विद्वान्हरूले तिनको वर्गीकरणका आधारहरू निर्माण गरेका छन् । सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा विभिन्न चाडपर्व, संस्कार र धर्मकर्मको वेला विभिन्न प्रकारका लोकगीतहरू गाइने गरिन्छ । कतिपय संस्कार र अवसरहरूमा लोकगीतको प्रस्तुति अपरिहार्य हुन्छ । लोकगीतविनाका ती अवसर र संस्कारहरू व्यर्थ ठहरिन्छन् । यस क्षेत्रमा विशेष अवसरहरू बाहेक अन्य वेलामा पनि लोकगीतहरू गाएर एक आपसमा सुःखदुःख आदान प्रदान तथा मनोरञ्जन गर्ने गरिन्छ ।

जुनसुकै वेला र अवसरमा जोसुकैले गाउन मिल्ने गीतहरू पनि यस भेगमा प्रशस्त पाइन्छन् । त्यसैले सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा सङ्कलित लोकगीतहरूको प्रवृत्ति एवम् स्वरूपलाई केलाउँदा र विभिन्न विद्वान्हरूले गरेका लोकगीतका वर्गीकरणका आधारमा तिनको वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । वर्गीकरण गरेर अध्ययन गर्न सकिने त्यस्ता केही प्रमुख आधार सहित पूर्वी सल्यानका लोकगीतलाई तल वर्गीकरण गरिएको छ :

(क) गायन अवसरका आधारमा

पूर्वी सल्यानका लोकगीतको वर्गीकरण गीत गाउने अवसरका आधारमा निम्नानुसार गर्न सकिन्छ :

अ) संस्कार गीत : तन्त्रमन्त्र, खेती, रत्यौली र बालैचन ।

आ) बाह्रमासे सङ्गीत : बाह्रमासा, घाउटा, ठाडी भाका, वनगारी ख्याली, टप्पा, भ्याउरे चारगाउँले, मायै, मैतालु, साइलैजी, स्यानीमाया, लामोभाका, सिडारु, लामसुरे मालै र सोरठी, बालगीत ।

इ) पर्वगीत : तिज, देउसी र भैली ।

ई) धार्मिक गीत : आरती, सन्ध्या र भजन ।

उ) कर्मगीत : भारी

ख) सहभागीका उमेरका आधारमा

अ) बालगीत : हो हो बाबु, घुघुती-बासुती, कुखुरी काँ, चुँगुरी मुसी र चि.मुसी चिं ।

आ) युवायुवतीका गीत: तिज, देउसी, भैली, सैरेली, ढारीभाका, टप्पा, सिडारु र चार गाउँले ।

इ) प्रौढ गीत: साइलैजी, लामो भाका, ख्याली सडरु, मैतालु, मायै सोरठी, तन्त्रमन्त्र, रत्यौली, बालैचन, कुमारी र खेती

ई) वृद्धका गीत: आरती, सन्ध्या, भजन र बाह्रमासा

(ग) सहभागीका लिङ्गका आधारमा

(अ) पुरुषले गाउने गीत : सोरठी, खेती, बालैचन, सिडारु, ख्याली र बाह्रमासा ।

(आ) महिला स्वरले गाउने गीत : तिज, देउसी, भारी र रत्यौली

(इ) मिश्रित स्वरका गीत : टप्पा, भैली, देउसी, आरती र सन्ध्या, घाउटा, ठारी भाका, मालै, साइलैजी, स्यानीमाया, मैतालु, चारगाउँले भाका, टप्पा, भजन, भ्याउरे ।

(घ) गतिका आधारमा

गीतका आधारमा लोकगीतलाई निम्न वर्गमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।

- अ) द्रुत गति : टप्पा, बनगारी, तन्त्रमन्त्र ।
- आ) मध्यम गति : सोरठी, भैली, देउसी, तिज, बालैचन, आरती, सन्ध्या, बालगीत, खेती, बाह्रमासा, स्यानीमाया, मैतालु, घाउटा ।
- इ) विलम्बित गति : साइलैजी, ठारी भाका, सोरठी, भारी, लामसुरे मालै, लामी भाका ।
- ई) मिश्रित गति: सिडारु, ख्याली, सोरठी, भ्याउरे, तिज, भजन र बालगीत ।

(ङ) पात्रसङ्ख्याका आधारमा

पात्र सङ्ख्याका आधारमा लोकगीतलाई निम्न चार समूहमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।

- अ) एकल: साइलैजी, ठारी भाका, तन्त्र-मन्त्र, खेती, मालै तिज, मैतालु
- आ) युगल: टप्पा, बनगारी, भ्याउरे
- इ) सामूहिक: सोरठी, देउसी, भैली, चरगाउँले, भजन ।
- ई) सामूहिक : सोरठी, देउसी, भैली, चरगाउँले, भजन ।

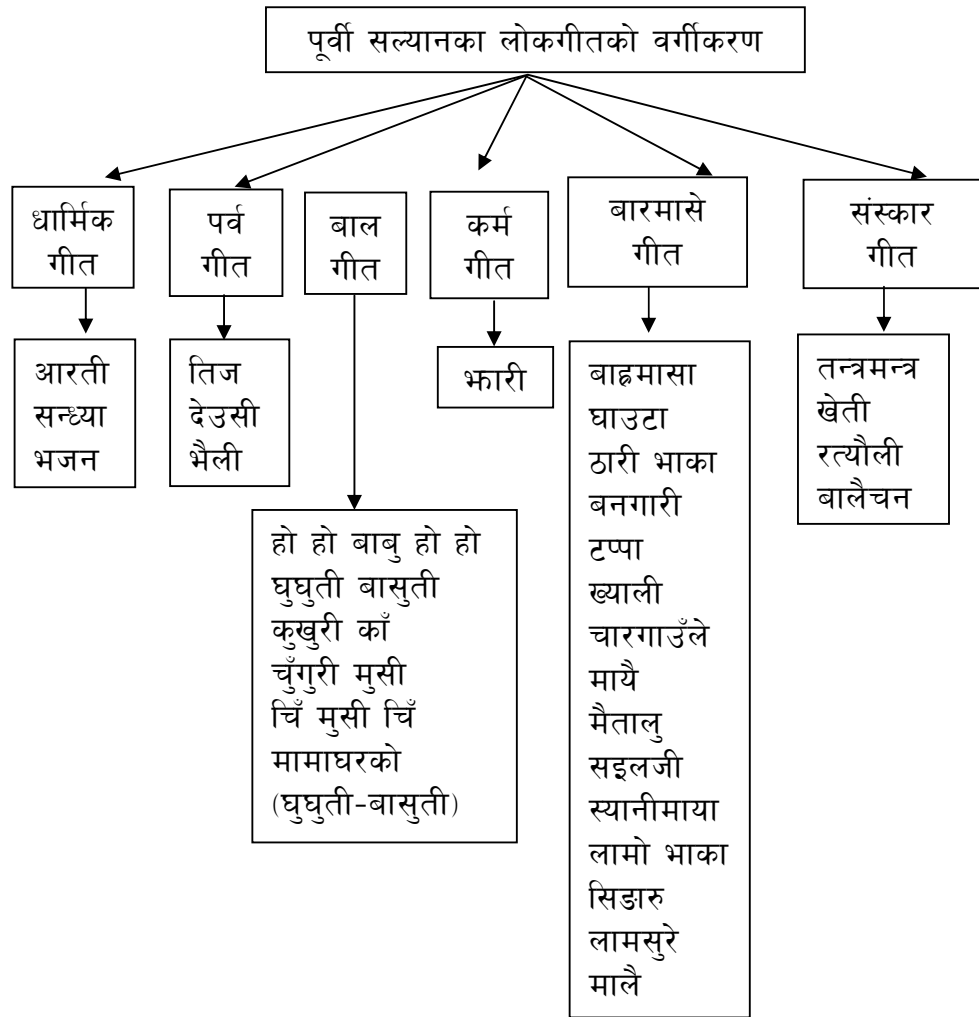
(च) वाद्य प्रयोगका आधारमा

यस आधारमा वाद्यसहित र वाद्यरहित गरी लोकगीतलाई दुई समूहमा विभाजन गरिन्छ :

(अ) वाद्य गीत : बनगारी, ख्याली, टप्पा, भूयाउरे, सिडारु, सोरठी, भजन, रत्यौली, खेती, चारगाउँले भाका, स्यानीमाया, आरती, सन्ध्या, तिज, देउसी, भैली ।

आ) वाद्य रहित गीत : ठारी भाका, लामी भाका, लामसुरे मालै, मायै साइलैजी, बाह्रमासा, घाउटा, तन्त्रमन्त्र, भारी, बालगीत ।

यी माथि उल्लिखित विभिन्न आधार छँदाछँदै पनि सल्यानका पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतहरूलाई त्यहाँका लोकगीतको भूलक प्रस्तुत हुने गरी गायन अवसर र तिनको प्रकृति अनुसार यसरी समग्रमा तालिकाद्वारा पनि देखाउन सकिन्छ ।



आरेख सङ्ख्या २: पूर्वी सल्यानका लोकगीतको वर्गीकरण

५.२ सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको विश्लेषण

पूर्वी सल्यानका समग्र गीतहरूलाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ । संक्षेपमा सम्पूर्ण गीतहरू समेटिने गरी मूलतः गायन अवसर र तिनको प्रकृति अनुसार धार्मिक गीत, पर्व गीत, कर्मगीत, बालगीत, बाह्रमासे गीत र संस्कार गीतका रूपमा वर्गीकरण गरिएको छ । यसको समेत ख्याल गरी पूर्वी सल्यानका लोकगीतहरूलाई निम्न आधारमा विश्लेषण गर्नु उपयुक्त हुन्छ : (क) विषयवस्तुका आधारमा, (ख) लय वा भाकाका आधारमा, (ग) सङ्गीतात्मकताका आधारमा, (ग) भाषाका आधारमा, (घ) स्थानीयताका आधारमा र (ङ) लोकतत्त्वका आधारमा

५.२.१ धार्मिक गीतको विश्लेषण

५.२.१.१ विषयवस्तुका आधारमा

धार्मिक धर्म शब्दमा 'इक' प्रत्यय लागेर बनेको शब्द हो जसको अर्थ देवी देवतालाई पूजा गर्नु, सत्य काम गर्नु र भजन कीर्तन गर्नुसँग सम्बन्धित हुन्छ । युवा पुस्ताले उपेक्षा गरे पनि यस क्षेत्रमा बुढापाहरूले जीवनको उत्तरार्धमा पुण्य प्राप्त गर्न र आफूले अन्जानमा गरेका गल्तीको प्रायश्चित्त गर्न धर्मकर्ममा लाग्ने गरेको पाइन्छ । धर्मकर्म गरी मोक्ष प्राप्त गर्न यहाँका मानिसले घरमा जलधारा, यज्ञ, पूजा, लाखवत्ती लगाउने गर्दछन् । यस्ता अवसरहरूमा भजन कीर्तनका गीतहरू गाइने भएकोले धार्मिक गीतका मुख्य विषयवस्तु विभिन्न देवी देवताका साथै मुख्य रूपमा राम, सीता, गणेश, शिव, पार्वती, महेश्वर, विष्णु आदिलाई पुकार्ने हुन्छन । उदाहरणका रूपमा शिवको वर्णन गर्ने, विषयवस्तु भजनमा यसरी वर्णन गरिएको पाइन्छ :

कति सुहायो कति सुहायो शिवजीलाई !

नागको माला बाघको छाला कति सुहायो !

यसरी नै अन्य देवी देवताको वर्णनसँगै कृष्ण भगवान्लाई पुकार्ने विषय पनि भजनमा समावेश भएको पाइन्छ । जस्तै;

याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
गोकुलैमा मोरली बजाउनु भएन
याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
वृन्दावनमा गोपिनीलाई ल्याउनु भएन
याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन
मथुरामा भजन पनि गाउनु भएन

माथिको भजनमा कृष्ण नआएको प्रसङ्ग उल्लेख गर्दै कृष्ण भगवान् आएर भजन गाउने एवम् गोपिनीलाई लिएर मुरली बजाउने कुराको वर्णन गरिएको छ । बिहानै उठी आरतीको वेला यस्ता विषयवस्तु समेटिएका भजन गाइन्छन् :

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
म त महापार्वती ती त महादेव
हार चढे फुल चढे और चढे मेवा
अपुत्रीलाई पुत्र दिने गणेशजीको सेवा

त्यसै गरी सन्ध्याकालीन समयमा सन्ध्या बत्ती बाल्ने र दियो बत्ती कोठामा घुमाउँदै भगवानका नाम जप्ने विषयवस्तुहरू पनि समावेश भएका हुन्छन् :

जय हरि राम कृष्ण कृष्ण जय हरि राम
सबैले जपम् है ईश्वरका नाम
सबैले जपम् है कृष्णजीका नाम
सबैले जपम् है शिवजीका नाम
सबैले जपम् है गणेशजीका नाम

समग्रमा पूर्वी सल्यानका भजनहरू विषयवस्तुको हिसाबले आध्यात्मिक मान्यता बोकेका नीतिपरक अभिव्यक्तिले युक्त रहेका छन् ।

५.२.१.२ लय वा भाकाको आधारमा विश्लेषण

कुनै पनि गीत सङ्गीतमय हुनलाई लय र भाकाको जरुरत पर्दछ । त्यसै गरी भजन गायनमा लय गायकपिच्छे फरक फरक हुन पनि जान्छ । पहिले विलम्बित लय ढिलो स्वरमा गाउँदै विस्तारै गति बढाएर छिटो छिटो द्रुत लयमा अन्त्य गर्ने परम्परा भजन गायनमा रहेको हुन्छ । पहिलो अन्तरा विलम्बित लयमा जस्तै; “आउनु भएन कृष आउनु भएन” भनि सकेपछि द्रुत लयमा “गोकुलमा मोरली बजाउनु भएन” भनेर गाउने गरिन्छ ।

५.२.१.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

शब्दहरूलाई मिठो स्वरमा लय हाली गाउने काम गीतमा जुन कुरा गाउने कलामा भर पर्दछ । गीत गाउनेको सँगै यस्ता भजनहरूमा बाजागाजा बजाएर नाच्ने पनि गरिन्छ । विशेष गरी सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा पूजाआजा, विवाह आदिमा धेरै मानिसहरू जम्मा भएर कोहीले ताली बजाउने र कोही नाचेर सहयोग गर्ने गर्दछन् । कृष्ण जन्माष्टमी, तिज र पञ्चमीका अवसरमा भगवान्का गीत गाएर नाचिने भएकाले भजनहरू पूर्ण सङ्गीतमय छन् ।

भजन गाउँदा गायकले विशेष गरी हारमोनियम आफैले वा अरू वाद्यवादकले बजाएर गाउँदा वातावरण सङ्गीतमय हुन्छ । डम्फु, मुरली, खैँजडी आदि लोकबाजा र तबला बाजा पनि बजाइन्छन् । नाच्नेहरू खुट्टामा चाँप लगाएर ताली बजाउँदै नाच्छन् ।

गीतबाटै गायकले र अन्य नाच्ने सुन्नेहरूले वैकुण्ठमा बास पाउने इच्छा व्यक्त गरेका हुन्छन् । जस्तै ;

धर्मी लागे गाउन र बजाउन

पापीलाई लाग्यो भरी निदरा

यी गीतहरूले नै यहाँको भजन गायन पूर्ण सङ्गीतमय हुने कुरा प्रमाणित गर्दछन् ।

५.२.१.४ भाषाको आधारमा विश्लेषण

पूर्वी सल्यानको मातृभाषा नेपाली नै भएकोले यहाँ नेपाली भाषाकै केही भाषिकागत विशेषता पाइन्छन् । बाहुन, छेत्री, दलित, जनजाति सबै जात जातिको बसोबास भएकाले जात जातिगत रूपमा केही भाषिक भिन्नता छ । छेत्री/बाहुन, जनजाति र दलितहरूबिच केही भाषिक भिन्नता यसप्रकार छ :

छेत्री बाहुनले 'बाखाको पाठो उच्चारण गर्दछन् भने त्यसैलाई दलित समुदायमा 'बाग्राको पाटो' र 'पिठो' लाई 'पिटो' जस्ता शब्दहरू प्रयोग गरिन्छन् । मगर बस्तीमा 'ट' वर्णलाई 'त' र 'ट' लाई 'र' उच्चारण गर्ने प्रचलन पनि देखिन्छ । जस्तो ; 'बाट' लाई 'बात', 'भात' लाई 'भाट' आदि । शब्द उच्चारणको भिन्नता भजन तथा अन्य धार्मिक गीतमा पनि पाइन्छ । नेपालीका अन्य भाषिकाहरूमा भैं यहाँ पनि शब्दान्तको घ भ्र ढ ध भ ध्वनि ग ज ड द ब र कतै कतै 'ह' ध्वनिको भिन्नै उच्चारण गरिने कुरा तलका उदाहरणबाट प्रस्ट हुन्छ :-

कति सुहायो कति सुवायो

शिवजीलाई बागको छाला

नागको माला कति सुवायो ।

यसरी गीतमा 'सुहायो' लाई 'सुवायो' र 'बाघ' लाई 'बाग' उच्चारण गरिन्छ ।

त्यस्तै "याउनु भएन कृष्ण याउनु भएन" मा 'याउनु' भनेको 'आउनु' भन्न खोजिएको हो । नेपाली भाषा संगसंगै कतै हिन्दी शब्दहरू पनि प्रयोग गरिन्छन् ।

जस्तै; हार चढे फुल चढे और चढे मेवा

यहाँ 'और' हिन्दी शब्दले 'अरू' भनेको हो ।

५.२.१.५ स्थानीयताका आधारमा

स्थानीयताका आधारमा यहाँका मानिसहरूले यहाँका मठ मन्दिर, खैराबाड, छाया क्षेत्र, मोखला शब्द प्रयोग गर्ने र नदीनालाका ठाउँमा शारदा, भेरी आदि उल्लेख गरेको पाइन्छ ।

विशेष गरी यहाँका भजन कीर्तनमा उच्चारणगत स्थानीयपन भेटिन्छ ।

जस्तै ; साँपको माला 'सर्पको माला' जस्तो स्थानीय शब्द प्रयोग भएको पाइन्छ ।

त्यसै गरी जपम् 'जपौँ', ठेटी 'ठेंडी', मोरली 'मुरली' जस्ता शब्दहरू शारदा, नछी र खैराबाड मन्दिर जस्ता स्थानीयपन भएका शब्दहरू सल्यानका धार्मिक गीतहरूमा पाइन्छन् ।

५.२.१.६ लोकतत्त्वका आधारमा

लोकतत्त्व पूर्वी सल्यानका धार्मिक गीतहरूमा विद्यमान रहेको कुरा तलका गीतहरूमा देख्न सकिन्छ :

जस्तै; खैराबाड देउतीका सुनैको धुरी
मलाई पनि लैजाउ राम् अमरा पुरी
खैराबाड देउतीलाई फुलपाती चढाम्
वैकुण्ठ जानलाई ढोका खोल राम

माथिको गीतमा प्रयोग भएको खैराबाड देउती सल्यान जिल्लाकै प्रमुख मन्दिर हो जुन मन्दिरमा यहाँका कैयौँ मान्छेले बोका चढाउने गर्छन् र फल प्राप्त हुने आशा राखेका हुन्छन् । अमरा पुरी र वैकुण्ठ प्रतिको आस्था र आकर्षणमा पनि लोकको चेतना

प्रकट भएको छ । यहाँका धार्मिक गीतहरू त्यहाँका मानिसहरूका लोक परम्परा, मान्यतामा र विश्वासमा आधारित छन् ।

५.२.२ पूर्वी सल्यानका पर्व गीतको विश्लेषण

सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित देउसी, भैली र तिजमा गाउने गीतलाई पर्व गीतका रूपमा लिन सकिन्छ । सैरेलो यदाकदा तिहारमा गाइए पनि यो प्रायः लोप भइ सकेको र बनगार क्षेत्रमा इस्टमित्र हुनेहरू मात्र यसबारे केही जानकार रहेको पाइन्छ । यहाँका पर्व गीतहरूलाई विभिन्न आधारमा यसरी विश्लेषण गर्न सकिन्छ :

५.२.२.१ विषयवस्तुका आधारमा

यस क्षेत्रका पर्वगीतहरूमा प्रायजसो पौराणिक विषयवस्तु समेटिएका हुन्छन् । पृथ्वीको उत्पत्ति वा मान्नुम रचिएको प्रसङ्ग देउसी भैली गीतमा रहेको हुन्छ । यसै गरी सामाजिक विषयवस्तु समेट्दै चाडपर्व र प्रकृतिको वर्णन यस्ता गीतहरूमा गरिएको पाइन्छ । नारीका पिरव्यथा र वेदनाहरूको प्रस्तुति तिज गीतको मूल भाव रहेको हुन्छ । सामाजिक विषयवस्तुमा रहेका तिज गीतहरू पनि समयानुकूल परिवर्तन हुँदै गइ रहेका छन् । हाल आएर यहाँ गाइने पर्वगीतहरूमा नवीनतम चिन्तन देखा पर्न थालेको छ । तिनमा राष्ट्रिय भावनामा आधारित विचारहरूले युक्त तुल्याई गीतलाई समसामयिक बनाउने प्रयास गरिएको छ ।

पूर्वी सल्यानमा गाइने देउसी गीतमा समूहलाई सम्बोधन गर्दै कसरी देउसी खेल आइएको छ भन्ने कुरा तलका शब्दहरूमा व्यक्त गरिन्छ :

| | |
|-----------------|----------|
| आहै रातोमाटो | देउसी रे |
| आहै चिप्लो बाटो | देउसी रे |
| आहै लदैँ पदैँ | देउसी रे |
| आहै आयौँ हामी | देउसी रे |

साह्रै सङ्घर्ष गर्दै वर्ष दिनको तिहारमा देउसी खेलन घरवेटीको आँगनीमा आएको प्रसङ्गले तत्कालीन पानी परेको चिप्लो बाटो र वर्षा ऋतुको वर्णन गरेको पाइन्छ । त्यहाँ देउसी खेलन आउनुको कारण घरवेटीसँग यसरी प्रस्तुत गरिन्छ :

आह्रै चोर्न ढाँट्न देउसी रे
आह्रै आएका होइनौं देउसी रे
आह्रै हामी त्यसै आएका होइनौं देउसी रे
आह्रै वर्ष दिनको देउसी रे
आह्रै तिहारमा देउसी रे
आह्रै बली राजाले पठाएर देउसी रे
आह्रै वर्ष दिनको देउसी रे
आह्रै तिहारले देउसी रे
आह्रै जनायोर देउसी रे

यसरी बलिराजाले पठाएको कुराले पौराणिक समयको विश्वास र सांस्कृतिक परम्परालाई समेट्दै र चाडपर्वको वर्णन गर्दै पौराणिक विषयवस्तुलाई देउसीमा प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसपछि घरवेटीलाई हौँस्याउने, नचाउने र फकाउने गीत गाएर धेरै दक्षिणा लिने काम पनि देउसी र भैली गीतमा गरिने भएकाले त्यति बेलाको गरिबीलाई झल्काइएको हुन्छ । घरवेटीलाई खुसी पार्ने विभिन्न गीतहरू गाईन्छन् । तिहारमा कुकर, गाई र गोरुलाई पूजा गर्ने, टिकाटालो गर्ने र चोखीपिरी वा मिठो, मिठो खुवाइने चलनलाई गीतमा समेटिएको हुन्छ । जस्तो,

लिता एकादसी भैली
लिता द्वादसी भैली
लिता तिर्दसी भैली
आह्रै चर्दसीको देउसी रे
आह्रै बडो दिनमा देउसी रे

आहै कुतुवाको देउसी रे
आहै तियार देउसी रे
आहै कुतुवालाई देउसी रे
आहै फुलमाला देउसी रे
आहै पहिराइ दिन्छन् देउसी रे
आहै टिकाटालो देउसी रे
आहै लगाइ दिन्छन् देउसी रे

कुतुवाको तिहारलाई माथि वर्णन गरे जस्तै गोरु र गाई तिहारलाई पनि फुलमाला पहिराइ दिने टिकाटालो लगाइ दिने र मिठो मिठो खाने कुरा खान दिने प्रसङ्ग उल्लेख गरिन्छ । त्यसै गरी “दुजको वडा दिनमा भाइबैनीको तियार” भनेर भाई हुने दिदी बहिनी साह्रै खुसी भएको, बाहिर भित्र गर्दै टीकाको तयारी गर्दै गर्दा भाइ नहुने कुना बसी धुरु धुरु रोएको र उसलाई भाइ हुनेले मेरै भाइलाई टीकाटालो लगाइ देऊ र फुलमाला लगाइ देउ भनेर सम्झाउँछे भन्ने विषय वस्तु यसरी समेटिएको हुन्छ :

| | |
|--------------------------------|--------------------------|
| भाइ हुने | आहै भाइ हुनेले देउसी रे |
| आहै वैंनेउलीत देउसी रे | आहै तेरो भाइ देउसी रे |
| आहै भाइर खुरखुर देउसी रे | आहै मेरो भाइ देउसी रे |
| आहै भित्र सुरसुर देउसी रे | आहै एकै हुन् देउसी रे |
| आहै गछ्छे हो देउसी रे | आहै मेरै भाइलाई देउसी रे |
| आहै भाइ नहुने देउसी रे | आहै टीकाटालो देउसी रे |
| आहै वैंनेउलीत देउसी रे | आहै लगाइदेऊ देउसी रे |
| आहै कुना बसी देउसी रे | आहै फुलोमाला देउसी रे |
| आहै धुरु धुरु देउसी रे | आहै पहिराइ देऊ देउसी रे |
| आहै असनधारा रुन्छे हो देउसी रे | आहै भनेर देउसी रे |

आहै सम्भाउँदै देउसी रे

आहै बुभाउँदै देउसी रे

यसरी तिहारको चर्चा गरेपछि भैल्याराहरू (भैली खेल्नेहरू) हामी सयौं घरका पाहुना भएकाले विदा हुन्छौं भन्दै आसिक दिने गर्दछन् । आसिकमा पौराणिक र सामाजिक यथार्थ विषयवस्तुलाई देउसी खेलन आएको आफ्नो घरमा हाम्रो आसिकले अज-घट, गजघट्ट होओस् र काखामा छोरा र ल्हासामा घोडा अनि तामा तम्मन र धन पैसाले भरिपूर्ण होओस् भन्दै अर्को सालको तिहारसम्म बाँचियो भने सबै सङ्गी साथी यसरी नै रमाइलो गर्दै भैली/देउसी खेलन आउंला भनी समापन गर्ने गरिन्छ र दान दक्षिणा लिएर अर्को घरमा गइन्छ ।

जसरी देउसी खेलिन्छ त्यसरी नै भैलीमा पनि एक जनाले 'लिता' भनेर भट्याउने र अरू सबैले भैली भनेर खेल्ने गरिन्छ । भैलीमा पनि विभिन्न पौराणिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गरिन्छ । परापूर्वकालमा यो पृथ्वीलाई महादेवले रचना गरेको, त्यसमा विरुवाहरू क्रमशः उमारिएको र पृथ्वी उपभोग गर्नका लागि खरानी र कुखुराको दिसा मिसाई मान्छेले बनाएको पौराणिक विषयवस्तुबाट भैली सुरुवात गरिन्छ ।

यसपछि विभिन्न सामाजिक विषयवस्तु प्रस्तुत गरिन्छ । औंसी, पूर्णिमा, सङ्क्रान्ति र वर्ष दिनको ऋतु परिवर्तनको वर्णन गर्दै वर्षमा एकपटक आउने तिहारमा प्रवेश गरिन्छ । भैलीमा पनि देउसीमा जस्तै कुकुर, गाई, गोरु र भाइ तिहारको चर्चा गरिन्छ । यस्तो चर्चा गर्दा विभिन्न प्रकृतिसँग जोडिएका शब्दले गीतलाई रोचक र शृङ्गारिक पनि बनाउने गरिन्छ । महादेवले यो मान्नी (पृथ्वी) रचना गरिसकेपछि मात्र मानव सभ्यताको सुरुवात भएको हो भन्ने भनाइ त्यसमा रहेको छ । मानव सभ्यतासँगै औंसी, पूर्णिमा, सङ्क्रान्ति, तिहार, दसैं आदि पर्व आउँछन् भन्दै तिहारको महिमा पनि यस गीतमा गाईन्छ । भाइ र बहिनी हुनेको खुसियाली र नहुनेको दुःखद अवस्थाबारे पनि यहाँ चर्चा गरिएको पाइन्छ :

लिता भाइ हुने भैली
लिता वैन्यौली त भैली
लिता भाइर खुरखुर भैली
लिता भित्र सुस्सुर भैली
लिता गर्छे हो भैली

खरानीको डल्लो र सुन भालेका चल्लाको सुलीबाट मान्छे बनेको प्रसङ्ग उल्लेख हुनुभन्दा अगाडि प्राकृतिक विषयवस्तुमा बोट बिरुवा लगाइएको र ती बोट बिरुवामा चराचुरुङ्गी रमाइ रहेको प्रसङ्ग पनि उल्लेख गरिन्छ :

लिता यो मन्नमी भैली
लिता कसै राखौं भैली
लिता कसै थामौं भैली
लिता पहिलो वृक्ष भैली
लिता वर पिपल भैली
लिता पञ्च पतहाव भैली
लिता या कलश भैली
लिता लगाया भैली
लिता यो वृक्षको भैली
लिता डाली बस्ने भैली
लिता रङ्गी डाँफे भैली
लिता पियाल भैली
लिता सियाल चरी भैली
लिता बनाया भैली

तिहारका विभिन्न सामाजिक पौराणिक प्राकृतिक विषय र पर्व महिमा सम्बन्धी वर्णन गरि सकेपछि आसिक दिने गरिन्छ र घरबेटीसँग दान दक्षिणा माग्दै प्रत्येक

घरमा भैली खेलै दुल्ने गरिन्छ । यो कार्य कुकुर तिहारदेखि सुरु भई यस क्षेत्रमा भाइटीकासम्म चलि रहन्छ । कतै कतै भाइटीकाको भोलिपल्ट बासी तिहारसम्म पनि भैली खेल्ने चलन छ । यसरी भैली खेलेर जम्मा गरेको धनपैसा विभिन्न सामाजिक कार्य र विकास निकासमा खर्च गर्ने प्रचलन आजभोलि दिनानुदिन बढ्दै गएको पाइन्छ । भैली गीतको विषयवस्तुमा पनि सामाजिक विषयवस्तु, विकास र देशभक्तिको भावना गाँसेर वर्णन गर्ने र राजनैतिक प्रसङ्ग समेत जोड्दै समसामयिक सन्दर्भ गाँस्ने कार्य भइ रहेको देखिन्छ ।

नेपाली हिन्दु नारीहरूको अर्को महान् चाड हरितालिका तिज र पञ्चमीमा व्रत बस्ने चलन यस क्षेत्रमा पनि रहेको छ । विवाहित नारीले आफ्ना श्रीमान्को दीर्घायुको लागि र अविवाहितले राम्रो पति पाउने प्रतिज्ञा सहित तिजको व्रत बस्ने प्रचलन छ । तिजमा व्रत बसेर शिव र पार्वतीका गीत गाउने र नाच्ने चलन पनि यहाँ प्रस्तुत छ ।

तिज गीतमा विशेष गरी पौराणिक सामाजिक र व्यक्तिगत विषयवस्तु प्रस्तुत गर्ने परम्परा भए पनि हाल आएर बढी समसामयिक तथ्य सम्बन्धी जानकारीहरू तिनमा समाविष्ट गरिन्छन् ।

नारीहरूले विवाह गरेर पराई घर गइ सकेपछि सोही घरमा दिनभरि भर्कै पानी परि रहँदा घाँस काटेको र तिनका सासू दिनभरि घरमै सुत्ने गरेको, खानाका नाममा खाजा मात्र तयार गरिएको, कङ्गालीका छोरी दिएको, कङ्गालीको सम्पत्ति नखाई नलाई सकिएको जस्ता प्रसङ्ग गीतमा अभिव्यक्त गरिएको पाइन्छ । तिजमा गाइने गीतहरूद्वारा माइती समक्ष यसरी गुनासो पोखिन्छ :

नाच मेरी दिदी बैनी नाच मेरी सानीमा

मैले पनि घाँसै काटै भर्कै पानीमा

भर्कै पानी घाँसै काटे नौ नौ पुला गनेर

हाम्री सासू अलच्छिनी थोरै भनेर

हाम्री सासू अलच्छिनी दिनैभरि सुत्ने
रातीको बाह्र बजे भान्सा पस्ने

भान्साकोठा जाँदाखेरि रैछ खाजा भुटेको
त्यो घरमा छोरी दिने आँखा फुटेको

नाकै लाउने नथिया सुनारैले रचेन
कङ्गालीका दियौ बुबा चित्त बुभेन

कङ्गालीको धन सम्पत्ति नखाई नलाई सकियो
पिपलपाते लहरीले कम्मर कसियो ।

यस्ता गीतहरू बाहेक तिजका गीतहरूमा प्रकृति चित्रण पनि पाइन्छ ।

जस्तै ; बिहानै उठेर पानी भर्न जाँदा
लाहुरे फुलैले बाटो छेकेको

तिजका गीतहरूमा छोरीले आफ्ना बुबा र ससुराको मायामा ठुलो अन्तर
रहेको कुरा यसरी प्रस्तुत गरेको पाइन्छ :

बिहानै उठी पानी भर्न जाँदा
लाहुरे फुलैले बाटो छेकेको
माइती मेरा चेली सम्झी रुँदा हुन्
गरिवको घर खानु रैछ लेखेको ।

वर्ष दिनको तिजमा माइत जान्छु भनेको
हाम्री सासू पापिनीले सारी लुकाइन्
माइतमा जानु पच्यो रुँदै रुँदै ।

यस गीतमा घर परिवारले वर्ष दिनको तिजमा बुहारीलाई माइत जान नदिएको र भागेर माइत जान खोज्दा ठाडो खोलीले बगाएर लगेको वर्णन पाइन्छ । त्यसपछि घरबाट ससुरा र माइतबाट बुबा खोज्न जाँदा बुबाले माया ममता दर्साएको र ससुराले उल्टै गरगहना र धन सम्पत्तिको लोभ गरेको अभिव्यक्ति तिजका गीतमा समेटिएको भन्दै ढाकाडमकी जानकी चन्दले बडो कारुणिक र मर्मस्पर्शी रूपमा गाएर सुनाइन् यो गीत धेरैले गाउन नजान्ने र ज्यादै प्रचलित र पुरानो भएको मानिन्छ ।

तिजका गीतमा माइती प्रतिको माया यसरी प्रकट गरिएको छ हुन्छ :

डाँरामा लाइदेउ वर र पिपलु गौरामा पच्यो छाया बरिलै

माइतमा मैले आमा छोडी आए र बाटोमा लाग्यो माया बरिलै

कतै कतै नारी सौन्दर्यको वर्णन पनि यस्ता गीतमा गरिएको हुन्छ । तिनमा नारीको सौन्दर्य बढाउन प्रयोग गरिने गहना र पोसाकहरूको वर्णन गरिएको हुन्छ ।

हेर पारि डाँडाबाट भरिन् चेली जैकला

शिरै लाउने शिरफुल भलकाउँदै

त्यै लगाउने शिरफुलको सूर्य जस्तो ज्योति

चौपारीमा भलमल पारिन् बरिलै

यस बाहेक प्रेमी र प्रेमिकाका बिचका माया पिरतीका कुराहरू पनि तिजका गीतमा समेटिएका हुन्छन् । पतिपत्नी बिचका माया र पीडाहरू पनि तिज गीतमा प्रशस्त पाइन्छन् ।

यसरी पौराणिक, सामाजिक, प्राकृतिक र व्यक्तिगत विषयवस्तु भएका हाँसो खुःसी, रोदन, वेदना, करुणा, गुनासो, माया, प्रेम जस्ता संवेगहरूका साथै देशभक्ति र समसामयिक राजनीतिक जस्ता विभिन्न विषयवस्तु पूर्वी सल्यानका पर्वगीतमा पाउन सकिन्छ ।

५.२.२.२ लय वा भाकाको आधारमा विश्लेषण

लयका आधारमा पूर्वी क्षेत्रका तिज गीतहरू प्रायः मध्य, लय र द्रुत लयका हुन्छन् । भ्याउरे, तालमा र कहरूवा तालमा यस्ता गीतहरू गाइन्छन् । तिजका गीतलाई गाउने भाकालाई तिज गीतका भाका भन्न सकिन्छ । तिहारमा गाइने देउसी र भैली गीतलाई गाउने वा भाका हाले नभनी भट्ट्याउने भनिन्छ । यसरी देउसी भैलीमा एक जना मिठो र सुरिलो स्वर भएको व्यक्तिले भट्ट्याउने र अरू सबैले सामूहिक रूपमा देउसी रे वा भैली भन्ने गरेर लयबद्ध र तालबद्ध स्वर निकालिन्छ ।

आजभोलिको बदलिँदो सामाजिक परम्परा अनुसार तिज र देउसी भैली जस्ता गीतहरूमा पनि भ्याउरे, भाँप्रे, टप्पा, सिडारु र चलन चल्तीमा रहेका दोहरी गीतका भाका समावेश गरेर समेत पर्व गीतहरू गाउने गरिएको पाइन्छ ।

५.२.२.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

पर्व गीतहरू सङ्गीतात्मकताको हिसाबले बढी महत्त्वपूर्ण मानिन्छन् । यी गीतहरू सङ्गीतको प्रयोगका आधारमा पूर्ण साङ्गीतिक गीतहरू हुन् । तिजका गीतहरू गाएर नाच्ने गरिन्छ । महिलाहरूले नयाँ साडी, लुगा, फाटो, गर गहना पहिरिएर, कोरीवाटी गरी चिटिक्क परेर नयाँ लुगा-कपडा किनेर लगाउने र नाच्दै गाउँदै रमाउँदै गर्दा वातावरण पूर्ण सङ्गीतमय बन्ने गर्दछ ।

तिजका गीतमा मादल, खैँजडी र बाँसुरी बाजा बनाइन्छन् । तिहारमा गाइने देउसीमा भैली गीत मादल, दमाहा, ट्याम्की, बाँसुरी, खैँजडी र चाप जस्ता बाजाहरू बजाएर नाच्दै, गाउँदै अभिनय गर्ने गरिन्छ ।

यसरी नाच्दै गर्दा अभिनय सहित हाउभाउ प्रस्तुत गर्ने प्रचलन पनि यहाँ रहेकाले सङ्गीतका वाद्य साधन, नृत्य र गायन सबैको पूर्णता पूर्वी सल्यानका पर्व गीतहरूमा पाइन्छ ।

५.२.२.४ भाषाका आधारमा विश्लेषण

पूर्वी सल्यानमा बोलिने भाषा भाषिकाको छाप यहाँका विभिन्न पर्व गीतमा पाइन्छ । तिज गीत नारीले गाउने हुँदा तिनमा स्त्री लिङ्गीय शब्द प्रयोग हुन्छन् । जस्तै ;

केनेई थे 'किनेकी थिए'
लाकी छु 'लाएकी छु'
भन्याइ थित 'भनेकी थिई' ।

स्थानीय भाषिकाका अन्य शब्दहरू पनि तिजका गीतमा प्रयुक्त भएका हुन्छन् ।

जस्तै ; डाँरा 'डाँडा'
गैरा 'गहिरा'
लाइगो 'लागि हाल्यो'
चौपारी 'चौतारी'
पिपलु 'पिपलको रुख'

तिजका गीतहरूमा 'ए मेरी सङ्गीनी' र 'बरिलै' जस्ता थैगोहरू प्रयोग गरिन्छन् ।

देउसी र भैली गीतमा महिला र पुरुषको सामूहिक स्वर हुने भएकाले यस्ता गीतहरूको क्रियापदमा लिङ्गीय भेद हुँदैन । यस्ता गीत गाउँदा एउटा वा बढीमा दुई ओटा शब्द प्रयोग हुने भएकाले त्यही शब्दलाई लामो लेग्रो तानेर गाइन्छ । यहाँ शब्दोच्चारण दृष्टिले प्रयुक्त शब्दहरू यस प्रकारका छन् :

तियार/दवार 'तिहार'
महादेउ 'महादेव'
रच्या 'रचे'
मान्तम 'पृथ्वी'

| | |
|----------|---------------|
| कसै | ‘कसरी’ |
| ठाट्या | ‘ठाँटे’ |
| सुईन | ‘सपना’ |
| हरलै | ‘समापन भयो’ । |
| रङ्गी | ‘रङ्गिलो’ |
| बस्न्या | ‘बस्ने’ |
| मनवा | ‘मानव’ |
| मच्यास् | ‘मरेस्’ |
| फुलुमाला | ‘फुलमाला’ |
| यिनीताक | ‘यही समय’ |

यसरी पूर्वी सल्यानको आफ्नै मौलिक भाषिका प्रयोग गरिएका यहाँका पर्व गीतहरू छोटो मिठा र आकर्षक देखिन्छन् ।

५.२.२.५ स्थानीयताका आधारमा

गीतमा स्थानीयपन समेटिनु नै स्थानीयता हो । यसरी लोकगीतमा स्थानीयपन आवश्यक हुन्छ । यहाँका पर्वगीतमा स्थानीय विद्यमान छन् ।

जस्तै; ब्याने उठी पानी भर्न जाँदा
हजारी फुलले बाटो छेकेको
त्यसै गरी
खैराबाड देउतीका सुनैको धुरी
मलाई पनि लैजाउ राम् अमरापुरी
छायाँक्षेत्र देउतीलाई फुलपाती चढाम्
वैकुण्ठ जानलाई ढोका खोल राम

माथिका गीतहरूमा 'हजारी' भनेको स्थानीय भाषामा 'सयपत्री' फुल हो । 'खैराबाड' र 'छाया क्षेत्र' स्थानीय देउतीका थान वा मन्दिर हुन् । यसरी त्यहाँका गीतहरूको स्थानीयकरण गरिएको पाइन्छ । भाषिकागत, स्थानगत र लोक विश्वासगत आधारमा यहाँका गीतमा पूर्वी सत्यानको स्थानीयता भल्किएको हुन्छ ।

देउसी भैली गीतमा पनि स्थानीयपन भेट्न सकिन्छ ।

लिता क्याले खाला - भैली
लिता क्याले लाउला - भैली
लिता भन्यार - भैली
हे सडीयौ - भैली
आहै भन भन भाइ हो - देउसी रे

यसरी यहाँ लिता, क्या, क्याले, सडीयौ भन्यार जस्ता शब्दहरूमा स्थानीयता विद्यमान छ ।

५.२.२.६ लोकतत्त्वका आधारमा

यहाँका लोकगीतमा पाइने लोक विश्वास र लोकमान्यता नै लोक तत्त्व हुन् । तलका तिज र देउसी गीतहरू लोकतत्त्व दृष्टिले उदाहरणीय छन् :

तिजमा माइत जाउँला भनी
शिरफुल किनेइ थे
अग्लो डाँरा हेरी मनै रुवाए
न त लिन आयौ न त चिठी पठायौ
माया मारेऊ मेरी आमा एउटी छोरीलाई
बिहानै उठेर भागी जान्छु भनेको
त्यो ठारी खोलाले बगाई लइगो

भान्साकोठा जाँदाखेरि रैछ, खाजा भुटेको
त्यो घरमा छोरी दिन्या आँखा फुटेको

लिता यसो घरमा - भैली

लिता अजघट्ट/गजघट्ट - भैली

लिता काखै छोरा/ल्हासै घोरा - भैली

लिता होइर जाओस् - भैली

माथिका गीतहरूमा लोक मानसका वास्तविक तत्त्वहरू समेटिएका छन् । साथै तिज गीतमा गाएर नाचेर व्रत बसेर पूजापाठ गरेमा राम्रो पति पाइने, पति धेरै वर्ष बाँच्ने र देउसी भैलीमा आसिक दिँदा घरबेटीलाई सोचेको आँटेको पुग्ने जस्ता लोक विश्वास भएकाले यी गीतहरूमा प्रशस्त लोकतत्त्वहरू विद्यमान हुन्छन् । पृथ्वी रचेको र महादेवले खरानी एवम् कुखुराको सुलीवाट मान्छे बनाएको लोक विश्वास पनि देउसी र भैली गीतमा छ ।

५.२.३ कर्मगीतको विश्लेषण

कर्म भनेको काम वा कार्य हो । कुनै पनि कार्य वा काम गर्दै गर्दा संगसंगै गाइने गीतहरूलाई कर्म गीत भनिन्छ । गाउँघरमा विशेष गरी खेतीपातीमा रोपाइँ गर्दा, गोडमेल गर्दा, अन्नबाली भित्र्याउँदा वा दाइँ हाल्दा यस्ता कर्म गीतहरू गाउने गरेको पाइन्छ । यस अन्तर्गत असारे गीत, रोपाइँ गीत, गोडेलो गीत, भारी गीत र दाइ गीत आदि पर्दछन् ।

सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा अन्य क्षेत्रको तुलनामा कर्मगीतहरू कमै पाइन्छन् । पूर्वी सल्यानको दार्माकोट, ढाकाडम लगायतका ठाउँमा धान खेती गर्ने खेतहरू रहेकोले यहाँ रोपाइँको भारी गाउने प्रचलन थियो । तर हाल आएर त्यो भारी गीत पनि विस्तारै लोपोन्मुख अवस्थामा छ । भारी गीत मात्र कर्मगीतका रूपमा यस शोधपत्रमा सङ्कलन गरिएकाले भारी गीतको विश्लेषण हुन आवश्यक छ ।

भारी गीत विशेष गरी धान रोप्दा हली, बाउसे र रोपारहरूको जमघटमा सबैले मिलेर धान रोप्दै गाउँदै गर्ने गीत हो । 'भारी' गीतको विश्लेषण निम्न आधारमा गर्न सकिन्छ ।

५.२.३.१ विषयवस्तुका आधारमा

भारी गीतको विषयवस्तु अन्न उत्पादन गर्ने भारपातहरू वा बोट बिरुवामा केन्द्रित रहेको पाइन्छ । धानको धेरै पात पलाएर ठुलो बोट बनोस् र धेरै धान फलोस् भन्ने उद्देश्य यस गीतको हुन्छ । रोपाइँमा रोपार, बाउसे, हली आदिको मेहनतले धेरै धान फल्ने, सो धान भारीमा राख्ने र वर्ष दिन भरिमा सबैले खान, ऐँचोपैँचो चलाउने विहावरु धान्ने जस्ता जन जीविकाका विषयवस्तु यसमा समाविष्ट हुन्छन् ।

भारी गीतमा एक पाते दुई पाते हुँदै बिरुवा हुर्किने अवस्थाको प्रकृति चित्रण, खेतीपाती लगाउने र गोडमेल गर्ने कुराको बयान र अन्न भित्र्याउने जस्ता पद्धतिको पनि चित्रण पाइने भएकोले यस्ता गीतमा सामाजिक विषयवस्तु पनि पाइन्छन् ।

५.२.३.२ लय वा भाकाको आधारमा

जब रोपाइँको दिन सबैले आआफ्नो काम गर्ने साधनको र कामको तयारी गर्छन् तब भारी गीतको सुरुवात गरिन्छ । भारी गीत दुई ओटा समूहमा लामो भाका हालेर तथा सुरिलो स्वर निकालेर सबैले गाउँदा त्यो रोपाईँ गर्ने ठाउँमा सङ्गीतको रौनक छाएको हुन्छ । धान रोप्ने र अन्य सहयोगी सहितको समूहले यो गीत गाउँदा सुरुको समूहले मेलो सार्ने र दोस्रो समूहले यसरी यो गीत गाउँछन् :

| पहिलो समूह | दोस्रो समूह |
|--------------|--------------|
| एकै पाते ५५ | भारी ए |
| दुई पाते ५५ | भारी ए |
| तिनै पाते ५५ | भारी ए |

| | | |
|---------------|------------|---|
| चारै पाते ५५ | भारी | ए |
| पाँचै पाते ५५ | भारी | ए |

माथिको गीतको विवरणमा दिइएको (५) चिह्नले स्वर लम्ब्याउने भन्ने अर्थ दिन्छ, जसले गर्दा भारीको भाकालाई लयात्मक बनाउन सहयोग पुग्दछ । यसरी भारी गीतलाई बिलम्बित लयमा स्वरबद्ध गरिन्छ ।

यो गीत गाउँदै गर्दा बिच-बिचमा रमाइलो गर्ने, हिलो छ्याप्ने हली बाउसे र रोपारबिच प्रतिस्पर्धा गर्ने चलन पनि छ । गीत गाउँदै रमाइलो गर्दै काम समापन गर्दा गायनलाई लम्ब्याउने गरिन्छ । अन्तिममा रोपाइ सकि सकेपछि जसको खेतमा धान रोपियो उसैको घरमा सँगै भारी गाउँदै गइन्छ । पुरुष समूहले हुटिङ गर्ने र हौसला प्रदान गर्ने गर्दछन् । घरमा पुगिसकेपछि टीकाटालो लाउने, भोजभतेर गर्ने र रातभरि नाचगान गर्ने पनि गरिन्छ ।

५.२.३.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

सङ्गीतको हिसाबले यस्ता भारी गीतहरूमा कुनै बाजागाजा प्रयोग गरिँदैन किनकि रोपारहरूको हात हातमा बिउका मुठा बाउसेका हातमा फरुवा, कोदाली र हलीको हातमा हलो हुन्छन् । बरु साँभमा घरमा गएर भने मादल बजाएर नाँचिन्छ ।

धान रोप्दै गर्दा खेतमा भारी गाइ रहेको अवस्थामा भने यसमा कुनै वाद्ययन्त्रको प्रयोग र नाँच्ने गरिएको पाइँदैन । यो सङ्गीतको गायन विधासँग सम्बन्धित छ । यसमा स्वरको आरोह अवरोहलाई नै प्रमुख मानिन्छ । अन्य गीतमा जस्तो नाच्नु र हाउ-भाउ प्रस्तुत गर्नुको सट्टा यस गीतमा काम गर्ने गरिन्छ । यसको एउटै उद्देश्य रोपारहरूको स्वर सुन्दै रमाइलो वातावरणमा काम गरियोस् र दुःखलाई भुल्ल सकियोस् भन्ने हुन्छ । त्यसैले काम गर्न समय बिताउने गीतका रूपमा यसलाई लिन सकिन्छ ।

५.२.३.४ भाषाको आधारमा विश्लेषण

भारी गीतमा टुक्र्याइएको वाक्यका रूपमा अर्थपूर्ण भाव अभिव्यक्त गरिएको हुन्छ । यसमा स्थानीय शब्दहरूको प्रयोगले खसानी उपभाषिकाको मौलिक प्रयोग गरिएको हुन्छ ।

जस्तो ; ऐँचो पैँचो ‘सरसापट’
 ब्यावरु विवाह
 तिनै पात्या ‘तीन पात भएको

५.२.३.५ स्थानीयताका आधारमा

स्थानीयताको दृष्टिले भारी गीत एक प्रमुख गीत हो । भारी गीत स्थानीय जन जीविकामा आधारित छ । स्थानीय रूपमा खेतीपातीमा सङ्गीसार्थी मिलेर सँगै काम गर्नु पर्ने भएकाले आफ्नै स्थानीय चालचलन, रीतिथिति र परम्परा यस गीतमा समेटिएको छ । मूलतः कसरी खेती गर्ने र काम समापन गर्ने भने बारे स्थानीय तरिकाले यहाँ वर्णन गरिएको हुन्छ ।

५.२.३.६ लोकतत्त्वका आधारमा

यहाँको कृषि प्रधान समाजमा प्रचलित भारी गीतमा धेरै धान फलाउने विश्वास प्रकट भएको छ । धानको एक पात दुई पात हुँदै पात लाग्ने र धेरै धान फल्ने धारणा यहाँ अभिव्यक्त छ । खेतीपातीमा रोपाइँ गोडाइँदेखि लिएर धान कुट्टा यहाँको चलन चाँजोबारे पनि यहाँ जानकारी उपलब्ध छ ।

यसरी धान राम्रो फलाएर ऐँचोपैँचो र विवाह आदिका काम टार्ने उद्देश्यमा धान खेतीलाई यहाँको लोकले दिने महत्त्व प्रतिविम्बित छ । त्यसैले भारी गीत गाएर धेरै धान फल्ने र मेहनतको फल मिठो हुने भन्ने जस्ता लोक विश्वास भारी गीतमा पाइन्छन् ।

५.२.४ बालगीतको विश्लेषण

बाल भनेको सानो वा कम उमेरको बच्चा हो । अतः बालकले गाउने गीतलाई बालगीत भनिन्छ । यहाँ बच्चाका लागि रचना गरिएका बच्चाकै लागि गाइने गीतहरू दृबालगीत अन्तर्गत पर्दछन् । परापूर्व कालदेखि ससाना नानीबाबुहरू रुँदा आमाबुबाको कार्य व्यस्तताका कारण तिनीहरूलाई भुलाउन र फकाउन केही साना जीवजनावरहरूसँग सम्बन्धित शब्दहरू जोडेर गीत बनाउने गरिएको पाइन्छ । विशेष गरी सल्यानमा प्रचलित यस्ता गीतहरू माछा, भ्यागुतो, मुसो र बिरालोसँग बढी सम्बन्धित छन् । त्यस्ता जनावरका वर्णन गरिएका बालगीतका केही नमुना यस प्रकार छन् :

हो हो बाबु

सुती जाला बाबु

सुत्यो भने बाबु

माछी मारी ल्याइ दिउँला

सुतेन भने बाबु

भ्यागुतो मारी ल्याइ दिउँला

हो हो बाबु हो हो

सुत बाबु सुत

निदाइ जाला बाबु

काफल गोडी कुटुककै

निदाइ जाला लुटुककै

म्याउ म्याउ बिराली

बिराली भन्छ म्याउ म्याउ

अगुल्टो भन्छ उछिट्याउ

चिं मुसी चिं

मुसीले खायो धान

धान खाने मुसाको

उखेलिदुँला कान

माथिका गीतहरूमा पाइने विभिन्न विशेषता र लोकगीतका विविध तत्त्वहरूको आधारमा पूर्वी सल्यानका बाल गीतहरूलाई यसरी विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

५.२.४.१ विषयवस्तुका आधारमा

बालगीतका विषयवस्तु ज्यादै सरल र सहज हुन्छन् । त्यसमा कुनै गहिरो भाव र विषय नभई सामान्य विषयहरू हुन्छन् । बालगीतमा विशेष गरी बालबालिकालाई भुलाउने जस्तै; चिं मुसी चिं म्याउं, घुघुती, कुकुरी काँ जस्ता आवाजलाई चिनाउने र चर्चा गर्ने गरिएको विषयवस्तु पाइन्छ । धान खाने मुसाको कान उखेलेर सजाय दिने प्रसङ्गबाट बालबालिकालाई गल्ती गर्नु राम्रो काम होइन भन्ने धारणा सिकाइन्छ । यसरी मुसा, बिरालो र कुखुराको भाले आदिको चर्चा गरिएका हुनाले यस्ता गीतबाट बालबालिकाको सुनाइ, बोलाइ र बुझ्ने क्षमताको समेत विकास हुन्छ ।

समग्रमा यस्ता गीतहरूमा बाल मनोविज्ञानसँग सम्बन्धित विषयवस्तु समाविष्ट गरिएको हुन्छ । साथसाथै हाम्रो वरपरको वातावरण सम्बन्धी जानकारी र प्रकृतिको चित्रण गरिएको हुन्छ । यसरी बालगीतमा मनोवैज्ञानिक, प्राकृतिक र वातावरणीय विषय लगायत विरुवा, जनावर आदिको वर्णन गरिएको हुन्छ ।

५.२.४.२ लय वा भाकाको आधारमा विश्लेषण

बालबालिका प्राकृतिक र वातावरणीय कारणले अपरिपक्व हुनु स्वाभाविक हो । यसले गर्दा उनीहरूसँग जटिल र कठिन विषयको ग्रहण गर्ने क्षमता कमजोर हुने

भएकाले बालगीतका लय र भाका पनि सबैले सहजै बुझ्न सक्ने सरल र सामान्य किसिमका हुन्छन् । यस्ता गीतहरू सामूहिक र एकल रूपमा गाउन सकिन्छ । लामाका उच्चारणमा लोकगीतका विभिन्न भाकाहरू निकाली लोकलय निर्माण गरिएका हुन्छन् । ठाउँ अनुसार र व्यक्ति अनुसार बालगीतलाई लोकलयमा गाउने गरिन्छ ।

५.२.४.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

बालगीतहरू वाद्य रहित र वाद्य सहित दुई प्रकारले गाउन सकिन्छ । एकल रूपमा आमाले, बाबाले वा अन्य व्यक्तिले बालबालिकालाई काखीमा च्यापेर गाउने गर्दछन् भने स्कुलमा साना बालबालिकालाई शिक्षकहरूले पनि यस्ता गीतहरू सिकाउने गर्दछन् । यसरी गीत गाउँदै नाच्दै नृत्यमय र सङ्गीतमय रूपमा पनि यस्ता गीतहरू प्रस्तुत गरिन्छन् । जस्तै;

ताराबाजी लै लै
मामा आए घोडा
माइजू आइन् डोली

गीतलाई ताली बजाएर पनि गाउने प्रचलन छ । कतिपय बालगीतलाई हाउभाउ गर्दै हारमोनियम, मादल, बाँसुरी तबला ढोलकमा पनि गाइने गरिन्छ । आज भोलि विभिन्न बाल कार्यक्रममा बालगीत र बालनृत्य प्रस्तुत गर्ने चलन पनि बनेको छ । यसरी गायन, वाद्य वादन र नृत्यका हिसाबले बालगीतमा साङ्गीतिकता पनि भल्किएको हुन्छ ।

५.२.४.४ भाषाका आधारमा विश्लेषण

बालगीतको भाषालाई शब्द प्रयोग र शब्दोच्चारणका आधारमा विश्लेषण गर्न सकिन्छ । शब्दोच्चारणका दृष्टिले नेपाली भाषाको खसानी उपभाषिका बोल्ने गरिन्छ । प्रस्तुत बालगीतमा पाइने शब्दहरू यस प्रकार छन् :

| | |
|--------|-----------|
| ब्याइछ | ‘जन्माइछ’ |
| भाल्या | ‘भाले’ |
| डाँरो | ‘डाँडो’ |
| बुरी | ‘बुढी’ |

कतिपय बालगीतमा पुलिङ्गीय शब्दहरूलाई स्त्रिलिङ्गी, लघुतावाची र स्नेहवाची बनाइन्छ । त्यस्ता शब्दको प्रयोग निम्नानुसार छ :

| | |
|--------|----------|
| विरालो | ‘विराली’ |
| मुसो | ‘मुसी’ |
| घुघुतो | ‘घुघुती’ |
| जाउला | ‘जाउली’ |

समग्रमा बालगीतमा प्रयोग हुने भाषा सामान्य, सहज र सरल हुन्छ ।

५.२.४.५ स्थानीयताका आधारमा

बालगीतहरू प्रायः सबै ठाउँमा मिल्दाजुल्दा हुने भएकोले यसमा स्थानीयपन भन्दा बढी साझापन भल्किएको हुन्छ । भाषाको प्रयोगका आधारमा शब्दहरूमा भने स्थानीयपन भेट्न सकिन्छ । सुति जाला, भाल्या वास्यो, मुसीले खायो धान जस्ता प्रयोगले त्यहाँको स्थानीयता प्रचलन, खेतीपाती गर्ने र वनजंगलमा घुघुती, परेवा आदि चराचुरुङ्गी कराउने जस्ता शब्दले स्थानीय प्राकृतिक वातावरणको पनि चित्रण गरेको पाइन्छ ।

घुघुती बासुती
 लैजा लैजा परेवा डारै कटाइदे
 चुँगुरी मुसी ब्याइछ

यी शब्दहरूमा पूर्वी सल्यानको भाषा, प्रकृति र जन जीविकासँग बालसहभागिता बढाउने आधारमा स्थानीयकरण गरिएको पाइन्छ ।

५.२.४.६ लोकतत्त्वका आधारमा

पूर्वी सल्यान आसपासको जनजीवन कृषि प्रणालीमा आधारित भएकोले यस क्षेत्रमा पाइने बालगीतमा विशेष गरी त्यहाँका लोक मानसका भावनाहरू प्रवाह भइरहेका हुन्छन् । खेतीपातीको कामकाजमा व्यस्त हुनु पर्ने विवशताले साना छोराछोरीलाई सुताएर छोड्नु पर्ने हुन्छ । यसका निमित्त माछा र भ्यागुताप्रतिको स्थानीय लोकधारणा यसरी प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ :

सुत्यो भने बाबुलाई
माछी मारी ल्याइ दिउंला
सुतेन भने बाबु
भ्यागुतो मारी ल्याई दिउला

५.२.५ बाह्रमासे गीतको विश्लेषण

कुनै विशेष अवसरका कारणले नभई बाह्रै महिना जुनसुकै उमेर समूहका मानिसले गाउने गीतलाई बाह्रमासे गीत भनिन्छ । त्यस्ता बाह्रमासे गीतहरू आ-आफ्नो भौगोलिक, सांस्कृतिक र मौलिक चालचलन र रीतिस्थिति अनुसार विभिन्न ठाउँमा विभिन्न प्रकारले गुन्जइ रहेका हुन्छन् । टप्पा, सिडारु, ख्याली गीतले विशेष गरी प्रसिद्ध रहेको सल्यान जिल्लामा अन्य विविध प्रकारका बाह्रमासे गीतहरू पनि गाउने गरेको पाइन्छ । प्रस्तुत शोध क्षेत्रमा पाइने बाह्रमासा, घाउटा, ठारी भाका, बनगारी, ख्याली, टप्पा, भ्याउरे, चारगाउँले, मायै, मैतालु, साँइलैजी, स्यानीमाया लामो भाका, सिडारु, लामसुरे मालै र सोरठी गरी चौध प्रकारका बाह्रमासे गीतको यहाँ तल विभिन्न आधारमा विश्लेषण गरिएको छ :

५.२.५.१ विषयवस्तुका आधारमा

बाह्रमासे गीतहरूमा के-कस्ता विषयवस्तुहरू समेटिएका हुन्छन् र ती विषयवस्तुहरूको सन्देश, महत्त्व र प्रकार्य के छ भन्ने कुरासँग आधारित भई यहाँ विश्लेषण गरिएको छ । चौध किसिमका बाह्रमासे गीतहरूको यहाँ छुट्टाछुट्टै अनुच्छेदगत हिसाबले क्रमशः चर्चा गरिएको छ ।

बाह्रमासे गीत अन्तर्गत 'बाह्रमासा' गीतले बाह्रै महिनाको विशेषता झल्काएको हुन्छ । यसमा ऋतु र महिनाको चर्चा गरिन्छ । बाह्रमासा गीतको पहिलो पङ्क्तिमा महिना र त्यो महिनामा हुने प्राकृतिक विशेषता समावेश भएको हुन्छ । दोस्रो चरणमा त्यसको असर जोडिएको हुन्छ । जस्तै;

चैतको मास रुख भन्थ्यो पात

हरिराम चन्द्र मन छैन साथ

यसै गरी बाह्रमासा गीतमा वैशाखमा रुखमा पात लागेकाले मन साथमा भएको, जेठमा छोटो रात भएकाले रूप धेरै भएको, असारमा दही चिउरा खाने र देउतिर्थ जाने, साउनमा भिर पग्लने, पहिरो जाने र खिर खानुपर्ने, भदौमा गङ्गा नदीहरू उर्लने र मन पनि चङ्गा हुने, असोजमा काँस फुले उक्त फुलले सबैलाई हँसाउने, कात्तिकमा धान पहेंलो हुने गरी फूले र चाडपर्व मान्ने, मङ्सिरमा र पुसमा लामा रात हुने, बिस्तरामा जाडाले गर्दा सुत्नु पर्ने माघ र फागुनमा दिनरात बराबर हुने र एक वर्ष पुरा हुने विषयवस्तु गीत बनाई गाउने गरिन्छ । प्रस्तुत बाह्रमासा गीतलाई पौराणिक चालचलनको चर्चा प्रकृति वर्णन, धार्मिक आदि विषयवस्तु भएको गीत मान्न सकिन्छ ।

घाउटा गीत पूर्वी सल्यानको ज्यादै पुरानो लोकसम्पत्ति मानिन्छ । घाउटाले मस्तिष्कमा धेरै सोच्ने विकास गराउनुका साथै लयात्मक र व्यङ्ग्यात्मक ढङ्गले मनोरन्जन दिने गर्दछन् । यसरी यस्ता गीतमा गीतकै मार्फत एकले अर्को बौद्धिक

अङ्को थाप्ने वा प्रश्न सोध्ने गर्दछ भने अर्को घाउटा गाउने व्यक्तिले त्यसभन्दा भन्नु बढी घुमाउरो उत्तर दिने गर्दछ । यसमा प्रायः बौद्धिक चेतनामूलक भावलाई प्रकृति, तत्कालीन समाज र परिवेश सँग जोडेर कलात्मक र लयात्मक ढङ्गले प्रश्न गर्ने गरिन्छ, कतिपय घाउटाहरू असम्भव कुराहरूको वर्णन गर्दै कौतूहल मेटाउने खालका हुन्छन् । जस्तै;

केटी : लैजा जोगी क्या आछ्याउलाई चितलैको छाला

यता नआ काला कौवा कालो सरिजाला

केटा : दुई हात चाँदीका बाला सिरान टल्किन्छन्

यता नआ भल्लाउरी ए गाईभैसा जल्किन्छन् ।

माथिको गीतमा शरीरको रङ कालो भएकाले केटा र केटीले दोहरी भूयाँगाका रूपमा जबाफ-सवाल गरेको पाइन्छ । यसमा व्यङ्ग्यसँगैको पनि प्रहार गरिएको छ । अर्को खाले असम्भव घाउटा पनि पूर्वी सल्यानमा प्रचलित पाइन्छ । जस्तै;

हली त जर्मनीको छैन अर्नी गङ्गो खेत

कानैमाथि जुवालीए बल्ल गाईका पेट

यसमा तत्कालीन रीतिरिवाजलाई व्यङ्ग्य गर्दै असम्भव भावहरू प्रकट गरिएको छ ।

ठारी भाका भन्नाले त्यहाँका जानकारहरूका अनुसार बाबुबाजेका पालामा विभिन्न अवसरले केटाकेटी भेट हुँदा बनमा घाँस काट्न जाँदा र एकलै ग्वाला जाँदा उभिएर ठाडो स्वरमा गाइने भाका हो । यसलाई एकलै गाउँदा विभिन्न शब्दलाई सुरिलो स्वरले लयबद्ध गरेर रौनकता सहित गाउने गरिन्छ भने तन्नेरी तरुनी भेट हुँदा यही ठारी भाकामा बाफ लाग्ने वा दोहरी खेल्ने पनि गरिन्छ । यस्तो गीत गाएर ३ दिन देखि ७ दिनसम्म पुऱ्याएको कुरा बाबुबाजेले यस क्षेत्रमा अभै पनि गर्दछन् । प्रस्तुत शोधमा ढाकाडम २ र ढाकाडम ४ को ठारी भाकाको विषयवस्तु विश्लेषण गरिएको छ ।

‘ठारी भाका’ मा विभिन्न पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक र तत्कालीन परिवेशको चित्र उतारिएको हुन्छ । यसमा गहिरो मायाप्रेमको भावलाई यसरी प्रस्तुत गरिएको हुन्छ :

आयो जुम्ली बस्यो बगर पानी काँ खानेइ हो
हार मस मट्टीमा भिज्यो माया काँ जानेइ हो ।

एकता स्वाउन्या आँटीघर भन् स्वाने अर्गल
रसी माया बसी लाउँला भेट भयो भर्कल

माथिका गीतहरूमा त्यति बेला जुम्ली सल्यानतिर तेल लाली पाखी आदि सामानहरू बेचबिखन गर्न आएको तत्कालीन प्रसङ्गलाई बगरमा बसेको र पानी खाने ठाउँ थाहा नपाएको प्रसङ्ग मरेपछि हारमासु माटामा भिज्ने तर माया कहाँ जान्छ थाहा हुँदैन भनेर मायाप्रेमको विषयवस्तु पनि प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसै गरी तत्कालीन आँटीघर, अर्गलको वयान गर्दै आलङ्कारिक रूपमा मायालुको रूपको चर्चा रसीबसी विस्तारै माया लाउँला भनेर स्वागत गरिएको पाइन्छ । यसै गरी कर्मलाई दोष लगाइएका व्यक्तिगत विषय “दुधभन्दा कुराउनी मिठो भैसी बगाइलेइको क्या करिमा ल्याइछु मैले पानी पखालेइको” जस्ता भनाइले प्रस्तुत गरेको पाइन्छ ।

‘बनगारी’ गीतलाई कुरकुटी वा ‘कुरकुती’ पनि भन्ने गरिन्छ । प्राचीन कालमा युवायुवतीहरू पश्चिम सल्यान बनगारमा ग्वाला जाँदा केतुकीको बला (सुकेको) सानो गजारीले स्वर मिलाउँदै दोहर गीतमा जबाफ सबाल गर्ने र केही युवाहरू फूर्तीका साथ नाच्ने गीत भएकोले बन ला गा दी (बनको भाका) भन्ने अर्थमा बनगादी गीत भनिएको हो भन्ने भनाइ छ ।^{२०}

काला कुतैले छ मैना जागिर खाँया
दैया मच्यो आफ्नै कालले म मरे सुतैले

^{२०} खर्क बहादुर बुढा, “मध्य पश्चिमका लोकभाका”, पृ. ५ ।

उक्त गीतलाई प्रदीप रिमालले रेडियो नेपालमा रेकर्ड गराई राष्ट्रिय रूपमा चर्चित बनाएको पाइन्छ । 'माइती घर' नामक चलचित्रमा पनि यसको प्रयोग भएको छ ।

यस शोधपत्रमा दार्माकोट गा.वि.स.को बनगारी गीतमा कलौटे जातको कालो भैसी र नर्थम जातको राँगो पालेको गोठालाले 'सुभ्या' भयाई चौख्या थली पैला प्रथमैको भनेर नाच्ने थलो वा ठाउँप्रति शुभेच्छा व्यक्त गरेको हुन्छ र बनगारी नाचको सुरुवात गरेको पाइन्छ । त्यसपछि गाइने अन्य गीतहरू यस प्रकार छन् :

दार्माकोट दसैंघर घुमाई लाइदेऊ बान्न

पसिग्या फुलबारीभिन्न रसु नखाई जान्न

सालको रुख चिप्लो हुन्छ काट गुवाला पाइती

थरको छोरो पापी हुन्छ धरम् गरेइ माइती

दुई जना नेपाली सिपाई बम्बैबाट आउनुया

उस्तैका त म नजान्या भनेको नपाउनुया

माथिको बनगारी गीतमा साल, दार्माकोट, फुलबारी, बम्बै आदि शब्दले प्राकृतिक विषयवस्तु, दसैंघर, सिपाइ, माइती जस्ता शब्दले सामाजिक चालचलन र परिवेशका विषयवस्तुका साथै माया प्रेमका भाव पनि प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । नारी वेदना र नारी मनोकामना पनि यहाँ प्रकट गरिएको छ । यसरी ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक र प्राकृतिक विषयवस्तु बनगारी गीतमा समावेश गरिएका हुन्छन् ।

सल्यान जिल्लाका विभिन्न गाउँहरूमा गाइने नाचिने ख्याली गीतमा कमीमा दुई जना पुरुषहरूले जोडी बनाएर सँगसँगै नाच्ने गर्दछन् । यस गीतमा विषयवस्तु, गीतपक्ष र भावपक्षभन्दा बढी नृत्यलाई जोड दिइन्छ । यस गीतमा आफ्नो गाउँ

ठाउँको विभिन्न विषयवस्तुको बयान र आफ्नो मनको भावना व्यक्त गरिन्छ ।
दमाचौरको ख्याली भुमरामा धर्मकर्म र विद्याकी देवी सरस्वतीको चर्चा गरिएको
पाइन्छ । कोटमौलाको ख्यालीमा आफ्नो गाउँठाउँको प्रकृति र चालचलनको बयान
गर्दै मनको भावना व्यक्त गरिएको छ भने उता दार्माकोटमा गाइने ख्यालीमा पुरानो
काली नैकेनीको वर्णन प्रस्तुत छ :

दमाचौर:

बानैबाले बाँनौला नरसिँहाको जापैले बानौँला
वारि जमुना पारि जमुना माझैँ सरोवर देवीयाको थान
कोटमौला:

गुवालाले भैसी लइगो निगाल पानी भिरमा
कताबाट याउनु भयो रङ्गी रुमाल शिरमा

दार्माकोट:

यस लेक परिबाट तिनै तले पोखरी
हुइबाट उबाजियो काली नैकेनी
काली नैकेनी हो कानी नैकेनी
हुइबाट उबाजियो काली नैकेनी

यसरी पूर्वी सल्यानका सबै किसिमका विभिन्न ठाउँमा प्रचलनमा रहेका ख्याली
गीतहरू पौराणिक, धार्मिक, प्राकृतिक र व्यक्तिगत मनोभावना आदि विषयवस्तु
समेटिएको पाइन्छ ।

सानो सानो खोलीमा पानी तुरुक्कै
सम्भ्र्यौली बाला साईँ रोउली धुरुक्कै

सानो सानो खोलीमा जौंको पिसान
बान भाइ पगरी ढल्क्यो निसान

राजा सवारी भई घोरी ल्यायो टाँगन
उठिजाऊ चेली बरालि जाउ आँगन

राग्यापाट्या कामली पटरङ्ग्या गुदरी हो
त्रिपासा खरर

आफू राजा नेपालैमा हो दुतिनाँलाई थरर

ख्याली गीत जस्तै 'टप्पा' गीतका विषयवस्तु पनि ठाउँ अनुसार फरक-फरक हुन सक्छन् । टप्पा गीतलाई कतै कतै तपका गीत पनि भनिन्छ । नाच र तालको हिसाबले टप्पा गीत र बनगारी मिल्दाजुल्दा हुन्छन् ।

यहाँ शिवरथ, बाँफुखोला र कोटमौलाका छुट्टाछुट्टै टप्पा गीतहरू सङ्कलन गरिएका छन् । विषयवस्तुका आधारमा यी दुबै ठाउँका विषयवस्तुलाई केलाउँदा उस्तै उस्तै छन् तर सैद्धान्तिक रूपमा भन्नु पर्दा विभिन्न स्थानको चर्चा, प्रकृति चित्रण, कर्म, वेदना दुःख पीडा र इच्छा चाहनालाई मुख्य काव्य तत्त्वको रूपमा प्रयोग गरिएको छ । जस्तै;

दाङको घारी दमारैमा लिंगीलैच्या साल
एक मन्या पछुतो हुन्छ लैजा दुईलाई काल

डोकी बुन्देऊ माइला दाजु, हरियो बाँसैको
माया लाग्या साई आइ जानु निउ पारी घाँसैको

कुदुमा कुदाउन लाइग्या जाजरकोटी घोरा
माइत छैन आमाबुवा घर छैनन् जोरा

यसरी पूर्वी सल्यानका 'टप्पा' गीतमा गाउँठाउँको वर्णन गर्ने क्रममा छिमेकी जिल्ला रोल्पा, जाजरकोट, दाङ, जुम्ला आदि आसपासका जिल्लाको पनि वर्णन गरिएको पाइन्छ भने यस्ता टप्पा गीतको मुख्य औचित्य नाचको तालमा तीव्रता ल्याउने र फूर्ती देखाउनेसँग भएकाले मायाप्रेमलाई नै मुख्य विषयवस्तु बनाई सुख र दुःखका भावना गाउने गरिन्छ । यस्ता टप्पा गीतका विषयवस्तुमा प्राकृतिक वातावरणको जानकारी पाइन्छ । जस्तै;

केटा: कोटमौलाको सुन्तला क्या मिठो रसिलो
मान्छे राम्रो वचन ज्यान राम्रो कसिलो

केटी: मुसीकोटको पानी मिठो रुकुम सिस्ने हिमाल
हिमाल पहाड तराईले भनै राम्रो नेपाल

केटा: माल्नेटा अदुवा राम्रो सल्यान सल्लेरी पाखैले
हिमाल पहाड तराईले भनै राम्रो नेपाल

केटी: रुकुम राम्रो डाँडाकाँडा पोखरी र तालले
यसरी नै जीवनभरि बेर माया जालले

केटा: पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण सीमा मेचीकाली
सगरमाथा गौरव हाम्रो वीर नेपाली

केटी: राष्ट्र राम्रो राजनीतिले शान्ति र शिक्षाले
हाम्रो त देश विग्रि सक्थो आआफ्नो इच्छाले

चुङ्का ख्याली गीतमा 'ख्याली' कै चुङ्का रूपको चर्चा गर्न सकिन्छ । ख्याली गीत अलि लामो मार्मिक भावना विषयवस्तुमा हुन्छ भने चुङ्का ख्याली चञ्चल प्रकृतिको भावना बोकेको गीत हो । यसमा विशेष गरी प्रकृति चित्रण यसरी गरिन्छ :

सानो सानो खोलीमा पानी तुरुक्कै

सम्भ्रयौली बाला साई रोउली धुरुक्कै

खोलीमा बग्ने पानीले मनोरम प्रकृति जनाउँछ भने माया प्रेम सम्भेर रुने माया-प्रेमको गहिरो भावनामा वैयक्त सम्बन्ध अभिव्यक्त छ । त्यसै गरी ऐतिहासिक विषयवस्तु र राजनैतिक विषयवस्तु पनि यसमा समेटिएका हुन्छन् ।

राग्यापाट्या गुँदरी पटरङ्ग्या गुँदरी

त्रिपासा खरर

आँफू राजा नेपालैमा दुनियाँलाई थरर

सबैले मान्ने राजा नेपालैमा भए पनि सबैले उनीबाट डराएर बस्नु पर्ने प्रसङ्ग यहाँ प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ । त्यसैले ख्याली चुङ्का गीतलाई ऐतिहासिक महत्त्व बोकेको गीतका रूपमा पनि अध्ययन गर्न सकिन्छ । ख्याली चुङ्काकै एक गीतमा भनिएको छ :

राष्ट्र राम्रो राजनीतिले शान्ति र शिक्षाले

हाम्रो त देश बिग्रि सक्यो आआफ्नै इच्छाले

राष्ट्रलाई राम्रो पार्ने शान्ति र शिक्षाको महत्त्वमाथि प्रकाश पार्दै हाम्रो देशको राजनीतिक अवस्था बिग्रेको यथार्थलाई यस गीतमा समेटिएको छ ।

टप्पा गीतमा पौराणिक र सामाजिक विषयवस्तु पनि समेट्ने गरिएको पाइन्छ । तत्कालीन जन जीविकाको अवस्थालाई आजको अवस्थसँग तुलना गरेर पनि टप्पा गीत लोकको मुखबाट प्रस्फुटन भइ रहेका छन् । जस्तै;

हजुर बाउको पछि पछि भैंसी गोठ जान्थे

बन मान्छेले छेउबारीका मकै चोरी खान्थे

हाम्रा पुर्खा बाँदर भनी आज थाहा पाएँ

तिनै कुरा समेटेर मैले यो गीत गाएँ

बाजेको पालामा घिउ बेचेर नुन किन्नलाई
चौबिस दिन लाग्थ्यो रे नेपालगन्ज हाट हिन्नलाई
हाम्रो त पालामा घर घरमा मोटर आउने
रिमिक्स पप चाहियो रे टप्पा अब कसले गाउने

यसरी दुई पङ्क्तिमा गाइने टप्पा गीतलाई विषयवस्तु लम्ब्याउनका लागि चार पङ्क्ति बनाई गाउने गरिन्छ । हाम्रा पुर्खा बाँदर भएको हाम्रो ऐतिहासिक परिचय यस गीतमा दिन खोजिएको छ भने धेरै भैंसी पालेर घिउ उत्पादन गर्ने र त्यो उत्पादन गरेको घिउ बेच्न २४ दिन हिँडेर नेपालगन्ज गई नुन किन्ने परम्परा बारे गीतमा वर्णन छ । आजभोली घर घरमै मोटर आउने भएपछि मान्छेले भैंसी पाल्ने, घाँस काट्ने, गोबर सोहर्ने र खेतीपाती लगाउने चलनसँगै आफ्ना मौलिक टप्पा लोकगीत बिसँदै गएको प्रति चासो र चिन्तन गरिएको यथार्थलाई टप्पा गीतको विषयवस्तु बनाउन थालिएको छ ।

पूर्वी सल्यानमा प्रचलनमा रहेका बाह्रमासे गीत अन्तर्गत भ्याउरे गीत वा भाँप्रे गीत पनि एक प्रमुख गीत हो । भ्याउरे गीत विषयवस्तुका आधारले नभई तालका र लयका आधारमा अन्य गीतभन्दा पृथक् जुनसुकै विषयवस्तुमा गाउन सकिने एक चर्चित गीत हो । यसमा छिटो र सरल प्रकारले गीत गाउने र नाच्ने गरिन्छ । यस गीतमा नाच्दा बजाइने मादलको ताल जोसिलो र कठिन बोलहरूमा समेटेर नाचको चटक अनुसार बजाउने गाउने गरिन्छ ।

यस गीतमा युवा युवतीहरू नै बढी रूपमा सहभागी हुने भएकाले मायाप्रेमका भावनाहरू बढी समेटिएका हुन्छन् । तल केही माया प्रेममिलन, बिछोड, हाँसो, रोदन समेटिएका भ्याउरे गीतका नमुना प्रस्तुत छन् :

भाप्रे दोहरी

केटी : छाया थियो घाम लाग्यो घमाइलो

रोदीघरमा गरौं त रमाइलो

तलमाथि दाया र बायाँ छम् छम् छम छम नाचि देऊ निर्माया

केटा : धेरै पछि गाउँ फर्कि आए

उहि मनकी मायालाई भेटाए

भाप्रे दोहरी

केटा : दसैं आयो तिहार आयो फर्कि आयाँ

उही मनकी मायालाई काठमाडौंमा पायाँ

हो हो माया जाने रुकुमको मुसीकोट म जाँदैछु सल्यानको कपुरकोट

केटी : परदेश गयो धन कमाउन फर्की आयौ गाउँमा

मिलन पर्खी बाँचि राछु माया तिम्रै नाउँमा

हो हो माया जाने रुकुमको मुसीकोट म जाँदैछु सल्यानको कपुरकोट

भाप्रे एकल गीत:

असारको मैना रोपेको धान कुन मैना पसाउँछ

एकपल्ट आउँछ अल्लारे बैँश दुनियाँ हँसाउँछ

सँगै बसेर शारदाको किनार

सिँदुरले रङ्गाइ दिउँला तिम्रो निधार

माथिका गीतहरूमा कपुरकोट, मुसीकोट, शारदा जस्ता शब्दले त्यहाँको प्रकृति चित्रण गरेको पाइन्छ, र बिछोड भएका प्रेमी प्रेमिकाबिच मिलन हुँदाको क्षणमा

रोदीघरमा नाचगान गर्ने र मायाप्रेम लगाउने प्रचलन तथा यसरी मायाप्रेममा विश्वास गरेर विवाह गर्ने जस्ता विषयहरू प्रस्तुत छन् ।

पूर्वी सल्यानको लेख पोखरा गा.वि.स.बाट सङ्कलन गरिएको चार गाउँले भाका लोपान्मुख अवस्थामा छ । यो गीत चार गाउँ भन्ने ठाउँबाट गाउँदा गाउँदै यहाँ आइ पुगेको अथवा चार ओटा गाउँका मान्छेहरू एक ठाउँमा जम्मा भएर रमाइलो गर्दै गाउने गरिएको हुन सक्ने स्थानीय स्रोत सहयोगी तुल्सीराम भण्डारीले बताएका हुन् । यस्ता चार गाउँले भाकामा पनि मायाप्रेमका भावनाहरू नै प्रमुख विषयवस्तु बनेका हुन्छन् । यसमा पनि दोहरीका रूपमा गीत गाई केटा केटी एक अर्कालाई नजिक्याउने उद्देश्य राखेको पाइन्छ ।

चार गाउँले गीतका केही अंश निम्न अनुसार छन् :

सुल्या सापी घरै रङ्गो कक्कर मलुक्याउने स्यानीमालै

किन हो पानैको फुल मलाई हलुक्याउने स्यानीमालै

पानी पच्यो जोतामारे घाम लाग्यो तारिके स्यानीमालै

बल्ल ल्याउनु सोइला भाँच्ने जोइ ल्याउनु जारिके स्यानीमालै

माथै गीत दार्माकोट गा.वि.स.बाट सङ्कलन गरिएको हो । यस्तो माथै गीतमा माया शब्दलाई प्रमुख बनाई अरू सबै कुराहरूलाई गौण बनाइन्छ । यसमा विशेष गरी जातीय भेदभाव विरुद्धको विषयवस्तु समेटिएको छ । जस्तै;

माथै जा बैनै जुम्ला पोइल

पोइलमाथै माथै बाटो सरासरी

सरी माथै जातैले साइ ठुला होउला

माया बराबरी

साइलैजी, स्यानीमाया, लामो भाका र लामसुरे मालै भाका विषयवस्तु र संरचनाका हिसाबले उस्तै छन् । तर यी गीतमा मुख्य फरक भनेको थैगो प्रयोगमा हुन्छ । लामो भाकामा स्वरलाई लामो तान्ने, साइलैजीमा सुरुमा साइलैजी, स्यानीमायामा अन्तिममा स्थानीमाया र लामसुरे मालैमा लामो लेगो हाली मालै थैगो प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

यस्ता गीतहरू मायाप्रेम र स्थान वर्णन सहित प्राकृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक र सामाजिक विषयवस्तुले संरचित हुन्छन् ।

यी गीतहरू प्रायः सबै दुई पङ्क्तिमा संरचित हुने भएकाले पहिलो पङ्क्तिमा प्रकृति चित्रण र दोस्रो पङ्क्तिमा मायाप्रेमका वा सामाजिक जन जीविकाका चित्रणले युक्त हुन्छन् । यी गीतमा के कस्ता विषयवस्तु समेटिएका छन् भन्ने कुराका उदाहरण तलका गीतमा दिइएका छन् ।

साइलैजी

साइलैजी आज भैंसीको बन लयो गुवालो अरैले मालै
साइलैजी मनको प्यास मेटिँदैन लेक लैजा पैरैले मालै

स्यानीमाया

सगर लाग्यो गरकिन हा हा पानी लाग्यो चुन स्यानी माया
जोबान लाग्यो लसकिन हा हा मन त लाग्यो रुन स्यानीमाया

लामो भाका

पल्लो घरई बई मरिगिन् ककर बुकाई बुकाई
घरबारेले ककर दिन्छिन् पोइती लुकाई लुकाई

लामसुरे मालै

क्या चरीले खोरै लायो लेक हुइती हुइती मालै

कि भेदु बारमासै होइजा न हो कइती कइती मालै

यसरी यी सबै भाकाको विषयवस्तु कुनै खास र विशिष्ट नभई सामान्य लोकगीत जस्तै सरल शब्द संयोजनमा प्रकट गरेको पाइन्छ । कतिपय गीतमा हाँसो र व्यङ्ग्य प्रकट गर्दै शिक्षा वा चेतना दिएको पाइन्छ । 'पल्लो घरकी बई मरिगिन' माथिको लामो भाकामा तमाखुको कारण बज्यै मरेको प्रसङ्ग एकातिर छ भने अर्कातिर घरबारेले लोग्नेको आँखा छलेर तमाखुले प्रेमीको स्वागत गर्ने गरेको भेद प्रस्तुत भएको छ ।

मैतालु गीत दार्माकोटको मैदान डाँडामा प्रचलनमा रहेको छ । यो गीत परापूर्वकालमा माइत जाने मैतालुले सर्वप्रथम गाएकाले एक कान-दुई कान हुँदै लोक जन साधारणमा प्रवाह हुँदै गएको पाइन्छ । यस गीतको कथावस्तु ज्यादै कारुणिक र मार्मिक रूपमा जेलिएको छ ।

एक दिन एक विवाहित महिला भागेर माइत जाँदा ठुलो घाट (नदी) तर्नु पर्ने भयो । नदी ठुलो भएका कारण नदी तर्न गाह्रो भयो । माइत जाने विचार गर्नु अगाडि ती महिलाले जैसी बाजेकोमा साइत हेराउँदा साइत राम्रो नभएको कुरा गीतमा यसरी प्रस्तुत छ :

महिला : दिन हेदैऊ जैसी बाजेइ आमा बुवाको माया लाइगो
म जान्छु माइतीको देश

जैसी : तिम्रामा दिन निकामा छैनन् नजाऊ नाना
माइतीको देश

यसरी घाट तर्न नसकेपछि घाटमा तराउन बसेका घटाला दाइलाई आलाप विलाप गर्दै माइतमा रहेका आमाबुबाको माया लागेको, सगर गड्किन लागे । पानी पर्न लागेगो भनेर चाँडै नदी तारेर पारी पुऱ्याइ दिन गीतबाटै अनुरोध गरिन्छ । यति धेरै अनुरोध गर्दा घटाला दाइले ती महिलालाई ताँदै गर्दा श्रीमान् पछाडि आइ पुगेको र नदी बढेर तिनीहरूलाई बगाएर लगेको प्रसङ्गमा यो गीत जन्मन पुगेकाले यसलाई मैतालु भनिएको हो । ती मैतालुको सम्भना गर्दै यो गीत सबैले गाउन थालेको पाइन्छ । त्यसैले मैतालु गीतमा माइत जाने मैतालुलाई रोकावट गर्ने प्राकृतिक व्यवधान बारे उल्लेख गर्दै माइतका सबै सदस्यलाई पालैपालो माया लागेको विषयवस्तु यस गीतमा समावेश गरिएको छ ।

सिडारु, शृङ्गार, सिङ्गारपटार आदि शब्दको अर्थ उस्तै उस्तै हुन्छ । यसरी सिङ्गारिएर दसैं, तिहार र अन्य चाडपर्व र मेलापर्वमा नाचिने र गाइने गीत सिडारु हो । यो गीत पूर्वी सल्यानमा ज्यादै राम्रो सामाजिक गीतका रूपमा परिचित छ । यस प्रकारका गीतमा सिङ्गारिएर नाच्ने र रमाइलो गर्ने प्रसङ्ग विषयवस्तु स्वरूप प्रस्तुत गरिन्छन् । यस्ता गीतहरूमा विषयवस्तुले शृङ्गार रसमा सामाजिक, सांस्कृतिक अवस्थाको चित्रण गरेका हुन्छन् :

सिडारु खुल्दै न थानैको फरिया नभै
 मन सिद्धि दुल्दै न कर्मको विचार नभै
 मन सिद्धि दुल्दै न ।

सोरठी एक नाट्य विधा हो, जसमा विभिन्न पौराणिक विषयवस्तुलाई नाटकीय रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ । यसरी यस्तो नाटक प्रस्तुत गर्दा गाइने गीतलाई नै सोरठी गीत भनिन्छ । यसमा दुई जना मारुनी र एक जना पुर्सुङ्गे भई नाच्ने गरिन्छ । पिपलनेटा गा.वि.स.को सोरठी गीत र नृत्यमा यहाँ बाहिरी समेरने, भित्री समेरने, उघार्ने, लामी चरण, छोटी चरण, भ्रमरा, दान माग्ने र आसिक दिने आठ ओटा चरणहरू हुन्छन् । यस्ता चरणमध्ये बाहिरी समेरनेमा काशीका विश्वेश्वर बाबालाई

पुकारेको विषयवस्तु पाइन्छ । भित्री समेरनेमा आफू बसेको स्थानका पूर्व, पश्चिम, उत्तर र दक्षिण आकाश पाताल चारैदिशा समेरने सबैलाई सम्झने गरिन्छ । उघार्ने चरणमा सुनको सिँगार गरेको रूपको दरबार उघारौंला भनेर गीत गाइन्छ ।

लामी चरणमा : पृथ्वी सुनसान भएको र त्यहाँ विष्णु र ब्रह्माले सुमेरु पर्वत नाग र मान्छे बनाएको कथावस्तु वर्णन गरिन्छ । छोटी चरणमा कंस र कृष्ण मामाको प्रसङ्ग आउँछ । यसमा मामाले भान्जाको काली नाग मारेर ल्याएको रमिता हेर्ने प्रसङ्ग उल्लेख गरिन्छ र कंसले कृष्णलाई सुनगेरी मेचिया, राग्यापाट्या कामली, पटरङ्ग्या गुँदरी आदिमा बस्न अनुरोध गरेको र कृष्ण आफू त्यस्तो ठाउँमा बस्न नसुहाउने भन्दै दोहरी चलेको प्रसङ्ग छ । भ्रमरामा शिरदेखि पाउसम्म यशोदाको वर्णन गर्दै उनको शिरको सिन्दूर, चोली, कुण्डली, चन्द्रमा, पाउको पाउजु सुहाएको कुरा पाइन्छ । त्यसपछि दान माग्ने चरणमा आँगनीमा जोगी आएको, विभिन्न दिशाबाट आएका जोगीलाई दान दक्षिणा गर्ने विषयवस्तु यसमा समाविष्ट गरिएको हुन्छ । यसरी अन्तिममा आसिक दिने काम गरिन्छ । यो घरमा भरिपूर्ण होइ जाला भन्दै सधैँ घरधनीले नदिने र सधैँ गायक नर्तकहरूले नमाग्ने भनेर आसिक दिने गरिन्छ ।

“हे सधैँ तिमी देओइनौ सधैँ हामी मागौइनौँ,

भरिपूर्ण होइजाला” भन्दै धेरै चोटी गाएर समापन गर्ने गरिन्छ ।

सोरठीको कृष्ण चरित्र गीत र नाच खास गरी दसैंको अष्टमीको राती कालरात्री जगाउने भनेर गाउँका मुख्य अगुवाका घरमा जम्मा भएर विहानी पख एक दुई बजेबाट सुरु गरिन्छ । यस गीतमा भगवान् कृष्णको चरित्र सम्बन्धी वयान गरिएकाले यसलाई कृष्ण चरित्र गीत पनि भन्ने गरिन्छ । यहाँ कृष्णको वयान यसरी गरिन्छ :

हा हो महिर मारु रावन्ने हे राजै तँलाई हारे माहिरमारु

हा हो रामैको रूप लिई रावन्नेलाई महारुवा माहिरमारु

हा हो बासोदेव दुधेन पेवा

हा हो बासोदेव राजा है मथुरैमा धियान
हा हो बासोदेव दुधेन पेवा

५.२.५.२ लय वा भाकाको आधारमा विश्लेषण

लयका आधारमा बाह्रमासे गीतलाई विभिन्न वर्गमा निम्न अनुसार विभाजन गर्न सकिन्छ :

| विलम्बित लय | मध्य लय | द्रुत लय |
|--------------|------------|----------|
| साइलैजी | सोरठी | बनगारी |
| स्यानीमाया | सिडारु | भ्याउरे |
| लामो भाका | मैतालु | टप्पा |
| लामसुरे माले | मायै | |
| | चार गाउँले | |
| | ख्याली | |
| | बाह्रमासा | |
| | घाउटा | |

यसरी पूर्वी सल्यानका अधिकांश गीतहरू विलम्बित लयमा र केही गीतहरू मध्यलयमा र बनगारी, भ्याउरे र टप्पा गीत द्रुत लयमा गाउने गरिन्छ । हे, हा, हो, हो, साइलैजी, मालै, मायै स्यानीयमा आदि थैगोका शब्दले गीतको लय निर्माण गर्न मद्दत गरेका हुन्छन् ।

५.२.५.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

सङ्गीतका आधारमा पूर्वी सल्यानका लोकगीतलाई गायन सहभागिता अनुसार ठारी भाका, साइलैजी, स्यानीमाया, लामोभाका, लामसुरे मालै एकल स्वरमा, सोरठी, सिडारु, ख्याली, पुरुष सामूहिक रूपमा, बनगारी टप्पा, भ्याउरे चार गाउँले पुरुष र

महिलाको युगल तथा दोहरी स्वरमा गाइने गरिन्छ । बाह्रमासा र घाउटा पुरुष र महिला दुवैले एकल वा दोहरीका रूपमा गाउन सकिन्छ ।

नृत्यका आधारमा सोरठी सिडारु, ख्याली, बनगारी भूयाउरे र टप्पा नृत्य र वाद्य सहित गाउन सकिन्छ भने साइलैजी, स्यानीमाया, लामो भाका, लामसुरे मालै, बाह्रमासा, चार गाउँले, घाउटा, मैतालु, माथै गीतहरू वाद्यरहित र नृत्य रहित गाइने गीत अन्तर्गत पर्दछन् । खास गरी यस क्षेत्रका गीतलाई वाद्ययन्त्र, नृत्य स्वरलयको प्रयोगका आधारमा तिनको साङ्गीतिकताको पहिचान गर्न सकिन्छ । सिडारु, टप्पा र बनगारी गीतमा मादल, बाँसुरी, ट्याम्की, दमाहा, सहनाई, भ्याली, पैजन, चाप आदि लोक बाजाहरू तिनलाई साङ्गीतिक बनाउन प्रयोग गरिन्छन् ।

५.२.५.४ भाषाका आधारमा विश्लेषण

पर्व गीत, धार्मिक गीत, कर्म गीत र बालगीत जस्तै बाह्रमासा गीतमा पनि नेपालीको खसानी उपभाषिका नै अभिव्यक्तिको माध्यमका रूपमा प्रयोग गरिन्छ । यसरी नेपाली राष्ट्रिय मानक भाषा र यहाँ प्रयुक्त खसानी उपभाषिकाका बिचको भिन्नता तलका शब्दमा प्रस्तुत छ :

| | |
|-----------|------------------------------------|
| लाइगो | ‘लागि हाल्यो’ |
| फुलिगो | ‘फुलि हाल्यो’ |
| भल्लाउरीए | ‘भल्लाउरी ए’ |
| अर्गल | ‘घरको शोभा बढाउन बनाइएको मूल ढोका’ |
| काँमा | ‘केमा’ |
| दवारे | ‘तिहारे’ |
| ह्याँबाट | ‘यहाँबाट’ |
| वान्न | ‘गारो’ |
| कलौटे | ‘कालो रङ्को’ |
| नैकेनी | ‘स्त्री नाग’ |

| | |
|---------------|------------------------------------|
| खाँमो | ‘खाँबो’ |
| घाम खर्केइको | ‘घामले तिर्खाएको’ |
| विसुन | ‘बिस्कुन’ |
| सुल्पा | ‘कक्कड वा तमाखु खाने भाँडो’ |
| बिसौरी | ‘बिसौनी’ |
| जारिके | ‘जारी गरेर ल्याइएकी अर्काकी पत्नी’ |
| खोर | ‘गुँड’ |
| दौराएको | ‘दौडाएको’ |
| पोइति | ‘लोग्नेसँग’ |
| गहिलो | ‘गहिरो गम्भीर’ |
| जुहुग | ‘जुग’ |
| बैठो (हिन्दी) | ‘बस’ |

यी माथिका शब्द लगायत कतिपय संस्कृत र कतिपय हिन्दीबाट आएका शब्दहरू त्यहाँको लोकले प्रयोग गरे पनि तिनको अर्थ ठम्याउन कठिन छैन । जे होस् सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतमा प्रयोग हुने भाषा आफ्नै मौलिकता बोकेको र छुट्टै विशेषता भल्किने खालको छ ।

५.२.५.५ स्थानीयताका आधारमा

यहाँ गाइने लोकगीतको शब्दको प्रयोगमा, शब्दको उच्चारणमा, बाजागाजामा, पहिरनमा त्यहाँको मौलिक स्थानीयता प्रवाह भइ रहेको हुन्छ । यहाँ प्रयोग हुने शब्द बनोटका हिसाबले र छनोटको हिसाबले पनि स्थानीय हुन्छन् । जस्तै; गहिरोलाई गहिलो, कालो रङकोलाई कलौटे जस्ता स्थानीय शब्द र स्थानका हिसाबले दार्माकोट, दसैंघर, कोटमौला, लोटामारे, तारिके जस्ता स्थान जनाउने शब्दहरू प्रयोग भएका छन् । उच्चारणमा पनि स्थानीयता प्रकट भएको हुन्छ । जस्तै; यहाँबाटलाई ह्याँबाट, दौडाएकोलाई दौरायको आदि सहनाई, दमाहा, मादल, भ्याली, नेवर वा पैजन

स्थानीय स्तरमै प्रयोग गरिने गरिन्छन् । त्यसै गरी वेशभूषा र पहिरनमा सिडारु नाच्दा फरिया, चोली, पटुका आदि बाँधिन्छ । चोलिया, तिलहरी, गुन्यु, चुरिया आदिमा समेत स्थानीयता भल्किएको हुन्छ । त्यसैले यहाँका गीतहरूमा स्थानीयताको प्रयोग पाउन सकिन्छ ।

५.२.५.६ लोकतत्त्वका आधारमा

लोक जन साधारणको प्रतिविम्ब नै लोकतत्त्व हो । लोक गीतमा पाइने गीतको भन्दा भिन्न तत्त्व नै लोक तत्त्व हो । सल्यान जिल्लाका लोकगीतहरूमा लोक मानस पटलबाट युगौं युगदेखि यस्ता लोक मान्यता, विश्वास र सांस्कृतिक विचारहरूको प्रस्फुटन भइ रहेको छ । साइलैजी, मायै, लामसुरेमालै ठारी भाकामा आफ्नो उमेर, वैश जवानीको विरह र वेदना समेटिएका छन् । जस्तै;

सात समुन्द्र तरी आइग्या बबइ तरिनै छ स्यानीमालै ।

जोर साइलै मनैको घरवार एकदिन मरिनै छ स्यानीमालै

सुल्पा, सापी, सगरु, सिडारु, टप्पा, बनगारी जस्ता शब्दहरूमा लोकपन भेट्न सकिन्छ ।

त्यसै गरी स्यानीमाया मालै, साइलैजी, मायै आदि शब्दले त्यहाँको पुरानो छोट्ट्या छोटी बस्दा मायालुलाई सम्बोधन गरेकाले यस्ता शब्दहरू त्यहाँका आफ्नै लोक सम्पत्ति हुन् भन्ने बुझ्न सकिन्छ । त्यति मात्र नभएर बाह्रमासा गीतमा त्यहाँको हरि र रामचन्द्र प्रतिको प्रवृत्ति लोक विश्वास लोकतत्त्व नै हो साथै सिडारु, टप्पा र बनगारीमा प्रयोग गरिने पहिरन र मेला पर्वमा नाच प्रस्तुति गर्दा नाँच्दा गाउँदा पाप मोचन हुने धार्मिक विश्वास पनि लोकहरूमा विद्यमान छ ।

५.२.६ पूर्वी सल्यानका संस्कार गीतको विश्लेषण

मानव जातिको जीवन पर्यन्त गरिने विभिन्न संस्कारहरूको अवसरमा गाइने गीतलाई नै संस्कार गीत भनिन्छ । हामीसँग विभिन्न जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, बिरामी हुँदा धामी भाँक्री, भूत, प्रेत आदि सम्बन्धीका संस्कार गीतहरू पाइन्छन् । यस्ता संस्कार गीतहरूमा पनि विभिन्न विषयवस्तु समेटिएका हुन्छन् । सल्यानमा विशेष गरी न्वारन, छैटी, विवाह, रत्यौली, मन्त्रतन्त्र, खेती जस्ता संस्कार गीतहरू सङ्कलन र विश्लेषण गर्न लायक छन् । तीमध्ये यस अध्ययनमा विभिन्न तन्त्र मन्त्रमन्त्र, भाँक्रीका खेती, रत्यौली र बालैचन गीतहरू सङ्कलन गरी निम्न अनुसार विश्लेषण गरिएको छ ।

५.२.६.१ विषयवस्तुका आधारमा

यस क्षेत्रका मानिसहरूमा विभिन्न किसिमका परम्परागत विश्वासहरू रहेका छन् । मुख्य गरेर धामीभाँक्री, तन्त्रमन्त्र, डुनामुना, बोक्सी, भूतप्रेत, मसान आदिमा केही, व्यक्ति बाहेक अधिकांश मानिसले विश्वास गरेको पाइन्छ । कुनै व्यक्ति बिरामी हुँदा धामीभाँक्रीले आफ्नो विधि अनुसार अनेक प्रकारका भूतप्रेत देवदेवी, मसान, बोक्सी आदि खुट्याउने गर्दछन् । विभिन्न तन्त्रमन्त्र लगाएर तिनीहरूलाई पार लगाउने आश्वासन दिन्छन् र सोही अनुसार काम गर्ने गरिन्छ । यस्ता तन्त्रमन्त्र सम्बन्धीका संस्कार गीतहरू यहाँ प्रशस्त पाइन्छन् । भाँक्री बस्दा सुरुमा बिरा जप्ने मन्त्र जपिन्छ जसमा भाँक्रीले आफू बस्ने ठाउँलाई विभिन्न शरीरका भागहरूको माथि पाती राखेर मन्साउने गर्दछन् । त्यसै गरी रायो सस्युँ जप्ने मन्त्र, पेट ढाडिएको मन्त्र, जलेको निको पार्ने मन्त्र, भाँक्रीको खेती गीत र वराह जप्ने मन्त्र जस्ता तन्त्र मन्त्रहरू यहाँका संस्कार गीत अन्तर्गत पर्दछन् । यस्ता तन्त्रमन्त्रमा वन, पाखा, देवी देउराली भाक्ने, विभिन्न देवी देवताका नाम लिने र तिनीहरूलाई पुकार्ने खालका विषयवस्तु पाइन्छन् । यी गीतहरूका केही नमुना तल दिइएका छन् । जस्तै;

विरा जप्ने

यिनी पाती शिरमाथि
यिनी पाती कुममाथि
यिनी पाती दायाँ राखौं
यिनी पाती बायाँ राखौं

रायो सस्युं मन्तर

जोगी कन्जारा मन्जरा लडु धारी
फिलिम धारी कान चिरुवा

पेट ढाडिएको निको पार्ने मन्त्र

कान पसे कान सोरी ल्याउँला
हार पसे हार सोरी ल्याउँला
पटक्क फुटिजा ।

जलेको निको पार्ने

सुनकै चुली रूपकी आई
कालु कैली सेती गाई पानी खान आई
सात तली वाचा

काँक्रीको खेती

मान्म केसै रच्यो हो, सत्य र माभो मान्म
मान्म कोले रच्यो हो, जेठो र सत्य जुग
माइलो र हत्ते जुग, कान्छो र कली जुग

यसरी माथिका तन्त्रमन्त्रमा सामाजिक, पौराणिक र ऐतिहासिक विषयवस्तु समेटिएका हुन्छन् । पौराणिक विषयवस्तु भाँक्रीको खेतीमा पाइन्छ, जसमा मान्नुमा रचिएको प्रसङ्गबाट सारा जल, मूल, देवी र देउता बोलाइन्छ । जुन बोल्दा भाँक्रीलाई काम छुट्छ । अर्थात् जुन देवी देवता वा प्रेत जिउमा चढ्छ । त्यही लागेको मानिन्छ र उनीहरूले आफ्नो विधि धर्म गर्ने महिला रूढिवादी परम्परामा आधारित विषयवस्तु यस्ता तन्त्रमन्त्रमा समेटिएका हुन्छन् ।

त्यसै गरी यस क्षेत्रमा पाइने रत्यौली गीत, विवाहको अवसरमा जन्ती दुलहीको घरमा जाँदा दुलाहाको घरमा रातभरि गाइने गरिन्छ । रातमा गाइने भएकाले नै यसलाई रत्यौली भनिएको हो भन्ने कसै कसैको भनाइ छ । प्रायजसो महिलाहरूले अश्लील गीत गाउने भए पनि यस संस्कार गीतमा केही शिष्ट गीत पनि गाएको पाइन्छ । जस्तै;

आदा सगर कालो मैलो आदा सगर जुन
यति वेला दुलैलीले माला पहिरी हुन्
दुलैलीका आँगनीमा फुल्यो हजारी
दुलाहाकी आमालाई ल्याऊ लतारी

अश्लील प्रेम सम्बन्धी केही गीतहरू यस प्रकारका छन् :

दुलाहाका घरमा रातो भाल्या बास्
दुलहीका बैनीलाई खाइ देऊ यत्रो गाँस

यसले गीतमा महिलाहरू हाउभाउ गर्दै अश्लीलता प्रदर्शन समेत गर्ने गरेको पाइन्छ ।

दुलाहाका गोठमाथि फुर्चे कुबिन्नो
दुलाहाकी आमालाई पार उबिन्नो

दुलाहाका आँगनीमा रातो भाले भ्यात्त भ्यात्त
भोलि आउने दुलैनीको हुन्छ ल्यात्त ल्यात्त

यसरी रत्यौलीमा शिष्ट गीत कम र बढी मात्रामा अश्लील गीत नै गाएको देखिन्छ । यस्ता गीतमा पुरुषलाई गाउन नाचन प्रतिबन्ध लगाइएको हुन्छ । विभिन्न अश्लील गीत गाएर महिलाहरूले गीत गाउँदै रतिक्रिडाको अभिनय समेत गरेको पाइन्छ । अशिष्ट शब्दको प्रयोग गर्दै गीतमा श्रीमान् श्रीमतीका बिचमा गरिने अश्लील व्यवहारको वर्णन गरिएका गीत प्रचुर रूपमा पाइन्छन् ।

यस्ता गीतहरूमा यहाँका संस्कृतिको झलक दिने सिन्दूर, डोरी, गाजल, टीका, गहनाहरू, चोली, पेटीकोट, धोती आदि आभूषणहरू र रगत, मुटु, आन्द्रा, डोली, ध्वजा, धार धुप आदि वस्तुको वर्णन पाइन्छ ।

तन्त्रमन्त्रमा देउराली, देवी देवता, लक्ष्मण, महादेव, सरस्वती, जलदेवी, बाह्रकुने, खैराबाड, शङ्खमूल, भूतप्रेत, बोक्सी आदिको चर्चा गरिएको पाइन्छ

अर्को संस्कार गीत अन्तर्गत बालैचन गीत पर्दछ । यसमा सुरुमा समेरने चरण हुने भएकाले यसमा देवी देवतालाई स्मरण गर्ने गरिन्छ । डाँडाकाँडा जलथलको चर्चा गरिन्छ । त्यसै गरी बालैचन गीत बालकलाई खेलाउने गीत र विशेष गरी जेठो छोरो जन्मँदा खुसियालीमा र शुभेच्छा प्रकट गरेर गाइने भएकाले यसलाई बालैचन गीत भनिएको हो । सो बालैचन गीतमा बच्चाको गर्भाधानदेखिको चर्चा गरिन्छ । यसो गर्दा एक तली, दुई तली गर्दै सात तली वाचा खुवाएर गीतको दोस्रो चरण सुरु हुन्छ । जस्तै;

हि हा है भया एकतली वाचा तम्राका भया
हामी खेल्छौं पहेली पैस्यारी

त्यसपछि तेस्रो चरणमा बालकको गर्भ धारण देखि १० महिनाको वर्णन गरिन्छ ।

जस्तै;

एक है मैना आस्तिक लियो तम बाल खुल्या

हामु खेल्छौं पहेली पैस्यारी

चौथो चरणमा शिरदेखि पाउसम्मका प्रत्येक अङ्गको शुभ वर्णन गरिन्छ ।

जस्तै;

हि हा है खेलौं तम बाल खुल्यौं वर सरी बस

देखौ तहीं जीवरी जोलीको रूप

जीवरी जोलीको रूप है मेरो क्या पैरौला

जैसै भलो जीवरी जोलीको रूप

यसरी बालैचन संस्कारमा शरीरका अङ्ग वर्णनका विषयलाई जन्म संस्कारसँग जोडिएको हुन्छ । समग्रमा पौराणिक रूढि, परम्परावादी र ऐतिहासिक विषयवस्तु संस्कार गीतमा पाइन्छन् ।

५.२.६.२ लय वा भाकाका आधारमा विश्लेषण

यहाँका अधिकांश गीतहरू भ्याउरे लोकलयमा गाइन्छन् । त्यसै गरी पूर्वी सल्यानका रत्यौली गीतहरू पनि भ्याउरे लोकलयमा गाइन्छन् । अन्त्यानुप्रासको प्रयोग भएका दुई पङ्क्तिका गीत हुने भएकोले साङ्गीतिकताको हिसाबले पनि यी गीतहरू महत्त्वपूर्ण छन् ।

संस्कार गीतहरूका तन्त्रमन्त्रमा भने हे, हे, ह, हा, हँ, ए, है जस्ता थेगो वा रहनी प्रयोग गरी लयात्मक बनाउने गरिएको हुन्छ ।

प्रायजसो यहाँका लोकगीतहरू मध्यलयमा गाइन्छन् भने दुई पङ्क्तिको एक श्लोक हुनु अर्को अनिवार्य विशेषता हो । बालैचनमा 'पहेली पैस्यारी थेगोको रूपमा रहेको हुन्छ । यसमा गाउँदा हि हा है लय बनाउने थेगोका रूपमा प्रयुक्त छ ।

हि हा है खेल्यौ नौलाख तारा तम्राका भया
हामु खेल्यौ पहेली पैस्यारी

हि हा है खेल्यौ तम बाल खुल्यौ वर सरी बस
दखौ तही जीवरी जोलीको रूप

समग्रमा संस्कार गीतहरू पूर्व लयात्मक हुँदैन् तन्तर-मन्तर भन्ने गरिन्छ
त्यति नृत्य र लयलाई संस्कार गीतमा महत्त्व दिएको पाइँदैन ।

५.२.६.३ सङ्गीतात्मकताका आधारमा

सङ्गीतात्मकता गीतमा हुने अनिवार्य तत्त्व हो तथापि संस्कार गीत अन्तर्गतका तन्त्रमन्त्र, रत्यौली र बालैचनमा नृत्य र वाद्यवादन गरिँदैन । भाँक्रीको खेतीमा भने केही मात्रामा ढ्याङ्गो बजाउने र भाँक्री आफै त्यही ढ्याङ्गोको तालमा गाउँदै नाँच्दै गरेको पाइन्छ । बालैचनमा मादल बजाएर पनि गाउने गरेको पाइन्छ तर नाँच्ने काम गरिँदैन । सङ्गीतको वाद्यवादन संग संस्कार गीतहरू सम्बन्धित छैनन् । बरु यस्ता संस्कार गीतहरू गेयात्मक विधामा भने केही मात्रामा सम्बन्धित हुन्छन्, तन्त्र मन्त्रहरूमा लय आँशिक रूपमा पाइन्छ । जस्तै;

बरानी बाट्दा यो मन्तर भनिन्छ :

जुगौँ-जुग भएस

घरकी रमनी बचाएस

कुलच्छिन भरी बाहिर जाओस्

लच्छिन भरी भित्र आओस् ।

समग्रमा संस्कार गीत नृत्यमय हुँदैन । बाजाका रूपमा मादल र ढ्याङ्गो वा थाल बजाइन्छ । अभिनय चाहिँ केही मात्रामा गरिन्छ । यसलाई सङ्गीतको गेयात्मक अभिव्यक्ति मान्न सकिन्छ ।

५.२.६.४ भाषाका आधारमा

संस्कार गीतहरूमा प्रायः सामान्य सरल भाषाको प्रयोग गरिन्छ । अन्य गीतहरूमा जस्तै यसमा पनि नेपाली भाषाको खसानी उपभाषिकाको प्रयोग गरिएको हुन्छ । तन्त्र-मन्त्रमा प्रायजसो २ वा ३ शब्दहरूको छोटो उपवाक्य बनाइएको हुन्छ । रत्यौलीमा पूर्ण वाक्यको प्रयोग हुन्छ, भने वालैचनमा साङ्केतिक रूपमा उपमा अलङ्कार सहितको भाषा प्रयोग गरिन्छ । यी सबै भाषामा प्रयुक्त यहाँका केही शब्द यस प्रकार छन् :

| | |
|-----------------|--------------------------|
| कुम | ‘काँध’ |
| भ्यालो | ‘बिरुवाको हाँगो’ |
| मन्तर | ‘मन्त्र’ |
| तन्तर | ‘तन्त्र’ |
| ढाच्याउँ | ‘ढाडिएको’ |
| बाल्/व | ‘थेगो’ |
| बुरेनी | ‘बुढी’ |
| मास | ‘महिना’ |
| बुकी पाटन | ‘ठाउँको नाम’ |
| ल्यात्त ल्यात्त | ‘भिजेको अवस्था हुने गरी’ |
| उबिन्नो | ‘उत्तानो’ |
| तम्राका | ‘तिम्रा’ |
| जीवरी | ‘जिब्रो’ |
| जोली | ‘जोडा’ |

समग्रमा पूर्वी सल्यानका संस्कार गीतमा प्रयुक्त भाषा सरल र सहज हुनुका साथै रत्यौली गीतमा अश्लीलता जनाउने शब्दले संरचित छ ।

५.२.६.५ स्थानीयताका आधारमा

यहाँका संस्कार गीतहरू यहाँकै स्थानीय परिवेशबाट निर्माण भएको कारण स्थानीयता गीतहरूमा विद्यमान छ । अझै तन्त्रमन्त्र गीतहरूमा भन्नु बढी स्थानीय डाँडा काँडा, जल, देवी, देउराली, खोलानालाको प्रयोग गरिएको हुन्छ । जस्तो; बिजुलडाँरा, चाएनेटी, बुकीपाटन, धौल्याभिर, सीमडाँडा, जुगारे, शंखमूल, खैरावाड, बारकुने, जस्ता स्थानीय ठाउँहरूको नाम यी गीतमा प्रयोगमा आएको पाइन्छ ।

तन्त्रमन्त्रहरू स्थानीय धामीभाँक्री अनुसार फरक फरक हुने भएकाले यी सबै गा.वि.स. र गाउँ गाउँ अनुसार फरक फरक भएको पाइन्छ । यहाँको संस्कार गीतहरू रत्यौली गीतमा प्रयोग हुने शब्दहरू मध्ये लुगा पहिरनमा यहाँको छुट्टै मौलिकता भेट्न सकिन्छ । मन्त्रतन्त्र झारफुकबाट धामीभाँक्रीबाट भूतप्रेत, बोक्सी, डङ्किनी, देउराली, वराह मसान मन्साइने कुरा यहाँको स्थानीय परम्परा बनेको छ । जेठो छोरो जन्मिँदा खुसियालीमा एक वर्षभित्रमा बालैचन खेलाउने दमाचौर प्रचलन विशेष प्रकारको छ । यहाँ पाइने गीतका शब्द उच्चारण लोक विश्वास र व्यवहार चालचलनमा यहाँको स्थानीयपन भेट्न सकिन्छ । यस्तो स्थानीयपनमा त्यहाँको आफ्नै सामाजिक परम्परा रहेको हुन्छ । यस्तो अवस्था सल्यानका संस्कार गीतहरूमा समुदाय पिच्छे र व्यक्ति पिच्छे विद्यमान हुन्छ ।

५.२.६.६ लोकतत्त्वका आधारमा

लोकतत्त्व लोक जीवनमा विद्यमान रूढतत्त्व हो । यस अन्तर्गत धर्म अनुष्ठान लोक विश्वास, अति कल्पना, जादु, टुनामुना, आत्मशीलता, लोक रीतिरिवाज र परम्परित, चिन्तन पर्दछन् । लोकतत्त्वले लोकगीत निर्माणमा महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । संस्कार अन्तर्गत पर्ने रत्यौली, मन्त्र, खेती र मन्साउने लोकगीतमा लोक तत्त्वको उपयोग भएको पाइन्छ । रत्यौली गीतमा विवाहका दिन दुलाहा दुलहीलाई लिन गएको अवस्थामा दुलाहाको घरमा धेरै महिलाहरू जम्मा भई निःशङ्कोच रूपमा

स्वतन्त्र भएर हाँस्यव्यङ्ग्यात्मक पारामा गाउनै पर्ने प्रावधानले लोक विश्वासलाई आत्मसात् गरेको छ । ठुलो गाँस खानु, कपाल बाट्नु, गाजल आँखामा लगाउनु, लुगा पहिरिनु, औँठी लगाउनु, पोते लगाउनु, दुलाहाको जुठो दुलहीले खानु, दुलाहालाई माला पहिराउनु, घर परिवारले महिलालाई लतारेरै लिएर नाचन लगाउनु जस्ता लोक प्रचलन त्यहाँ पाइन्छन् । त्यसै गरी जादु, टुनामुना र मन्त्रले बिरामी निको हुने, झारफुक गर्नु पर्ने र बालैचन गीतमा सुरुमा छोरा जन्मिँदा 'बराइ भो' भनेर बालैचन खेलाउने गर्दा उसको राम्रो विकास हुने र भाग्य सप्रिने कुरामा विश्वास गर्ने खालका अनेक लोक विश्वासहरू यहाँका जन मानसमा रहेको पाइन्छ ।

छैटौँ-परिच्छेद

उपसंहार

सल्यान जिल्ला नेपालका पाँच विकास क्षेत्रमध्ये मध्यपश्चिमाञ्चल विकास क्षेत्र अन्तर्गत रहेका राप्ती अञ्चलका पाँच जिल्लामध्ये एक हो । मौलिक सांस्कृतिको विविधता भएको हाम्रो देशमा लोक साहित्यका विभिन्न पाटाहरू देशैभरि छरिएर रहेका छन् । सल्यान जिल्लामा पनि लोक साहित्यका उखान टुक्का, गाउँ खाने कथा, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोक नाटक र लोकगीत जस्ता विधाहरू विद्यमान छन् । यी मध्ये एक लोकप्रिय विधा लोकगीत हो । प्रस्तुत शोधपत्रमा पूर्वी सल्यानमा प्रचलित यिनै लोकगीतहरूलाई सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण गरिएको छ । यहाँ यसै क्रममा शोधपत्रलाई विभिन्न छ परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ । यसरी अध्ययनमा आएका विषयवस्तुलाई निष्कर्षमा रूपमा यस प्रकार प्रस्तुत गरिएको छ ।

६.१ सारांश

यस शोधपत्रको पहिलो परिच्छेदमा शोध परिचय खण्डलाई राखिएको छ जसमा विषय परिचय, समस्या कथन, शोधकार्यका उद्देश्यहरू, पूर्वकार्यको समीक्षा, शोधकार्यको औचित्य, शोधकार्यको सीमाङ्कन, शोधविधि र शोधकार्यको रूपरेखा रहेका छन् ।

दोस्रो परिच्छेदमा पूर्वी सल्यानको परिचय दिइएको छ जस अन्तर्गत पूर्वी सल्यानको भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भाषिकागत र शैक्षिक परिचयलाई समेटिएको छ ।

तेस्रो परिच्छेदमा लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय दिइएको छ । सैद्धान्तिक परिचयलाई विभिन्न सात उपशीर्षक बनाई वर्णन गरिएको छ । यसमा लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय दिने क्रममा लोक साहित्यको परिचय, लोकगीतको परिचय,

लोकगीतको संरचना, लोकगीतको वर्गीकरण, लोकगीतको विशेषता जस्ता विषयहरू समावेश गरिएका छन् ।

चौथो परिच्छेदलाई 'सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको सङ्कलन' शीर्षक नामकरण गरिएको छ । यसमा सङ्कलन गरिएका लोकगीतलाई धार्मिक गीत, बालगीत, कर्म गीत, पर्वगीत, बाह्रमासे गीत र संस्कार गीत गरी ६ प्रकारमा विभाजन गरिएको छ । धार्मिक गीतमा आरती, सन्ध्या र प्रार्थना गीत, गोपी बासको मोरली, याउनु भएन, कति सुवायो, जस्ता भजनहरू सङ्कलन गरिएका छन् । बालगीत अन्तर्गत हो हो बाबु हो हो, घुघुती-वासुती, कुखुरी काँ चिंगुरी मुसी, चिँ मुसी चिँ र मामाघरको घुघुती वासुती पर्दछन् । तिज, देउसी र भैली पर्वगीत अन्तर्गत पर्दछन् । बाह्रमासे गीत यहाँ सबैभन्दा बढी सङ्ख्यामा सङ्कलन गरिएका छन् । बाह्रमासे गीतअन्तर्गत बाह्रमासा, घाउटा, ठारी भाका, वनगारी, ख्याली, टप्पा, भाँप्रे/भूयाउरे, चारगाउँले भाका, मायै, मैतालु, साइलैजी, स्यानीमाया, लामो भाका, सिडारु, लामसुरे मालै र सोरठी गीतहरू समावेश गरिएका छन् । संस्कार गीत अन्तर्गत विभिन्न तन्त्रमन्त्रहरू बिराज जप्या मन्त्र, रायो सस्युँ जप्या मन्त्र, पेट ढाडिएको मन्त्र, जल्याउ निको पार्या मन्त्र, बरानी वाट्याउ मन्त्र, मान्म रचाएको खेती, बरा जप्या खेती रत्यौली र बालैचन गीतहरू सङ्कलन गरिएका छन् ।

पाँचौ परिच्छेदलाई पूर्वी सल्यानबाट सङ्कलन गरिएका लोकगीतहरूको वर्गीकरण र विश्लेषण" शीर्षक दिइएको छ यसमा विभिन्न सैद्धान्तिक आधारमा पूर्वी सल्यानका लोकगीतहरूको वर्गीकरण गर्नुका साथै वर्गीकरणलाई स्पष्ट पार्न तालिकालाई पनि समावेश गरिएको छ ।

यही परिच्छेदमा सङ्कलित लोकगीतहरूको विश्लेषण पनि गरिएको छ । यस क्रममा यहाँका धार्मिक गीत, पर्व गीत, कर्म गीत, बालगीत बाह्रमासे गीत र संस्कार गीतलाई छुट्टाछुट्टै विश्लेषण गरिएको छ । विश्लेषण विषयवस्तुका आधारमा, लय वा भाकाका आधारमा, सङ्गीतात्मकताका आधारमा, भाषाको आधारमा स्थानीयताका

आधारमा र लोकतत्त्वका आधारमा गरी विभिन्न ६ आधारमा गरिएको छ ।

छैटौँ परिच्छेदलाई 'उपसंहार' शीर्षक दिइएको छ । यसअन्तर्गत सारांश, प्राप्ति र भावी अध्ययनका लागि सम्भाव्य शीर्षक छन् । अन्त्यमा परिशिष्ट खण्ड अन्तर्गत सामग्री सङ्कलनमा सहयोग पुऱ्याउनेहरूको विवरण, अध्ययन क्षेत्रको नक्सा र अर्थ सहित केही स्थानीय शब्दहरू दिइएका छन् ।

यसरी यस शोधपत्रलाई पूर्णता दिइएको पाइन्छ ।

६.२ प्राप्ति

प्रस्तुत "सल्यानको पूर्वी क्षेत्रका लोकगीतको अध्ययन" शीर्षकको शोधपत्रले अध्ययन हुन नसकेका सल्यानको पूर्वी क्षेत्रमा लोकगीतहरूलाई खोजेर यहाँ जम्मा पारेको छ । यसबाट त्यहाँको मौलिक परम्परा बोकेका लोकगीतहरू बारे जान्न र अध्ययन गर्न चाहनेहरूका लागि सामग्री उपलब्ध भएको छ । यो यस अध्ययनको एक महत्वपूर्ण प्राप्ति हो । लोकगीतहरू गाउन र भन्न जान्ने जानकारहरूसँग प्रत्यक्ष भेटवार्ता गरी गाउँ गाउँ डुलेर ल्याइएका यी लोकगीतहरूले त्यहाँको पौराणिक, ऐतिहासिक र सामाजिक यथार्थतालाई बुझ्न मद्दत गर्ने छन् । लोकगीत गाउने लोक गायक र गायिकाहरूलाई ती गीतहरू रेकर्ड गर्न सहयोग गर्ने छन् । यसबाट त्यहाँको स्थानीय परम्परालाई राष्ट्रव्यापी रूपमा फिँजाउन सकिने छ । नेपाली विषय लिएर उच्च शिक्षा हाँसिल गर्न चाहने लोक साहित्यका विद्यार्थीहरूलाई यस शोधपत्रले सहयोग गर्ने छ । मूलतः लोकगीतले तत्कालीन कुनै खास क्षेत्रमा बसोबास गर्ने जन साधारणको प्रतिनिधित्व गरेका हुन्छन् । त्यसैले यस अध्ययनका क्रममा त्यहाँको भाषा, संस्कार, सभ्यता, चालचलन, जन जीविका र सम्पूर्ण यथार्थ पक्षको जानकारी लिने अवसर हामी सबैलाई मिलेको छ । यस क्षेत्रमा पर्व गीत अन्तर्गत तिज, देउसी, भैली विभिन्न बालगीतहरू, टप्पा, ठारीभाका, बनगारी, ख्याली, सिडारु, स्यानीमाया, मालै,

लामसुरे मालै, भाँप्रे, आदि गीतहरू प्राप्त भएका छन् । कर्म गीत अन्तर्गत रोपाईंको भकारी, धार्मिक गीतमा आरती सन्ध्या र भजनहरू पाइएका छन् । संस्कार गीतहरूमा विभिन्न तन्त्रमन्त्रहरूको साथै धामीभाँकीका खेतीहरू र रत्यौली गीतहरू प्राप्त छन् । त्यति मात्र नभई नेपाली लोकगीतको क्षेत्रमा ज्यादै पुरानो र महत्त्वपूर्ण बालैचन गीत समेत प्राप्त भएकाले प्रस्तुत शोधपत्र लोक साहित्यको क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण रहेको छ । यी विभिन्न लोक गीतहरूको वर्गीकरण र विश्लेषण गरी यिनका विशेषताहरूलाई प्रस्तुत शोधपत्रले प्रकाशमा ल्याएको छ । यसबाट नेपाली लोक साहित्यको अध्ययनलाई व्यवस्थित र पूर्ण तुल्याउने काममा आंशिक रूपमै भए पनि सहयोग पुगेको छ ।

समग्रमा पूर्वी सल्यानका लोकगीतहरूको प्रस्तुत अध्ययनबाट सल्यानको अत्यन्तै दुर्गम र ग्रामीण बस्तीको सांस्कृतिक सम्पदाका रूपमा रहेको लोक गीतको संरक्षण, संवर्धन र प्रवर्धनको दिशामा विशेष प्राप्ति भएको छ ।

६.३ सम्भाव्य अध्ययन शीर्षक

“सल्यान जिल्लाको पूर्वी क्षेत्रमा प्रचलित लोकगीतको अध्ययन” सम्पन्न गर्ने क्रममा यस क्षेत्रका लोक गीत बारे थप अध्ययन गर्न सकिने सम्भावनाहरू अझै बाँकी देखिएका छन् । यस सन्दर्भमा आउँदा दिनमा शोधकार्य गर्नको लागि निम्न लिखित शोधकार्यहरू उपयुक्त देखिन्छन् :

- पूर्वी सल्यानमा प्रचलित लोकगीतहरूको सङ्गीत शास्त्रीय अध्ययन
- पूर्वी सल्यानमा प्रचलित लोकगीतहरूको सांस्कृतिक अध्ययन
- पूर्वी सल्यानमा प्रचलित लोकगीतहरूमा प्रयुक्त भाषाको अध्ययन

परिशिष्ट - १

सामग्री सङ्कलनमा सहयोग गर्ने व्यक्तिहरूको विवरण

अइभान दमाई, कोटबारा-५, सल्यान, वर्ष ६१, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

अमृत शर्मा, शिवरथ-४, सल्यान, वर्ष ३९, पुरुष, शिक्षा: आइ.एड. ।

कर्के सुनार दार्माकोट-२, सल्यान, वर्ष ७६, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

कमल ओली कोर्बाङ्ग, भिम्पे-४, सल्यान, वर्ष ३२, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

काली कट्वाल, दर्माकोट-१, सल्यान, वर्ष ५०, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

कालीदेवी गौतम, पिपलनेटा-३, सल्यान, वर्ष ४१, महिला, शिक्षा: साधारण ।

कृष्णराज डि.सी., थारमारे-५, सल्यान, वर्ष ५१, पुरुष, शिक्षा: विद्यावारिधि ।

खड्क के.सी, बाँफुखोला-८, सल्यान, वर्ष ३८, पुरुष, शिक्षा: एस.एल.सी. ।

खली खड्का, ढाकाडम-४, सल्यान, वर्ष ४१, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

खिम बहादुर शाह, दमाचौर-३, सल्यान, वर्ष ६९, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

खिमादेवी चन्द्र, ढाकाडम-२, सल्यान, वर्ष ४२, महिला, शिक्षा: साधारण ।

चन्द्र बहादुर न्यौपाने, दार्माकोट-१, सल्यान, वर्ष ४७, पुरुष, शिक्षा: एस.एल.सी. ।

जगत बहादुर जैसी, दमाचौर-४, सल्यान, वर्ष ६३, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

जागे, भाँक्री, मुसिकोट-१, रुकुम, वर्ष ६२, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

जानकी चन्द्र, ढाकाडम-२, सल्यान, वर्ष २४, महिला, शिक्षा: वि.एड. ।

जीवन बस्नेत, बाँफुखोला-९, सल्यान, वर्ष ४९, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

जीवन रसाइली, कोटबारा-६, सल्यान, वर्ष २६, पुरुष, शिक्षा: आइ.एड. ।

टेक बहादुर डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष ५३, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

टेकम प्रसाद अधिकारी, पिपलनेटा-७, सल्यान, वर्ष ६७, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

तुल बहादुर चन्द, दमाचौर-३, सल्यान, वर्ष ६६, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

तुल्सीराम भण्डारी, लेखपोखरा-८, सल्यान, वर्ष ६२, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

तेज बहादुर चन्द, कोटमौला-७, सल्यान, वर्ष ३५, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

दिपेन्द्र कुमार चन्द, दार्माकोट-२, सल्यान, वर्ष ६२, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

धुबराज धिताल, पिपलनेटा-७, सल्यान, वर्ष ३२, पुरुष, शिक्षा: एम.एड. ।

नर बहादुर नेपाली, दार्माकोट-१, सल्यान, वर्ष ३४, पुरुष, शिक्षा: वि.एड.।

पवन ओली, बाँफुखोला-८, सल्यान, वर्ष ३९, पुरुष, शिक्षा: एम.एड. ।

प्रेम बहादुर ओली, थारमारे सेतागार, सल्यान, वर्ष ४६, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

फौद बहादुर डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष ५३, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

बमकृष्ण रसाइली, कोटबारा-६, सल्यान, वर्ष २७, पुरुष, शिक्षा: एस.एल.सी. ।

बल बहादुर डाँगी, थारमारे-५, सल्यान, वर्ष ५७, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

बिगाराम डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष ६३, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

बिमला डाँगी, कोटमौला-९, सल्यान, वर्ष ४७, महिला, शिक्षा: अनपढ ।

बिमला रोक्याय, दार्माकोट-४, सल्यान, वर्ष ३७, महिला, शिक्षा: साधारण ।

विष्णु जैसी, दमाचौर-४, सल्यान, वर्ष ६४, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

भक्त बहादुर ओली, शिवरथ-४, सल्यान, वर्ष ५७, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

मनोज के.सी., थारमारे-५, सल्यान, वर्ष २६, पुरुष, शिक्षा: आइ.एड. ।

यमुना अधिकारी, पिपलनेटा-८, सल्यान, वर्ष ३५, महिला, शिक्षा: साधारण ।

रमेश डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष ३०, पुरुष, शिक्षा: बि.ए./बि.एड. ।

रागवीर खड्का, ढाकाडम-४, सल्यान, वर्ष ४६, पुरुष, शिक्षा: अनपढ ।

राधा डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष २९, पुरुष, शिक्षा: बि.एड. ।

रेइसन डाँगी, कोटमौला, सल्यान, वर्ष ५, पुरुष, शिक्षा: एल.के.जी. ।

रेशम प्रसाद अधिकारी, पिपलनेटा-७, सल्यान, वर्ष ६४, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

शक्तिरूप चन्द्र, कोटबारा-४, सल्यान, वर्ष २५, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

शेरबहादुर डाँगी, कोटमौला-६, सल्यान, वर्ष ४९, पुरुष, शिक्षा: बि.ए. ।

सतीदेवी शर्मा, पिपलनेटा-७, सल्यान, वर्ष ७२, महिला, शिक्षा: साधारण ।

सरिता डाँगी, थारमारे बाघचौर, सल्यान, वर्ष ३३, महिला, शिक्षा: साधारण ।

हिम बहादुर चन्द्र, ढाकाडम-४, सल्यान, वर्ष ५१, पुरुष, शिक्षा: साधारण ।

ज्ञान बहादुर ओली, पिपलनेटा-७, सल्यान, वर्ष ५५, पुरुष, शिक्षा: आइ.ए. ।

परिशिष्ट - २

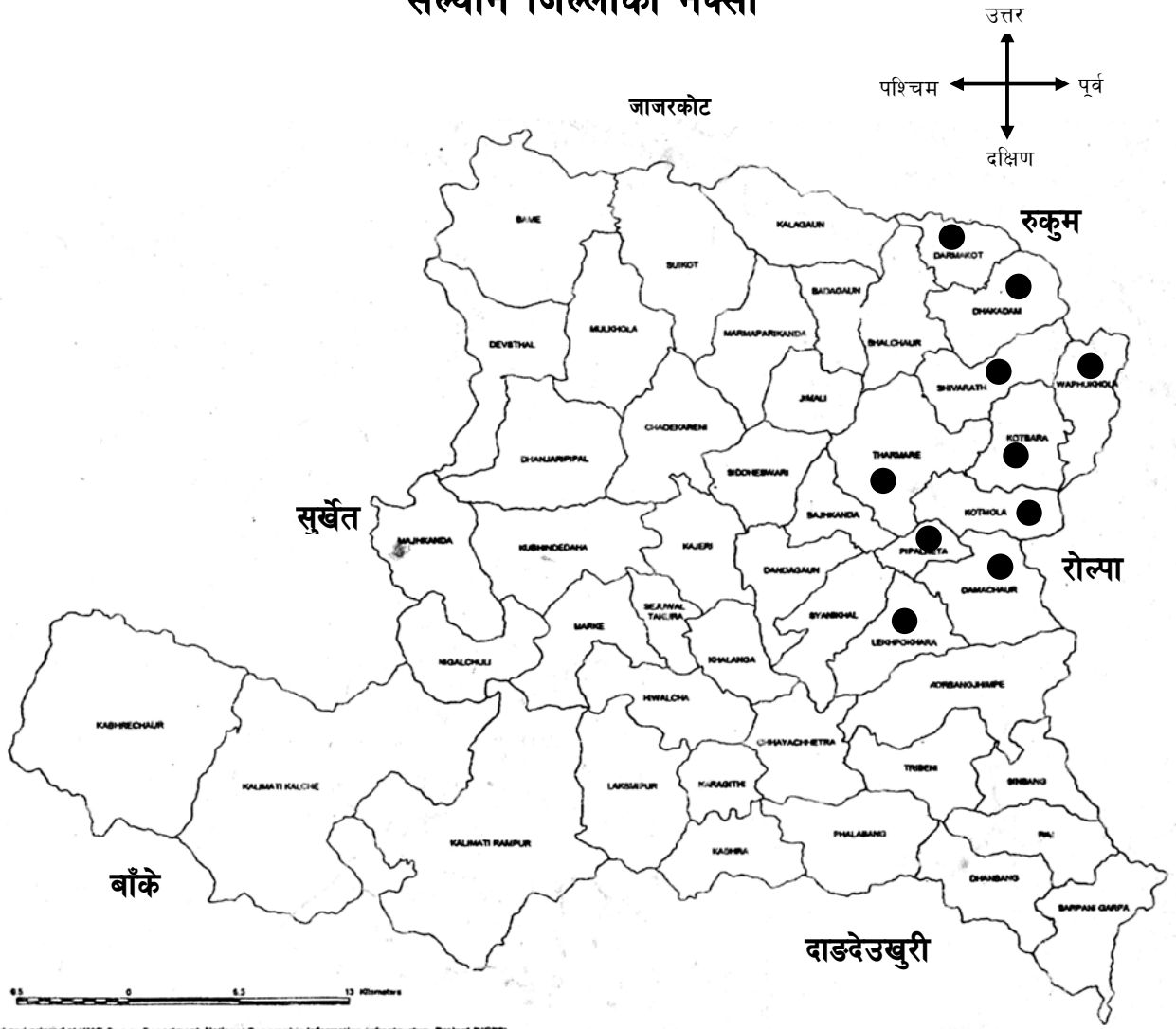
पूर्वी सल्यानमा प्रचलित केही नेपाली शब्दको शब्दार्थ

| शब्द | अर्थ |
|--------------|--|
| अजनविस्टी | - कुखुराको सुली |
| अम्मेर | - उमेर |
| ओसाउनु | - नाङ्लो वा हात हल्लाएर धान गहुँ आदिबाट भुस छुट्याउनु |
| कपाल्या | - महिलाले कपाल छोप्न टाउकोमा बाँध्ने कपडा |
| कलाउनु | - केलाउनु |
| कालीपात्र्या | - कमाइ कजाइ गर्न भारतको काला पहाड जाने व्यक्ति |
| कुतुवा | - कुकुर |
| गुवालो | - गोठालो |
| छिन्ता | - सीता |
| छोट्टी | - तरुनी |
| छोट्टया | - तन्नेरी |
| जोल्या | - जोडा |
| तिलानी | - तिल र पानी |
| नैकेनी | - नाग |
| ठटेर | - डाँठ |
| दवारों | - तिहार |
| दबोछापों | - तिहारको बेलामा गाइ गोरुलाई जिउमा टिका लगाउने काम |
| दबोपिरो | - तिहारको बेलामा गाइ गोरुलाई खुवाउने खाने कुरा |
| द्वार कुना | - ढोकाको छेउ |

| | | |
|----------|---|---|
| बलदु | - | गोरु |
| बिर्खे | - | गोरु तिहारमा गरिने एक पुजा |
| बिर्छे | - | वृक्ष |
| बुर्ने | - | डुब्ने |
| मनवा | - | मानव |
| मन्नल | - | मण्डल |
| रङ्गी | - | रङ्गिलो |
| हि हा है | - | गीत गाउँदा मिठासको लागि प्रयोग गरिने थैगो |

परिशिष्ट - ३

सल्यान जिल्लाको नक्सा



सन्दर्भ कृति सूची

अनिल, सन्तराम (सन् १९७५), **कन्नोज साहित्य**, दिल्ली : अभिनय प्रकाशन ।

आचार्य, गोविन्द (२०६०), **राप्तीका गीत**, काठमाडौं : अतिरिक्त प्रकाशन ।

_____ (२०६१), **लोकगीतको विश्लेषण**, काठमाडौं : पैरवी प्रकाशन ।

उपाध्याय, कृष्णदेव (सन् १९९८), **लोक साहित्य की भूमिका**, इलाहाबाद : साहित्य भवन लिमिटेड ।

कन्दङ्वा, काजीमान (२०२०), **नेपाली जन साहित्य**, काठमाडौं : रोयल नेपाल एकेडेमी ।

के.सी., दुर्गा बहादुर (२०६७), “सल्यान जिल्लाको उत्तर पश्चिम क्षेत्रका नेपाली लोकगीतको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण”, अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोध पत्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाली केन्द्रीय विभाग ।

कोइराला, शम्भुप्रसाद (२०५६), **लोक साहित्य सिद्धान्त र विश्लेषण**, विराटनगर: धरणीधर पुस्तक प्रतिष्ठान ।

खत्री, टेकबहादुर (२०३५), “लोक साहित्य र लोक संस्कृतिको आधार”, **नेपाली लोक साहित्य संगोष्ठी**, प्र.सं., काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

गिरी, जीवेन्द्रदेव (२०५१), “कर्णाली प्रदेशका लोकगीतमा यथार्थ खोज”, **साहित्य सौगात**, काठमाडौं : सुर्खेती कल्याण समाज ।

_____ (२०५७), **लोक साहित्यको अवलोकन**, काठमाडौं : एकता प्रकाशन ।

_____ (२०६९), **नेपाली लोक साहित्य जनजीवन**, काठमाडौं : एकता प्रकाशन ।

थापा, धर्मराज (२०३०), **गण्डकीका सुसेली**, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

_____ (२०३२), **मेरो नेपाल भ्रमण**, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

थापा, धर्मराज र सुवेदी, हंसपुरे (२०४१), **नेपाली लोक साहित्यको विवेचना**, काठमाडौं
: पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद (२०५४), **मुनामदन**, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

पङ्कज, पूर्ण भण्डारी (२०५७), **“नेपाली साहित्यमा सल्यान जिल्लाको योगदान”**,
अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाली केन्द्रीय
विभाग ।

परमार, श्याम (सन् १९५४), **भारतीय लोक साहित्य**, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
लिमिटेड ।

पराजुली, कृष्णप्रसाद (२०५४), “लोक साहित्य परिभाषा र लोक साहित्यलाई छुट्याउने
आधार”, **कुञ्जिनी**, ५:३, पृ. १००-१०४ ।

_____ (२०५७), **नेपाली लोकगीतको आलोक**, काठमाडौं : विणा प्रकाशन प्रा.लि. ।

पराजुली, मोतीलाल र जीवन्द्र देव गिरी (२०६९), **नेपाली लोक साहित्यको रूपरेखा**,
ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

पारिक, सूर्यकिरण (सन् १९९३), **राजस्थानी लोकगीत**, प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

पुन, डम्बर बहादुर (२०५९), “दक्षिणपूर्वी सल्यानका नेपाली लोकगीतहरूको अध्ययन”,
अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाली केन्द्रीय
विभाग ।

बन्धु, चूडामणि (२०५८), **नेपाली लोक साहित्य**, काठमाडौं : एकता बुक्स ।

बराल, ईश्वर र अन्य (सम्पा.) (२०५५), **नेपाली साहित्य कोश**, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

वर्मा, धीरेन्द्र (सन् २०२०), **हिन्दी साहित्यकोश**, वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड ।

यात्री नेपाल, पूर्ण प्रकाश (२०४८), **भेरी लोक साहित्य**, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

सम्भव, दयाराम श्रेष्ठ (२०२८), **प्रारम्भिक कालको नेपाली साहित्य: इतिहास र परम्परा**, काठमाडौं : पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।